ॐ भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यम्।

गायत्रम

भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

लेखकः दीवान भीमसैन

न्यू कालोनी गुड़गाँवा

लेखक की सुप्रसिद्ध पुस्तकें

१· अनुपम

२· मंगलम्

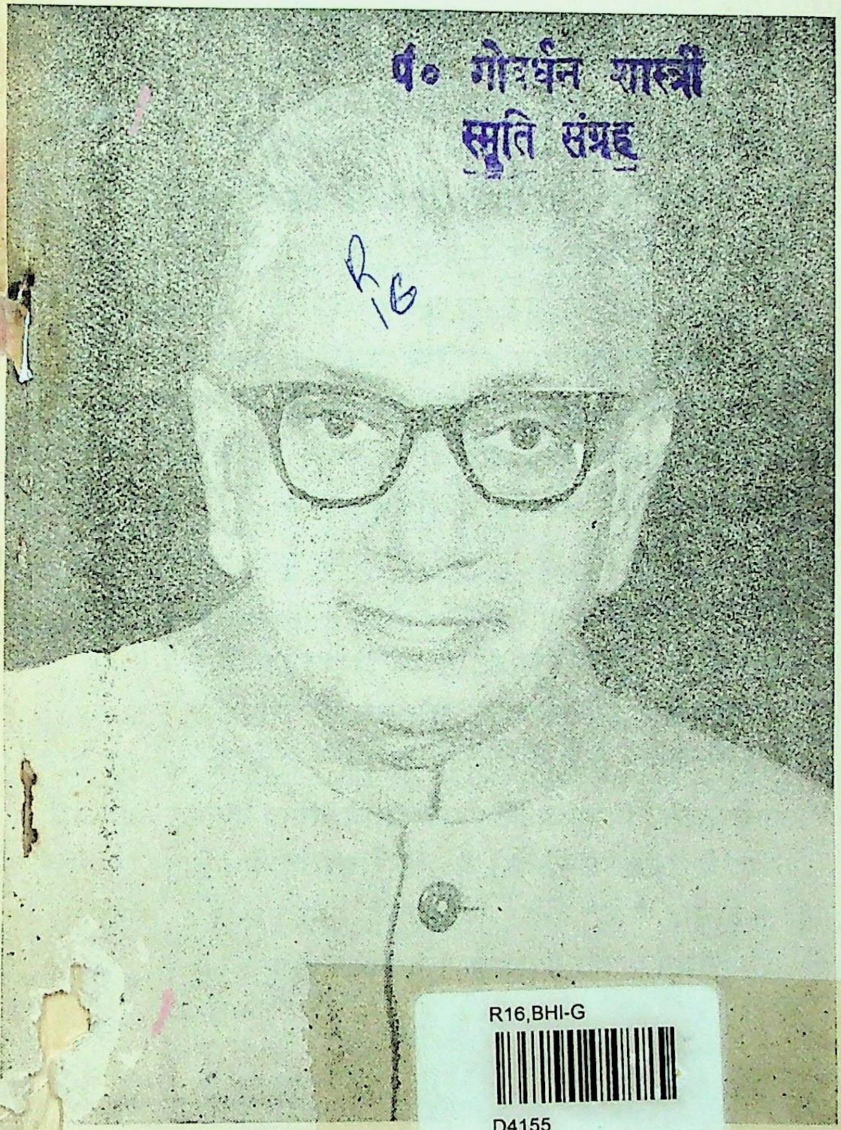
३· अद्भुतम्

लागत मूल्य : २·७५

मुद्रक :—
एस नारायण एण्ड सन्स,
७११७/१८ पहाड़ी धीरज दिल्ली-६

परिवार के वृद्ध, सर्वप्रिय प्रतिष्ठित तथा सम्मानित डॉ० विद्यासागर को समर्पित।

—भीमसैन दिवान



श्रद्धांजली

जामपुर जिला डेरागाजी खां के एक समृद्ध आर्य परिवार में स्व० डा० विद्यासागर ने जन्म लिया बाल्यकाल से ही वह दादा पिता तथा सब वृद्ध सज्जनों के आशीर्वाद के सत्पात्र रहे मुझे भी जेयष्ठ भ्राता डा० जीवनलाल-पिता डा० विद्यासागर से कृतज्ञता रूप प्रिय विद्यासागर की देखभाल, शिक्षा, दीक्षा का सौभाग्य मिला। उनके गुणों का वर्णन तो किया ही किया जा सकता है पर चन्द शब्द भाव-प्रगतीकरण से अपना धर्म तथा मान समझता हूं। आरम्भ से विद्यासागर अत्यन्त नम्र स्वभाव, निष्ठावान, सत्यवादी, परिश्रमी तथा सेवा व्रतधारी थे। मैट्रिक परीक्षा में प्रान्त भर में पोजीशन, पढ़ाई में लगन, व्यायाम से प्यार, परोपकार वृत्ति ने उनके जीवन को राह दी कर्मक्षेत्र में वह सुधारक हितैषी होते हुए, भाग्य के वरदान से मनोरोग का विषय अपनी विशेषता का चुनाव बनाकर मानव मात्र के दुखहरण, रोगियों के विश्वासपात्र, मननशील, अपने सहानुभूति के बल बोते, रोगग्रस्त के मसीहा बनकर परिवार, जन्म स्थान, जाति व देश के रत्न निखरते गए।

रोशन होके हयात औरों में बांट दी।
राहत मिली तो लोगों ने मांग की।।

उनका अनुभव, तरीका, इलाज, दुखी का विश्वास इतना बढ़ता गया कि आधी रात तक भी रोगी उनके हाँ तांता लगाए रखते, निस्वार्थ भाव, धन कमाने की हवस से दूर, अपितु जो दूसरों को दे सकते, यह विचारधारा, निजी सादा जीवन, सन्तुष्ट परिवारिक जीवन, समाज व कर्त्तव्य निष्ठा इतनी बढ़ी कि हरियाणा सरकार ने उन्हें स्वँण पदक दिया। सब संस्थाओं ने उनके आदेश की सराहना की : जनकल्याण हेतु घंटों घंटे एक एक रोगी को देकर वह जीवन जी लेने की उल्लास उत्साह बढ़ा पाते, इस तरह उनकी सर्वप्रियता, उनका परिवारिक जीवन, आराम निज का ध्यान, स्थान लेती गई और वह स्वास्थ्य गवांकर भी, जिसका हो सकता दुख दर्द हटाते गए। इस मनोवैज्ञानिक ने मनोरोग को परिवारिक सम्पर्क एक नया दृष्टिकोण पैदा किया। श्री JEBELL ने भी इस दृष्टिकोण को अपने मनोग्राफ में 'The Family in the hospital में involvement of family in the care ofmentally ill का नाम दिया डा० सतीश वर्मा के इस दृष्टिकोण की सराहना में विचार आदरणीय है "Dr Vidya Sagar urged relations to stay with the patients, encouraged friends to feed the sick and provide physical care, he got their cooperations to improve the nutrition of the patients and used divine knowledge to enlighten them. His reputation travelleved far and wide thereby inviting disturbed persons to visit and revisit him. Dr. Viga Sagar did a job, no one else had done so far in education of community in mental health. The Indian psychiatric society had cven approached him to become the president.

इस प्रकार के उपकार पूर्ण जीवन द्वारा डॉ० विद्या सागर सफलता पूर्वक जीवन जिए। जिसकी दाद, उनके उपलक्ष में शोक सभाओं, सत्संग तथा समागम में विशेष स्थान पा सकी। इस पुस्तक में समर्पण के साथ, मैं उनको क्रियाशील जीवन के प्रति पूरी सराहना प्रार्थना तथा मार्ग दर्शन की दिव्य दृष्टि के लिए कृत्कृत्य अनुभव करता हूं। भगवान ऐसे दिव्य पुरुष हमारे मध्य लाकर हमारे देश के कष्ट हरें।

"सम्मानित धर्मचन्द दीवान"

अंकुर फूटायूं

गायत्री बहुचर्चित मंत्र है। ऋतुराज (वसन्त) में जन वनस्पति-स्थावर, अस्थावर जगत का नवीन युग प्रारम्भ होता है-मानव भी इस पुण्य बेला में 'दिन फेर पिता-वर दे माता हम आर्य करें निज जीवन को'' का पुण्य प्रसाद प्राप्त करने का श्री गणेश करता है ! पत्ता-पत्ता नयापन लेता है, प्रकृति माता उसे सशोभित करती है, मानव शरीर के दोषमल भी इन्हीं दिनों फूट पड़ते हैं। प्रत्येक आत्मा भी निर्मल शरीर द्वारा पवित्र होने का संकल्प इन्हीं दिनों ले पाती है जिस संकल्प को गायत्री छन्द में बांध दिया है। इस मंत्र की अनेक व्याख्याएं हुई, सम्भवतः सबसे अधिक, इतने विशाल सागर का वर्णन, वरेण्यं की स्मृतियां-झांकियां, सुलेखकों के प्रयास को सुशोभित करती रहीं। तब इस तुच्छ प्राणी का गायत्री एवं शक्ति का लेखा जोखा किस कक्ष में समा सकता है। पर भर्गो देवस्य धीमहि के थोड़े से जाप ने निज दोष अवलोकन द्वारा इस पतित को पावन होने का सौभाग्य दे दिया। जब मुझ-सा गया-गुजरा, दीन, निर्बल, इस वेद माता से सत्कृत हो सकता है, यह झलक मेरे लिए विशेष उल्लास तथा संतोष वर्धक बनी। इसी कौतूहल में कि मेरा जैसा भी गिरा यदि प्रकाश बिन्दु से नव पल्लव पा सकता है तो धैर्य बन्धा। केवल यही बताने हेतु कि एक अधम भी उठ बैठ सकता है, जाग सकता है, सुख शान्ति का सत्पात्र हो सकता है, उसी कृतज्ञता वश दो शब्द इस जगत जननी की सेवा में भेंट करने बैठ गया हूं। यदि मेरे से उन्नत मेरे प्रयास को आशीर्वाद दें तो अपना अहोभाग्य मानूंगा।

शान्ताकुञ्ज
न्यू कालोनी बड़ागांव

विनीत
भीमसेन दीवान

भेंट २

ॐ भूर्भुवः स्वः

तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियोयोनः प्रचोदयात् ।

प्रेरक उत्पादक परमात्मदेव के उस बरने योग्य शुद्ध तेज को हम धारण करते हैं जो धारण किया तेज हमारी बुद्धियों को सदा सन्मार्ग पर प्रेरित करता रहे ।

(ऋ ३-६-१०, यजु ३-३५, साय उ० ६-३-१० ।)

तत्सवितु वरेण्यमम मधुवाता ऋतायते मधदतन्ति सिंधवः माध्वीनैः सन्त्वोषधीः भूः स्वाहा भर्गं दिवस्य धीमहि मनुनक्त मतोषसो मधुमत्पार्थिव रजः । यधुद्यौरस्ते नः पिता । भुवः स्वाहा, धियोयो नः प्रचोदयात् । मधुमन्नो वनस्पतिमधु या अस्तु सूर्यमाध्वीर्गावो भवन्तु नः । स्व स्वाहा । सवाश्च मदुमती रहभे वेद सर्वयांभूसं भूर्भुवः स्वः स्वाहा (बृहदारण्यक ।)

(तत्सवितुवरेण्यं) मधुर वायु चले, नदी, समुद्र रसमय होकर रहें, औषधियां हमारे लिए सुखदायक हों ।

(भर्गोदेवस्य धीमहि) रात्रि और दिन हमारे लिए सुखकारी हों । पृथ्वी की रज हमारे लिए मंगलमय हो । द्युलोक हमें सुख प्रदान करें ।

(धियोयो नः प्रचोदयात्) वनस्पतियां हमारे लिए रसमयी हों । सूर्य हमारे लिए सुखप्रद हो, उसकी रश्मियां हमारे लिए कल्याणकारी हों ।

सब हमारे लिए सुखप्रद हों । मैं सबके लिए मधु बन जाऊं ।

जिसने हमें पैदा किया और परवरिश करता है जो
जिससे कायम है जिन्दगी-दुख दर्द को हरता है जो

जिसका जलाल है बरतरीन है सुव सु जलवा फिशां,
आलम के जर्रे-जर्रे में राहतरसां आराम जां
करते हैं उसका ध्यान हम और मांगते हैं यह दुआ !
यारब हमारी अक्ल को नेकी के रास्ते पर चला ।
(स्वर्गीय मुन्शी त्रिलोक चन्द बी० ए०)

अलख निरंजन दुख भंजन भिक्षामदेहि

भेंट ३

स्तुति

वेदमाता, जगत-जननी, पतित-पावन-ब्रह्मस्वरूपा-त्रिपदा-दिव्या: दिबित्मती-जगवन्दनीया ज्योतिष्मति मंगलमयी ऋतयय-भरा-प्रज्ञा-सवित:, पथप्रदर्शिका-त्रिवेणी-महतत्व-प्रधानाचार्य-हर्ष-वर्द्धणी, संकटहरिणी-सुयोग्या-आनन्द वाहिनी-प्राण-स्वत: शक्ति: सुखशिरोमणि:-स्वत:-प्रेरक, पर्पि-संरक्षका-निदेशिका-उपकार-पूर्ण ऊर्ध्व—गामी-उत्साहिता-निदेशिका-सम्पन्ना-नियंता-सुनि-श्चिता-सम्पन्ना-सर्वहितकारी-घौषा:-गुह्या-सर्वहितकारी-गौमयी गुर्वी-विश्वसनीया, उत्साहिता-व्यक्तित्वर्थ दिशा धारणी-सुख-शिरोमणि-निर्वाणदायिनी-परमआदरणिया-अनन्त -वत्सला-चम-कारिणी-सर्व सम्पतस्वरूपा-प्राण-मातृरूपेण-संस्थिता-तेजस-चतु-र्भुजी-पारसमणि सर्वं धर्म माननीया-त्रिगुणा-गर्वापहारिणि-चरि-त्रपदा-संरक्षका-चौबीसमातृका अर्थात् चन्द्रमेश्वरी-अजितबला दुरितारि-नालिका महाकाली-श्याम-शान्ता-ज्वाला-तारिका-अ-शोका-श्रीवत्सा-चण्डी-विजया-अकुण-पन्नगा निर्वाणी-बल-धारि-णी-धरणप्रिया: नरदत्ता-गान्धारी-अम्बिका-पदमावती सिद्धायिका एनर्जी-आफ फोर्स, हीटपावर-एलेक्ट्रिकल एनर्जी-एनर्जी आफ लैस्टिसिटी (स्थिति) एनर्जी आफ ग्रैवीटेशन (मध्य आकर्षण) एनर्जी आफमोशन (गति) कलेटिक एनर्जी (क्रिया) कौस्मिक इलैक्ट्रिसटी विश्वविद्युत)-ज्ञान-उच्च शक्ति-सुधा कल्पवृक्ष। (साभार युगशक्ति गायत्री।)

अलख निरंजन दुख भंजन भिक्षामदेहि

भेंट ४

प्रार्थना

अलख निरंजन दुख भंजन-भिक्षामदेहि-प्रातःकाल में पशु-पक्षी मन्दिर मस्जिद वगिर्जे अपनी-अपनी तर्ज के आलाप द्वारा भगवत भजन में शामिल हो रहे होते हैं। बल्कि सूर्य रश्मियां अन्धकार हटाती जातीं, नदी नाले नया प्रवाह लाते जाते, रात भर की गंदगो से दूषित वायु नया संदेश नया प्राण प्रदान करती जाती, प्राणीमात्र की हलचल जीवन भर की गति का संदेश देने में उत्सुक हो रहे होते हैं। हम भी निशा में दुष्विचार दुष्कर्म में लिपटे उठ रहे होते हैं तथा अपनी-अपनी भाषा में आज के किए जाने वाले कामों की सूची से तुम्हें सचेत कर रहे होते हैं पर मनों पर बोझा बहुत होता है इसलिए इतना कहकर संतोष का सांस लेते हैं।

कर प्रणाम चरणों में तेरे लगता हूं मैं जग के काज
तब आज्ञा पालन करने को नियुक्त होता हूं मैं आज
अन्तर में स्थित मेरे बागडोर पकड़े रहना
निपट निरंकुश चंचल मन को सावधान करते रहना

देवों के देव, महाराजाओं के महाराजा, अपने अनखुट भण्डार को भी देख मुझ दीन हीन की बौखलाहट को भी देख ! पेश हो रहा हूं कोई दाम देने नहीं, भण्डारे का गुणगान करने भी नहीं, केवल अपने नगण्य को दिखाने बताने, बेहाल पर हालकी तर्स खाने, आवश्यकता जतलाने, निज दोषों की सूची पेश करने, जख्मी के जख्म भरे जाने की इल्तजा करने, तेरा रुख मेरा सुख होगा, तेरी याद मेरी करामात होगी, तेरा धन्धा दान देना है, मेरा तेरे हाँ केवल हाजिर होना एक मान लेना है ! यही मेरा

धीमहि करार होगा-वरेण्यंत् ही है, रिक्त मैं हूं ही-रिक्त स्थान अमृत से भरा जाता है, मुझे मेरा खोखलापन पूरी तरह ज्ञात है तुझ वरदाता का दान तथा दानों को सूची योग्यता का पूरा-पूरा पता है, मैं नैगेटिव हूं, तू पाजिटिव है-प्रकृति भर का नियम यही है कि पाजिटिव नैगेटिव से मिलकर शक्ति संचार करती है ! मुझ गए गुज़रे पर दया दृष्टि द्वारा संसार चक्र का नियम पूरा कर ले-महादानों के दाता, मेरे त्राता होकर जो मेरे योग्य है इधर भी जुटा दे। धन्यवाद कहूंगा, अधिक से अधिक प्राप्त करने के लिए उत्सुक बनूंगा। तेरी याद आबाद होगी तथा मुझ बरबाद की जायदाद होगी, तेरा नाम रहेगा मेरा काम बनेगा, युगल का एक नया दृष्टान्त तैयार होगा, एक अयोग्य बढ़ उठे, इस असम्भव से सम्भव का पूरा मान रहेगा, इसी प्रसाद हेतु, गायत्री महामंत्र की घण्टी बजाने चला हूं। आप देख लेना कुछ मांगों की सूची नहीं है केवल जो योना-उचित-योग्य-वह भी जो आप मानते जानते हों,मुझे प्रेरणा के उपहार में सोंप देना। शोक तो यह है कि प्रेरणा कोई वस्तु नहीं है, इसका दाम नियत नहीं, स्थान निश्चित नहीं, जहां शब्द तुम्हारी तरह व्यापक है, मेरी कलुषित बुद्धि में साफगोई भी नहीं, जो मैं समझूं कि मेरा उद्देश्य यह ही है, मैं तो दाता के चरणों में रजमात्र हूं, दानी जो चाहे दो, जगत शब्द भी 'ज' से बनता है, 'जो' भी 'ज' अक्षर से बनता है, जोहने वाला भी 'ज' से बनता है, इसलिए जगत का जोहने वाला, जो चाहे मुझे दे दे, जो मेरा सत्कार होगा-मांगने वाला तो मैं कहला दिया, पर मांगने का शऊर आया न, शक्ति न, सूची इसलिए छन्द महान के शुभ शब्द भी बड़े सार गर्भित है, अनन्त में अनन्त का आरोपण कितना सुन्दर लगता है। 'ज' का अर्थ है जन्म का रुक जाना 'प' का अर्थ है पाप का नाश होना, इसलिए भी तो पिता आपने पाप को मिटाने वाले और पुनर्जन्म प्रक्रिया को रोकने वाले 'जप' का विधान बताया है। मंत्र वह है जो सृष्टि के यथार्थ का उजागर करता है, गायत्री मन्त्र के नियम पूर्वक

जप से उत्पन्न शब्द शक्ति का चक्रवात अनन्त ब्रह्माण्ड की परिक्रिया करता है, इसीलिए इस पवित्र प्रिय वन्दनीय मंत्र की आराधना का वरदान लेने बैठा हूं-अक्ल, बुद्धि, विवेक, सच्चाई किसी धर्म-मत-देश व काल ने नहीं ठुकराई, इसलिए सर्व धर्म महामना तू गायत्री द्वारा अधिक सुशोभित होता है। बड़ा सौभाग्यशाली है वह जिसकी तार तुमसे जुड़ी रहती हो। ऐसा विश्वास है कि गायत्री के २४ अक्षरों के शरीर के २४ महत्वपूर्ण स्थानों की प्रतिध्वनि से उत्पन्न विशेष सर्किल साधक के लिए अनवर्चनीय लाभ का हेतु बनता है, यह दुहरी प्रतिक्रिया इस महामंत्र की विशेषता है जो किसी के हां, किसी मंत्र को प्राप्त नहीं। इसलिए इस मंत्र द्वारा महामंत्री से अपनी बुद्धि को जोड़ना चाहता हूं। महानुभाव इस मंत्र के अक्षरों का गूंथन ही चमत्कारी है, सितार के तारों की तरह एक से एक अध्यात्मिक संगीत चल पड़ते हैं। गायत्री के उपासकों को देखा है। मैं भी इस आशीर्वाद से सत्कृत हो सकूं, इसलिए गायत्री के शुद्ध उच्चारण का सत्पात्र बनना चाहता हूं। प्रार्थना शीर्षक द्वारा मैं कहने ही यही बैठा हूं कि अपनी उपासना अपना ही जाप-सिखाओ प्रभु मुझे अपने आप एवं संकल्प पूरा कर दो-इस विश्वास में दृढ़ता दो, कि शब्द में शक्ति है उसी शक्ति का पुजारी मुझे बना दे। सुना है दीपक राग गाने से दीपक जल उठते हैं, मेघ मल्हार गाने से वर्षा होने लगती है, वीणानाद सुनकर सर्प लहराने लगता है, मृग सुद्ध बुद्धि भूल जाते हैं, गौएं अधिक दूध देने लगती हैं, कोयल की बोली सुनकर काम भाव जागृत हो जाते हैं, सैनिकों के कदम मिलाकर चलने से शब्द ध्वनि से लोहे के पुल तक गिर जाते हैं, इसलिए हो तो पुलों पर कदम से कदम मिलाकर चलना सैनिकों के लिए मना है, जब प्रभुवर तू इतना साक्षात् प्रमाण दे रहा है तब मुझ साधक को सफल करने में क्यों देर लगा दी है। यह मेरे लिए चिन्ताजनक है। आओ, नाथों के नाथ, इस अनाथ को सम्भाल लो। सत्य है कि जितना यह मंत्र प्राचीन

है उतना ही बहुशक्ति सम्पन्ना है। उसी दिव्य शक्ति का भण्डार आज मेरी मांग का विषय है। बात केवल बात न रह जाए, संकल्प कहीं झुठला न जाए, सुन्दर पतितपावनी माला को अपने अन्तःकरण की माला गूंथ सकूं। बीच में तू हो, हाथ मेरे हों, माला मेरे हाथों बाजुओं का अलंकार हो, दाता दे, अपने जगत आप बुन, आप ही दीप्यमान हो, अपने नियमों का, मंत्रों का आप ही रक्षित हो। औज तैजस पवित्रता से अपने गौरव बढ़ा, तू बढ़, मैं वढ़ाओं, तू आ मैं बिठाऊं, इसी ताल में घुल जाऊं, इसी प्रकार मैं गुम हो जाऊं। संसार का एक सार सुख सामर्थ्य का एक तार-तुम्हें बसा लेना मेरा धर्म है, मेरा वास्ता है, मेरा पद है, मेरा क्षेत्र है, मेरा महकमा है। पिछला जन्म भूल गया। पुन-र्वास भी तो आज के संसार का एक विशेष कार्य है, मुझे इस पुनर्वास का मंत्री बना। ताकि अपनी समस्त खोई शक्तियों का पुनः जीवित तेरे लिए, सुरभि पूर्ण पुष्प गूंथ सकूं। मेरी प्रार्थना अनसुनी न करना। पुरानी रीति चला, सत्पात्र ब्रह्मचारी प्रभु वेला में भिक्षा मांगने आते थे, दर-दर से चुटकी भर आटा लेकर दिन का भोजन बनाते थे, मैं भी सब सुयोग्य देवी-देवताओं से चुटकी भर वरदान से अलंकृत होकरी तेरी वन्दना का पुण्य लाभ पा सकूं। यही आराधना, प्रार्थना, भजन, कीर्तन, प्यास, उल्लास, मांग, स्वांग, आजजी, इल्तिजा, आवाज, नियाज, दलील, अपील, सुनवाई, शहनाई, आरजू, जुस्तजू, प्रकार, सरकार-ए-आलम के हां एक मात्र पूजा और पुजापा, उपहार, कारोबार, बारम्बार नमस्कार शतवार पेश किए बैठा हूं। ऊंकार तेरा नाम, जपता है सारा जहान, तू है महान तू है महान-स्वीकार करो मेरा प्रणाम। एक ही अभियान-एक ही ध्यान, तेरी शान मेरा मान अहं च त्वं च वृत्रहन संयुज्याय सनिभ्यआ।

अलख निरंजन दुख भंजन भिक्षामदेहि,

भेंट ५

वरमाला

किसी अनन्त नियम अनन्त स्थान तथा अनन्तकाल के सृजन करने वाली अनन्य सत्ता ने अनन्त गुणकारी व अनन्त शक्ति भण्डार गायत्री का वरदान मानव मात्र को प्रदान किया। यह पावन मंत्र चौबोस अक्षरों में गूंथा गया। यह सुन्दर काया २४ पुष्पों में सुर्भित हुई-भगवान सविता वरेण्यं भर्गदेव स्वरूप है उनकी यह विशेषताए तेज श्रेष्ठ तथा प्रखरता प्रदान करती है।

पांच ज्ञानेन्द्रियां, पांच कर्मेन्द्रियां, पाँच तत्व, पांच तन्मात्राएं शब्द रूप रस गन्ध स्पर्श मन बुद्धि चित अहंकार-२४ शक्तियां पतितपावनी का स्रोत बनती हैं।

इस शोभनीय मंत्र के २४ तत्व, २४ अक्षर बनाते हैं। पृथ्वी, जल, तेज वायु, आकाश, गन्ध, रस, रूप स्पर्श, शब्द, वाक, पैर, गुदा, ज्ञानेन्द्रिय, त्वचा, नेत्र, कान, जीभ, नाक, मन, बुद्धि, अहंकार, चित, ज्ञान का समष्टि रूप प्रदर्शित करते हैं।

कहीं शास्त्रों में २४ अक्षर, २४ ऋषि, २४ छन्द, २४ देवता, २४ शक्तियां, २४ तत्व, २४ रंग सानिध्य देकर काया की माया बनती है।

वामदेवी-सत्या-प्रिया, विश्वा भद्र विलासनी प्रभावतो-शान्ता-कान्ता दुर्गा, सरस्वती, विद्रुमा, विशालशा, व्यापिनी विमला, तमोहारिणी, सूक्षमा विश्वयोनि जपावश पद्मालया पराशोभा मुद्रा त्रिपदारूपी शक्तियां यहीं समाहित है।

मानो तो २४ देवता—अग्नि, प्रजापति, चन्द्रमा, ईशान, सावित्री, आदित्य, वृहस्पति, मित्रा, वरुण, भग ईश्वर, गणेश,

त्वष्टा, पूषा, इन्द्रग्नि, वायु, वामदेव, मैत्रावरुण, वैश्वदेव, मातृक, विष्णु, वसुगण, रुद्रगण, कुवेर, अश्वनी, कुमार भी यहां विराजमान हैं।

इस महामंत्र को २४ ऋषि वामदेव, अत्रि वशिष्ट, शुक्र-कन्व, पारासर, विश्वामित्र, कपिल, शोनिक, याज्ञवल्क्य, भारद्वाज, जयदग्नि, गौतम, मूदगल, वेद व्यास, लोमरा, अगस्त, कौशिक वत्स, फुलस्त माण्डक, दुर्वासा, नारद तथा कश्यप सुशोभित करते हैं।

यह केवल २४ अक्षर ही नहीं २४ छन्द गायत्री उष्णिक अनुष्टिय वृहति पंक्ति त्रिस्टुप जगती अति जगती शकवरी प्रति-शकवरी, धृति, प्रतिघृति, विस्तार, प्रस्तार, पंक्ति, कृति, प्रकृति, प्राकृति, विकृति, संस्कृति, अक्षर, पंक्ति भू भुवः स्वः योतिस्मति-रूपा शोभायमान होते हैं। वेदों की ऋचाएं ही छन्द कही जाती हैं।

गाने वाले का त्राण करने वाली शक्ति को गायत्री नाम मिलता है।

प्राण का जाप करने वाली गायत्री जगत विख्यात है।

इस पुण्य माता के प्रत्येक अक्षर का भिन्न-भिन्न स्थानों से सम्बन्ध होकर मानव के दुखहरण में वरदान मिलता है।

अक्षर ग्रंथिका नाम तथा वहां भरी हुई शक्ति यूं प्रादुर्भूत होती है तत तापनी सफलतादायक, स-सफलता पराक्रम देनेवाली विविश्वपालन, तुः तुष्टि कल्याण, व वरदाः, रः रेवती प्रेम, णि-सूक्षमाधन, य ज्ञाना तेज, भर भर्गारक्षा, गो गोतमो बुद्धि, दे देविका दमन, व वराही निष्ठा, स्य सिहनी धारणा, धीं ध्याना प्राण, म मर्यादा संयम, हि स्फुटा तप, धिमेधा दूरदर्शिता, यो योगमाया जागृति, यो योगिनी उत्पादन, नः धरित्री सरसता, प्र प्रभवा आदर्श, चो उष्मा साहस, द दृश्य विवेक, यात निरंजना

सेवा प्रस्तुत करनेवाली शक्तियां हैं। यह सारा विवरण युग शक्ति गायत्री से प्राप्त हुआ।

गायत्री व सविता एक ही देव के दो नाम हैं। मौलिक लाभ देने में सावित्री, अध्यात्मक वर देने में गायत्री नाम से विख्यात होती हैं। सत्य तो यूं है कि अग्नि एक है परा अपरा लाभ के कारण सावित्री का प्रयोग वना-सावित्री के उपासक को स्वर्ग तथा गायत्री के उपासक को मोक्ष प्राप्त होता है।

भारतीय इतिहास में इस मंत्र को मेरु दण्ड कहा जाता है। शिखा गायत्री है, यज्ञोपवीत गायत्री है इसे वेद माता या देव-माता भी कहा जाता है।

यजुर्वेद में इस महामंत्र को एक वृषभ का रूप देकर सुशोभित किया गया है-चार वेद जिसके चार सींग बने, तीन चरण आठ-आठ अक्षरों वाले, तीन पैर बन पाए, ज्ञानविज्ञान दो सिर-सात व्याहृतियां सात विभूतियां अर्थात् सात हाथ बने, ज्ञान, कर्म उपासना से तीन जगह बंधा यह वृषभ जव दहाड़ता है तो दिव्य शक्तियां अवतरित होती है। तथा नूरानी तेज की प्राप्ति होती है।

भू भुवः स्वः तोन व्याहृतियां प्रतिपादित हुई एवं भू से पृथ्वी भुव से अन्तरिक्ष, स्व से सुख सामग्री, मह से आदित्य लोक की प्राप्ति का न्योता मिलता है। अग्नि भू है वायु भूवः है सूर्य स्व है चन्द्रमा मह है यथा चन्द्रमा से ही सारे नक्षत्र महिमावान होते हैं।

पतित पावनी के तीन चरण-देव, अग्नि, वेद, लोक, काल, गुण, अवस्था, आदित्य, छन्द, त्रिदेव, शक्ति, ब्रह्म में विभक्त होकर मंत्र को संयोजित करते हैं।

भू भुव स्वः में तीन बीजमंत्र शेष २४ अक्षरों को अर्थ परक माना जा सकता है।

गायत्री मंत्र से श्रेय श्री और सफलता का आश्वासन मिलता है।

हृदय की चैतन्य ज्योति गायत्री है जो ब्रह्म रूप है-प्राण व्यान अपान, समान, उदान, पांच प्रहरी द्वारपाल की तरह सेवा करते हैं जिनके द्वारा ब्रह्म की प्राप्ति होती है।

इन २४ अक्षरों २४ में सूत्र निहित हैं। एकता के चार सूत्र विश्व राष्ट्र विश्व भाषा विश्व संस्कृति तथा विश्व दर्शन का उपहार भी इस मंत्र द्वारा प्राप्त होता है।

इस मां के २४ गुण हमें न्योता देकर, ओज शक्ति, बल महिमा, कांति तेज, पराक्रम, प्रकाशज्ञान, एश्वर्य, विकाश, सहन शक्तिजप, कीर्ति, स्थिरता, प्रतिष्ठा, लक्ष्मी, विज्ञान, प्रतिभा, मति, स्मृति, घृति, प्रजा, ख्याति द्वारा, प्रलोभित कर रही हैं।

एवं २४ अक्षर २४ चमत्कार मानव जीवन को उज्वल करने मात्र शुभसंज्ञा का नाम प्राप्त करते हैं। विशाल गुणों से गूंथा यह मंत्र परम पिता न मानव को वरमाला के रूप डालकर प्रतिज्ञाएं देकर-लेकर भवसागर में उतारने हेतु प्रदान किया था जिसके बलबोते हम सुतीर्ण होकर सुशोभित हो सकें-यह सूची पत्र संक्षिप्त जीवन पृष्ट उलटने मात्र संकेत हैं। अनुभव प्रयोग ही विश्वास व श्रद्धा का समन्वय करा सकता है। केवल जुट जाने की देरी है-सफलता से सफलता हाथ लगेगी-हाथ से हाथ बढ़ेगा-अनुभूति से प्रसन्नता लगन तथा आकर्षण बनेगा। केवल संकल्प बनाने का साहस करना ही शेष है। उपर्लिखित वरमाला युग शक्ति गायत्री के पन्नों से साभार उद्धृत करने का प्रयास कर पाया हूं।

अलख निरंजन दुख भंजन भिक्षामदेहि

भेंट ६

प्रष्टिवर्धनम

यही मां है जिसने युग पुरुष वना दिये, नर से नारायण दानव से देव चमत्कृत किये। वरमालाओं की सूची में से जो जैसी वरमाला चुनता गया प्रभुवर से सत्कृत भी होता गया।

र्महिष दयानन्द अपने पड़ोस की शताब्दी में साक्षात् प्रमाण हैं, वह अपनी आत्मकथा में स्वयं ही लिख रहे हैं, यज्ञोपवीत संस्कार के बाद मुझको १० दिन के लिए घर में वन्द कर दिया गया, यह १० दिन गायत्री मंत्र के जप में और संध्योपासना में ही बीत गये। १० दिन के पश्चात् यज्ञोपवीत धारण करके बाहर निकला। सत्य तो यह है कि मूलशंकर के पिताजी ने विधिवत उनका बाल्यकाल में सुरक्षित करने का जो प्रयास किया, वह आयु भर उनकी जीवनी वन पाई, स्व० दयानन्द ने ऋतम्भरा प्रज्ञाव ब्रह्मतेज के बल पर पूरे देश के वातावरण में अनोखी हलचल पैदा कर दी।

स्वामी विर्जानन्द ऋषि दयानन्द के गुरुवर स्वयं गायत्री के अनन्य उपासक थे। स्व० विर्जानन्द ने ऋषिकेष में गायत्री मंत्र द्वारा उपासना की थी, इस सम्बन्ध में स्व० वेदानन्द ने उनके जीवन चरित्र में लिखा है। आज से डेड सौ वर्ष पूर्व ऋषिकेश में न कोई अन्नक्षेत्र था और न ही कोई धर्मशाला। यहाँ झाड़ियों में महात्मा लोग पर्ण कुटिया वनाकर तपस्या में रत रहते थे—पेट की ज्वालाशान्त करने के लिए जंगली बेर या अन्य कोई जंगली खाद्य पदार्थ खा लेते थे। तपस्वी लोग तो पूरा पेट कभी भरते ही न थे। समस्त ऋषिकेश में दो प्रकार के प्राणी साम्राज्य करते थे एंक तप एवं स्वाध्याय में रत महात्मा

दूसरे हिंसक व्याघ्रादि, वृजानन्द ऐसे ऋषिकेष में १५ वर्ष की आयु में पहुंचे। मानव जीवन के चरम लक्ष की सिद्धी की अनुपम धारणा के साथ वृजानन्द ऋषिकेष में आकर कुटी बना कर रहने लगे, कई बार जंगली जानवर उनकी कुटिया तोड़ जाते। रात को भी अनेक बार वह उनकी कुटिया खटखटाते किन्तु वृजानन्द सदा अभय भाव से अपने मनोरथ की सिद्धि के प्रयत्न मैं निमग्न रहते। प्रातः सायं जब भी देखो वह गायत्री जप में लगे रहते थे। प्रातः काल कण्ठ तक गंगाजल में खड़े होकर साधना करते रहते। विर्जानन्द की इस तपश्चर्या से मालूम पड़ता है कि उनके उपनयन संस्कार में उनके पिता अथवा अचार्य ने उन्हें गात्रयी मंत्र की उपासना की विधि और महत्ता अच्छी तरह बताई होगी। इसी से उनका यह सुनिश्चित विश्वास दृढ़ हुआ कि गायत्री जप के अनुष्ठान से सभी प्रकार के मनोरथ पूरे होते हैं।

स्व० दयानन्द अपने गुरुवर से गायत्री उपासना का वरदान पाकर लिख गए हैं गायत्री महामंत्र के अर्थ पर विचार करना चाहिये। इस मंत्र द्वारा परमात्मा के तेज का ध्यान करने से बुद्धि की मलीनता दूर हो जातो है और धर्माचरण में श्रद्धा व निष्ठा उत्पन्न होती है दूसरे किसी मंत्र में ऐसी गहराई व सच्चाई नहीं है। महर्षि सत्यार्थ प्रकाश में यह भी लिखते हैं कि जब उपासना करनी चाहें तब एकान्त शुद्ध प्रदेश में जाकर आसन लगा प्राणायाम कर बाहरी बातों से इन्द्रियों को रोक मन को नाभि में, चित में, कण्ठ में, आंखों में शिखा या पीठ के बीच रीढ़ की हड्डी में किसी स्थान पर टिका कर आत्मा और परमात्मा को स्मरण कर आपको वश में करें, जो इन साधनों को करता है तब उसकी आत्मा और अन्तःकरण पवित्र होकर सत्य से पूर्ण हो जाता है। प्रतिदिन अपने ज्ञान और विज्ञान को बढ़ाकर वह मुक्ति तक पहुंच जाता है।

कहा जाता है कि एक ब्राह्मण बनारस में ११ वर्ष गायत्री जाप करता रहा पर उसे फलस्वरूप कुछ प्राप्ति का अनुभव न हुआ। निराश होकर वह वहां से काशी को प्रस्थान कर गया। वहां नदी किनारे एक दिन व्यथित हृदय से बैठा था कि एक अघोरी कपालिक ने दर्शन दिये, उसके विषाद का कारण पूछा, ब्राह्मण की सारी बात सुनकर उस कपालिक ने उसे एक ही वर्ष में तपस्या द्वारा भैरव प्राप्ति की आशा दिलाई, ब्राह्मण भी उसके झाँसे में आ गया–उसने इष्टदेव की उपासना की। फलस्वरूप भैरव ने उसे भीतर दर्शन दिए। ब्राह्मण ने आग्रह किया कि यदि वह उसकी उपासना से संतुष्ट है तो वह दर्शन दें। पर भैरव ने दर्शन देने से इन्कार कर दिया। आग्रह पर भैरव ने उत्तर दिया कि वह ब्राह्मण गायत्री उपासक है जिसके परिणाम में वह उसके मुखरित तेज के सामने नहीं आ सकता। ब्राह्मण अपने तेज की यह अवस्था जानकर चौंक पड़ा और पुनः बनारस जाकर गायत्री जप में लग गया। ग्यारह वर्ष तो पहले वह लगा ही चुका था। बारहवें वर्ष में उसे प्रकाश की प्राप्ति हुई। प्रज्ञावान वह माध्वाचार्य कहलाये तथा आयुर्वेद पर एक प्रमाणिक ग्रन्थ लिखकर अमर हो गए। जो कि माधव निदान के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

इन्हीं दिनों में प्रभु आश्रित महात्मा टेकचन्द तथा आनंद स्वामी को गायत्री उपासना के अलौकिक उदाहरण हमें देखने को मिले हैं। महात्मा टेकचन्द की गायत्री विधि ने अपने प्रकार की धुन लगा दी थी, यहाँ तक कि साध संगत के भोजन बनाते समय देवियों द्वारा आटा मलते, रोटी बनाते, पकाते, साथ ही साथ गायत्री भजन करते, एक सौरम्य पूर्ण वातावरण देखते बनता था। तपोवन में आनन्द स्वामी जी की गायत्री उपासना का विधान-जाप-तपस्या एक सुनिश्चित रूपरेखा प्रस्तुत करती,

यह अपनी आंखों देखे हाल गायत्री में अटूट विश्वास, तल्लीनता तथा उल्लास कहते ही नहीं बनता। यह तो रहा देखने वालों का समाचार। तन्मयता से पतित पावनी के उपासक स्वयं कितने आह्लाद में होते होंगे, यह कल्पना का विषय संजोया जा सकता है। महात्मा टेकचन्द जी का गायत्री जाप विशेष लय व ताल से बड़ा प्रभावशाली होता था।

यह ईश्वरीय अनुग्रह सबके लिये सहज सुगम रूप धारण करता है, ईश्वर के सानिध्य से किसने क्या पाया ? ऐसे अगणित उदाहरण प्राचीन व अर्वाचीन प्रचुर परिणाम में मिलते हैं। हनुमान, अंगद, नल, नील, कृष्ण के भक्तों में अर्जुन, सुदामा, महामानव श्रेष्ठ व्यक्तित्व इतिहास के पृष्ठ भर रहे हैं ! स्व० बृजानन्द इधर तो प्रज्ञाचक्षु थे उधर व्याकरण जैसे जटिल विषय के सूर्य यह असंगत तो लगती है पर थी सत्य, मेधावी बुद्धि के स्वामी साक्षात् गायत्री मां के जीवन्त उदाहरण से प्रताप व प्रतिष्ठा के सत्पात्र बन पाये। जो आदि पुरुष ऋषिवर, जो वेद-ज्ञान से अलंकारित हुए, अक्ल में न बैठने, कल्पना में न आने का एक स्वत प्रमाण व दृष्टान्त प्रस्तुत करके महिमा से सत्कृत हुये और हमारे ही युग में एक साक्षी भर गये हैं।

युग शक्ति गायत्री के जुलाई १९७९ के अंक में श्री विष्णु दत्त एडवोकेट वैकण्ठपुर (म० प्र०), वी० आर० साठ बरन कसारीडीह दुर्ग, शम्भुरत्न जायसवाल पेंड्रा, रुद्रनाथ पाण्डेय कोटमी विलासपुर, एम० ऐस० साहू बड़ौदा विलासपुर, मदन-मोहन सारस्वत जोधपुर (राजस्थान), कन्हैयालाल मिश्र जोधपुर, रामलाल शरण मन्चसौर, श्रीमती सु० निचत जाजगीर (म० प्र०), सज्जन पाणावत (राजस्थान), श्रीमती शकुन्तला गुप्ता साकोली (महाराष्ट्र), अशोक ज० जोषी मजेवड़ी (गुजरात), चितामनराव गोवम वालाघाट (म. प्र.), भानुभाई

एन० गढ़वी बरेड़ा (गुजरात), यशोदा शर्मा कुल्लू (हि० प्र०), सीताराम शर्मा विदिशा (म० प्र०) रामचन्द्र प्रसाद पाली, विश्वेशरसिंह बघेल वीना (म० प्र०) श्री देवी यादव रूहैनाहसा (मैनपुरी उ० प्र०) तथा ऐन० आर० सोलंकी संध्वी (म० प्र०) के व्यक्तित्व अनुभव आजकल के दिनों के प्रमाण प्रचुर उदाहरण लिखित मिले हैं जो गायत्री माता के वरदानों की एक श्रृंखला बांध रहे हैं उन्हें नतमस्तक स्वीकारने के सिवा चारा ही नहीं है।

अलख निरंजन दुखभंजन भिक्षामदेहि

भेंट ७

जागृति कला केन्द्र

इस महामन्त्र में शब्दों के जोड़ एक विचित्र रहस्योद्घाटन करते हैं सम्बन्ध शब्दों का और असाधारण तानाबाना सुन्दरता का प्रतीक बनकर शोभयमान होना सिद्ध करता है ! वैज्ञानिक गूंथन की उपविद्या का एक क्रम मेरुदण्ड की महता प्रौढ़ता-बल तथा दिव्यता का स्त्रोत बनने का सौभाग्य लेता है। इसी तथ्य को दृष्टि में रखकर भिन्न जोड़े पारस्परिक रिश्ते नाते दीखते विचार में लाने का प्रयास ही इस भेंट का उद्देश्य होगा।

आन्तरिक प्रगति का प्रथम सोपान जीवन साधना है ! इसी को संजीवनी विद्या कहते हैं ! जहाँ यह माँ पधार ले वहाँ परिष्कृत व्यक्तित्व निखरने लगता है तथा गाड़ी चल पड़ने की शुरूआत हो जाती है। व्यक्तित्व की उत्कृष्टता स्वयं में श्रद्धा व्रतशीलता का श्री गणेश हो जाता है। जितनी भी महान आत्माएं आईं इस निजि सम्पत्ति का आशीर्वाद उन्हें मिला। बीज फूटता है पौधा अपने आप निकल पड़ता है ! फूटना ही जीवन जागृति की पहली घंटी है ! आइजनहावर जब अमरीका के राष्ट्रपति बने, उनके ब्रीफकेस में एक झाड़ू भी रखी रहती थी, जिसे विचारशील लोग देख के दंग रहते थे ! एक बार स्वयं आइजनहावर ने इस साथी का भेद यूं खोल दिया, कि अपने चुनाव के भाषणों में वह प्रतिज्ञा लिया करते थे, कि राष्ट्रपति बनने पर वह राष्ट्र की गन्दगी को दूर करेंगे। राष्ट्रपति बनने पर एक उद्धारक ने उन्हें झाड़ू रूपी उपहार भेंट किया साथ में एक चिट भी, कि यह झाड़ू सदा उनको दी

हुई घोषणा की स्मृति कराती रहेगी, एवं यह झाड़ू ही प्रेरणा-स्पद होने का व्रत पालन करने में उनका सहायक बना ! अपने यहां गन्दगी है ही जिसे हटाना हर जिज्ञासु का धर्म है, जो हमें हमारे स्वरूप की जानकारी दे पाता है। धरती तल पर सम्मानित एक मार्टिनलूथर मनोवैज्ञानिक का कहना था, कि मनुष्य के भीतर एक साथ कई प्रकार के व्यक्तित्व एक दूसरे के पड़ोस में विराजमान हैं ! उनके प्रयास का सांमजस्य तथा सहयोग प्रगति की गाड़ी को धकेलता है; यही जागरण मात्र ही सृजनात्मक शक्ति का रहस्य है ! प्रत्येक जन में अपने व्यक्तित्व और भविष्य का इच्छित निर्माण कर सकने की भाव भीनी विद्यमान है ! सबसे गहन उपकार मानव पर तब बनता है, जब उसे अपनी खोज की संजीवनी बूटी नसीब होती है !

इस महामन्त्र के कोई कथानक नहीं। समष्टि रूप से बुद्धि याचना श्रेष्ठतम माँग है, जो देशकाल की परिधि के बाहर अपना अवतार लेती है ! क्या ही सुन्दर भिक्षा तथा वरदान, कोई वस्तु नहीं माँगी, इतनी विस्तृत सृष्टि में कहीं प्रकृति का नाम नहीं लिया, किसी तत्व धातु को नहीं गिना-निराकार से कानिराकारकी प्रकार की प्रकृतिको घुसने नहीं दिया, क्योंकिअदृश्य जगत के इस क्षेत्र में जहाँ धरती, जलवायु कमोबेश होते, आते न आते, मिलते न मिलते का झंझट झमेला ही नहीं ! भला जिसका अपना रूप रंग नहीं, उसके दरबार में वस्तु विशेष का चुनाव अमुक नाम, देना लेना, कितना असंगत है ! तभी तो उसे भी देने में सुगमता सहजता मिलती है ! यही एक दिव्यमन्त्र है जहाँ वस्तु का स्थान ही नहीं। इस कला केन्द्र की ताली भी मेरे हां ही बनती है, लगती भी मेरे माध्यम से है, लगाने का ढंग, समय, विधि, विधान, खालिस अपना, अपने घर का, अपने सिर का, अपनी औकात का, अपनी मुलाकात का, अपने ही आघात

का, अपने वजन का, अपने धुन का, विचित्र कला केन्द्र, जहाँ न कोई कर्मचारी आ सके, न कोई अफसर, अपने में हीं आप, एक सबसे श्रेष्ठ तथा विचित्र जोड़ है, जो बेजोड़ है, हां जुड़वां हैं, अपने जात-ए-आला से, अपने आप से, यही व्यक्तित्व का—सर्वेसर्वा, यही काया माया, यही रहस्य, का मुझे सबसे अनुपम, सारगर्भित-जादू छुई-मुई, अपना ही मन्त्र, आप ही चालक, यह तो वही हो गया है, जैसे अब शिल्प जीवियों ने ऐसे कार ट्रक खिलौने बना दिए हैं, कि ताली बजाओ हाथ से तथा दूर रखी कार व ट्रक चल पड़े, फिर बजाओ ताली, अपने हाथ से, कि चलती चलती गाड़ी खड़ी हो जाए ! अद्भुत गाथा इसकी, इसलिए इसे ही सबसे प्रमुख प्रस्तुत करने का अधिकार ले बैठा हूं ! बात पुरानी है, पर पास के समय की कहानी है--स्थान भी पासवाला अर्थात् देहली, समय भी जाना पहचाना, अकबर बादशाह का, किला भी लाल पत्थर वाला, नदी भी यमुना, जहाँ कृष्ण तथा उसके भक्तों की रंगरलियां, चुपछिप के किस्से, जगत विख्यात हो गए ! बादशाह तो था पर था मुसलमान, मुगल राज्य का व्यक्ति विशेष, जिसे वरदान मिला भारतीय संस्कृति के उभार देखने तथा समझने का, फिर बात यह निराली, कि था तो मुसलमान पर प्यार श्रद्धा पड़ गई एक ब्राह्मण पर, केवल सम्पर्क नहीं हुआ, इसे अपने मन्त्रीमण्डल में सुशोभित कर दिया—यह सारी असाधारण बातें पर इससे भी असाधारण यह कि एक दिन जमुना किनारे बादशाह व मन्त्री महोदय ने एक ब्राह्मण को भिक्षा माँगते देखा —रुपए अशर्फी नहीं, वह भी कौड़ी कौड़ी, राजा से रहा न गया, झट मन्त्री बीरबल को ताना दे मारा, कि यह हाल है तुम्हारे उच्च वर्ग का ! बादशाह था बेचारा मन्त्री क्या जबाब देता—मन ही मन शर्मिन्दा आखिर चुप ही रहना उचित जाना, पर सायं को उस ब्राह्मण को बुलवा लिया, बीरबल ने मासिक वेतन

तैय कर दिया, कौड़ी कौड़ी की माँग छुड़वा दी और महामन्त्र के जाप की प्रेरणा देकर नदी पर बिठवा दिया—मास गुजरते गए—मन्त्री का वेतन देना, ब्राह्मण का दान लेना व्यवसाय बन गया, समय बड़ी मार करता है ! जब उस ब्राह्मण को शुभबेला आयी, उसे सम्भाल आई, अपनी जागृति से कि किसो से मांगना क्या, यहाँ तो माँ भीतर से ही छवि दे रही है, सन्तोष तथा तेज की उत्पत्ति हुई, वह मन्त्री महोदय को मिलने गए ही न, उधर मन्त्री महोदय का राशि विभाग कहाँ तक सम्भाल न लेता, किसी की नियत रकम का आखिर बीरबल को सूचना दी गई। बीरबल भी परेशान ! कहां वह कौड़ी कौड़ी का मुहताज था कहाँ अब राशि रखी है लेने वाला गायब, आखिर तलाश हुई ब्राह्मण के मुख पर तेज, न किसी के प्रश्न की खबर, न जाने का जवर, बीबरल ताड़ गया कि ब्राह्मण देवता को अपने भीतर का माल मिल गया है, तभी तो बेलाग तथा बेदाग हुआ जा रहा है ! उस मन्त्री को भी अपने देश व धर्म की लाज बचानी थी ! एक बार बादशाह को तैयार किया कि नदी किनारे धूमधमा प्रति सत्पात्रों को दान दक्षिणा दे आएं। बादशाह तो ऐसे कामों में पीछे रहने वाला था नहीं ! दोनों चल दिए। आखिर उसी ब्राह्मण की कुटिया पर पहुंचे ! राशि भरा थाल फल तथा खाद्य पदार्थ भेंट की ! ब्राह्मण महोदय को इन थालों पर पलक ही न पड़ी उदविघ्न वैरागी तुरन्त इस माल को वापिस लौटा देने की प्रार्थना उस सन्त से हो पाई ! बादशाह भी हैरान कि दे रहा हूं माल यह लेता ही नहीं ! आखिर बादशाह से रहा न गया, मन्त्री बीरबल से उस सन्त का आगा पीछा पूछा, मन्त्री बोला महाराज यह वह भिखारी है जो एक दिन आप से मुझ से कौड़ी कौड़ी माँगता था, पर अब उसे अतुल्य धन की राशि नसीब हो गई है, इसलिए यह बेपरवाह बादशाह बन गया है, कि आप जैसे बादशाह की तरफ नजर भी उठा नहीं देखता !

बादशाह विस्मयपूर्ण मन्त्री से इस क्रान्तिपूर्ण तबदीली का कारण पूछ बैठा, फिर बीरबल ने बताया कि उसे गायत्री महामन्त्र के जाप की विधि आ गई, वह दिव्य माता अब इसमें विराजमान हो गई, सतत जाप से ! इसलिए खुल गया जिसको राज-ए-अफसानी है हेच है उसको एश-ए-सुल्तानी ! शासन कर्त्ता परेशान, इस माँ का गरबीदा-ए-एहसान, भारतीय सभ्यता का प्रशंसक महान हैरान ! यह वह कहानी है पहली पहली याद कराती है, जो मुझे पचास साठ साल पूर्व सुनने को नसीब हुई थी, मेरे में एक तरंग, एक आशा, उच्चस्तरीय सन्देश की वाहिनी हुई, थी, और तब से यह कहता आया हूं।

पाप से हमें बचाईये, विनय करूं भगवान,
आप ही स्वयं पधारिए रख लो अपनी शान

यह है इस कला केन्द्र की पहली झलक और सच्ची बात कि मुझे दूसरे की कुंजी लगती नहीं ! अपनी ताली मैं अपने आप बन्द कर बैठा था, अब ताली भी भूल गई है, लगाना भी भूल गया है। परेशानी का आलम, न इधर का न उधर का।

अगर आदर्श का अनुरूप जीवन जी लिया होता, अगर सदाचार व संजीवनी को पा लिया होता।

प्रकट होती हमारी शक्तियां दिव्यत्व पा जाते, पुर होती मनुजगरिमा जिधर से तभी निकल जाते

सहज उपलब्धियां देता हमारा सात्विक तप श्रम, नहीं अध्यात्म है झूठा मगर समझे नहीं हम !

एक दुबला पतला बालक लकड़ियां काट रहा था, परिश्रम तथा पसीने से उसका शरीर लतपत था, किन्तु वह बड़ी तल्लीनता से अपने काम में जुटा रहता, फिर उठ खाना पकाता, घर में झाड़ लगाता, पानी ढ़ोता, अपने काम स्वयं करते रहना उसे कुदरती नींद उपलब्ध कराती, स्वाभाविक नींद भी नसीब में लाती,

उस बालक के भाग्य भी इसी गुण से सुशोभित थे, आलस्य से नहीं उद्योग से, प्रेम करना उसे बड़ा आदमी बनना था, दिन भर के श्रम के पश्चात दीपक जला पढ़ने बैठ जाता, एक दिन ब्लैक स्टोन की एक पुस्तक पढ़ने को उसे इच्छा हुई, पर वह पुस्तक प्राप्त थी वहां से चार मील की दूरी पर भी, एक लाइ-ब्रेरी से, मालूम हुआ तो वहां चल पड़ा, लौटते समय रास्ते में ही पुस्तक पढ़ डाली, दोबारा घर लौटकर पुस्तक लौटा भी दी सतत परिश्रम से सुशील बालक आखिर राष्ट्रपिता इब्राहीम लिंकन के नाम से जगत विख्यात हुआ !

मन्त्र के शब्दों का गूंथन, इस वैज्ञानिक रीति से हुआ है कि साधक की अन्तः चेतना, सूक्ष्म, अदृश्य, संस्थानों पर आघात करती है ! सुस्ती जागृति में बदलती है । इसलिए सदप्रेरणा ही इसका वरदान माना गया है । हम मैले हैं यही ज्ञान हमें साफ रहने का वचन देगा । भगवान का भला हो जो उसने हमारे ही ग्रह उपग्रह उद्‌बुध कर दिए हैं । बम्बई के एक विद्वान श्री जी. वी. रेले ने 'दी वैदिक गाडस इन फिगर्स आफ बायलोजी' में सिद्ध कर दिया है कि वेदों में वर्णित आदित्य वरुण, अग्नि, यसत, मित्र, अषिन मस्तिष्क के स्थान विशेष हैं, जहां दिव्य शक्तियां छिपी रहती हैं । जिन्हें ही जाग्रत करके अद्वितीय क्षमता प्राप्त की जा सकती है । अब विदेशोय वैज्ञानिक भार-तीय ऋषि वर्ग की छानबीन ज्ञानविज्ञान की क्षमता का परिमाण नहीं पा सक रहे, कौतूहल के बिना उन्हें कोई स्थान नहीं, केवल तथ्य एक ही हाथ लगता है कि उन्होंने अपने भीतर छिपे महान् तत्व को खोज निकाला था, और महानता की ओर अग्र-सर हो पड़े थे । मनुष्य राज कुमार है, परमात्मा उसका राजा, अपने ही शासक के सम्पर्क से जो मिल सकता है, उसकी न तो गणना न ही वर्णन । गायत्री का अर्थ है ही आत्मा का परमात्मा

के गान का है। आत्मबल का अर्थ है ही ईश्वरीय बल, केवल नुसखा एक है, उद्धोदात्मनात्मान-अपना उद्धार आप करो अपनी ताली आप ढूंढ़ो, लगाओ, जंग लगे होने के कारण लगेगी नहीं, ताला खुलेगा नहीं, पर धर्म की चिकनाहट- प्रभु नाम के बल से, सतत प्रयास से यही ताली काम आएगी, आखिर लग ही जाएगी, क्योंकि ताला तुम्हारा है, लगाया हुआ तुम्हारा है, अभ्यास करते रहने से फेरते फेरते रहने से, योग्य स्थान को नर्म कर देगी, झुका देगीं तथा विजय आप के हाथ लगेगी, यही मौलिक तथ्य हाथ लगने का है। धर्म से अभ्यस्त होना ही जीवन भर का सारांश है। इसलिए अपने जागृति कला केन्द्र के सदस्य बनकर, भरसक प्रयास की प्यास बुझाएं, अन्तरत्मा से सम्पर्क बनाएं, उद्-बुद्ध हो जाएं, वर पाएं, अपने ही भीतर का जलवा बनाएं, अपने हां में शोभा के फूल उगाएं, अपनी लौ में आप ही जल जाएं। यह खेल तमाशा होता है जगत जननी के शुभ लाभ तथा मान से, उसे साक्षात करना, हमारा धर्म है। बड़े-बड़े सचिवालय होटलों इत्यादि पर विज्ञान ने ऐसे द्वार लगवा दिए हैं कि व्यक्ति ज्यूं ही प्रवेश द्वार के चौखट पर पांव रखता है, द्वार खुल जाता है, प्रकाश हो जाता है, तथा आगन्तुक की सूचना प्रसारित हो जाती है। इसी तरह हमारे भी भीतरी कक्ष में जिज्ञासु का श्रद्धा पूर्वक यूं प्रवेश होता है, द्वार खुल जाता है, प्रकाश हो जाता है, यह कला केन्द्र हमारा भी उदबुद्ध हो जाता है। सार एक ही है कि आटोमेटिक रीति नीति हमारे हां भी सुसज्जित है, केवल देर प्रवेश पाने तथा सत्कृत होने की है प्रकाश की प्राप्ति रास्ते की दृष्टि साधनारत की प्रतीक्षा में है।

अलख निरंजन दुख भंजन भिक्षामदेहि

भेंट ८

"यह ध्रुव सम्पर्क"

चुम्बक कोरी कल्पना नहीं- सारी सृष्टि उत्तरी दक्षिणी ध्रुव से बंधी हुई है। यह दोनों ध्रुव भिन्न प्रकृति के होते हुए आपस में सम्बन्धित हैं। सृष्टि कर्ता ने बड़ी कलाकृति से धरती व सूर्य को, जल व वायु को, चन्द्रमा तथा पृथ्वी को, सागर व बादलों को, मानव में ऊर्ध्वगामी तथा अधोगामी मस्तिष्कीय धाराएं, मैंगनिट सैंस, पशु वर्ग का हजारों किलोमीटर की उड़ाने तथा लौट जाने की प्रक्रिया माइग्रेशन पथ प्रदर्शन, ब्रह्माण्डव्यापी चुम्बकत्व, गर्भस्थ बालक तथा माता का सम्बन्ध, शरीर में रक्त प्रवाह तथा विद्युत प्रवाह, मैस्मेरेजम के करतब, प्राण विद्युत के चमत्कार प्रकृति तथा मानव का चुम्बकत्व ध्रुवों की रस्साकशी, वर्फ के भण्डार, सागर के कागार, ग्रह उपग्रहों की सन्तुलित गति बिना किसी रस्सी या साधन, प्रत्येक का अपने स्थान पर टिका रहना, एक सनातन सत्य है, कला का कौशल है, समष्टि व्यष्टि का रिशता नाता एक विलक्षणता है। मानव का सूर्यादि से प्रभाव एक स्वयं में अटूट स्थिति तथा वास्तविकता है, जिसे समझने से रचयिता के अनन्त शासन प्रशासन का लेखा जोखा दृष्टिगोचर होता है। यह सारे सम्बन्ध एक पुस्तक नहीं कई ग्रत्थों का ताना बाना प्रस्तुत करते हैं। मैं केवल इस भेंट में सविता तथा प्रयोदयात का राजीनामा लेकर कुछ लिखने चला हूँ।

गायत्री माता मन्त्र शिरोमणि का अधिकार लेकर एक विचित्र उत्तरदायित्व देती है। इस मन्त्र में सविता को ही प्ररेणा का सौभाग्य देकर विधाता ने तथा मन्त्र संचालित ऋिषियों ने एक अनोखा दृष्टान्त दिया है। सूर्य को सविता

कहते हैं, सविता उपाधि का सूर्य उदय होने से पूर्व, आभा-मण्डल शीतल महत्वपूर्ण संज्ञा का प्रतीक है। षू धातु से बनाने पर "यः सुवति प्रेरयति सर्वान स सविता" का उदान्त भावनाओं से परिपूर्ण मार्ग निदेशक, प्रेरक, उत्साहवर्धक, इस महामन्त्र का देवता करार पाया है। सविता का स्वरूप उज्जवल, पवित्र, ज्योतिपूर्ण, भाव विभोर प्रदाता, शोभायमान बनता है। इस-लिए इसे ही पहले कक्ष में रख के अन्तिम कक्ष की बुद्धि को सत्कृत करने का अधिकार मिला है। जो ऐसे गुणकारी तेजोमय सूर्य के सम्मुख अपनी प्रतिज्ञा को सफल करने के लिए प्ररेणा के पात्र बनते हैं वह ही सच्चे गायत्री उपासक जीवन प्रवाह में चेतनामय होते हैं। इसलिए मंगलकारी सविता को सदबुद्धि का दानी, मानकर उपास्य तथा उपासक का रिश्ता नाता बनाया जाता है। यूं तो सूर्य के अनेकों नाम है, पर महामन्त्र में यह नामकरण अपनी महत्ता आप बनाता है। विश्व भर की किसी संस्कृति में इससे भिन्न पूजा और पुजापा का समावेश नहीं होता : सविता की दिव्य ज्योति, वरणीय, प्रकाश प्रभु अराधना करने, धारण करने, उसके प्रभुत्व में आने का कौतूहल पूर्ण व्याख्या का विषय है। कैसा वह शुभकाल होता होगा जब हमारे पूर्वज नदी किनारे उषा समय सविता इष्ट देव का आह्वान करके, दिन भर का भोजन, सदबुद्धि प्रज्ञा द्वारा अपना जखीरा बनाते थे। शुभसंकल्प की इस रीति नीति द्वारा, मेधावी होकर, सफलता की सीढ़ी चढ़ाया करते थे। जैसे ध्रुव अपने-२ स्थान पर स्थित सृष्टि के कार्य संचालन में सचेत होकर कर्त्तव्य पालन करते हैं, वैसे सविता नाम का देवता हमारी बुद्धियों को सत्प्रेरणा की समिधा से हमारे यज्ञ कामों में सचेत करने का व्रत पालन करता है, जैसे ध्रुव अपने आकर्षण से प्राकृतिक जीवन में सहयोग संजोते हैं, ऐसे ही हमारा इष्ट मित्र अपने प्रताप से हमारी बुद्धियों पर छत्रछाया का आशीर्वाद देते

में अनुकम्पा करते हैं। बात है केवल श्रद्धा की, मांग की, पूर्ति की, सत्कृत होने की, उद्यत होने की झोली भरने की, लाभान्वित होने की, महाराज की देखरेख में संलग्न होकर द्रोपदी नामी देवी को प्राप्त करने हेतु लक्षबिन्दु की, यह प्रयोग अपने हां रोज का ड्रामा बनाता है, सौभाग्य लेता है।

गायत्री मन्त्र का भाव पक्ष अपने में हो अमोध शक्ति सम्पन्न है। स्व वृजानंद यूं हा नहीं गंगा में खड़े सविता देव की उपासना में रत होते थे। यदि वह साधना व तपस्या में लगे रहे तो सम्मानित भी हो गए। मेरा आशय केवल इस पवित्र सम्बन्ध की स्थापना से है। सत्पात्र होकर जिजीविषा प्ररेणा की उमंग अपना फल आप पकाती है। इन शब्दों के जुटने से सामर्थ्य प्राप्ति एक कला कौशल है। करने वालों ने करके देख लिया। मूलाधार चक्र को प्राण ऊर्जा शक्ति के स्त्रोत ध्ऊर्वगामी रूप रेखा में समझ लेना उपासना का फल है। बिजली निकलती है दो तारों के मिश्रण से है, नर नारी के मिलने से नया उत्साह प्राप्त होता है। सविता तथा प्ररेणा के दो तार हमारे जीवन में प्रकाश पुँज होते, अलंकृत करते, सावधान करते, प्रयोजन में सफलता की सामग्री लेते हैं यह सारी बातें सत्य होती है जब यह दो देवता हमारी रक्षा का साधन, आदर्श तथा सुलक्षण बनते हैं। मेरा अपना अनुभव इसी में रहा। मुझे प्रत्येक कार्य में इन दो तारों के मिश्रण का साहस, स्वभाव, रंग ढंग बनाने का सौभाग्य मिला और मुझे निर्विघ्नता का फल प्राप्त हुआ। यूं अपने कार्यक्रम का वर्णन दूसरों के समय जाए करने की बात बन जाएगी, पर इतना कह देना कि समस्या, कर्म, कर्म की आएदगी में भाव उत्पत्ति मुझे फल स्वरूप होती रही। यही तो सविता तथा प्रचोदयात् का मेल मिलाप बना। बात केवल यूं मान लेने की है कि पृथ्वी अन्तरिक्ष दिशाओं में भिन्न मानव हृदय में सविता को साक्षात् देखना, अपनो सदबुद्धि से योग्य उचित लाभ प्राप्त

करना, इस जोड़ को सम्मानित करना है। इन्द्रिय संयम और मानसिक एकाग्रता, दो धाराएं मिलकर विद्युत शक्ति का निर्माण करती हैं। हम अपने घरों में प्रयोगशालाओं में दफ्तरों में कार्यक्रम में दो-२ तारें मिलाकर सरम्य तेज व प्रकाश का अवलोकन करते हैं। ईसी तरह सविता देव में सत्प्ररेणा की प्राप्ति हमारे सारे कार्यों में व्याप्त होके, हमारे अभीष्ट पूरा करती है। सविता के वरेण्यं स्वरूप की महिमा भारी है। वह आगे चल कर समझने का अवसर मिलेगा कि सूर्यदेव के कितने उपकार हैं। दोष नाशक तथा प्रकाशमय रूप रेखा सारे जगत का प्राण है। इस ज्योति की महिमा का बखान ही नहीं यहां तो केवल दो लक्षों को एक दृष्टि से देखकर, सारे चिन्तन तथा उपलब्धि का दर्शन करना है। पुण्य से पुण्य मिलता है, गुणी से गुण, लक्ष से साधना, सम्पन्न से प्राप्ति, संसार भर का नियम है। यहां तो एक दृष्टि एक रीति, एक श्रद्धा तथा एक व्रत पालन का किस्सा है। आजमाए जिसका जो चाहे। सविता देव संसार भर की समस्त शक्तियों में ओत प्रोत, ऊर्जागति शक्ति प्रदान करती है। इस तरह हम भी, इस देव के योग्य, उसके शक्तिमान तेज की देख रेख में अपने दिन भर के कार्यों में, शुभ संकल्प, शुभ संचालन, मंगल मूल, शुभ तथा शुद्ध भावनाओं की भूमि तैयार करते हैं। प्रात: कालीन सविता की तरह प्रात:कालीन प्रतिज्ञा वध होने के द्वारा हम भी एक राह लेते हैं, शक्तियों को जोड़ते हैं, मार्ग लेते, दिशा लेते, संकल्प की पुट धारण करते, एक ही रीति रिवाज पूरा करते हैं, शुभ से शुभ बनता है, एक महान उपकारी तेजोमय की उपासना से हम भी अपने कामों, मनोविकारों का परिशोध प्राप्त करते हैं। यह है, अवस्था उपासक व उपास्य की, आराधक तथा आराध्य की, रिश्ता नाता जोड़ने तथा सम्मानित होने की। किसी के अधिकार में चलना, किसी की देख रेख में विचरना, किसी को लक्ष में रखना, किसी के

नेतृत्व में उभरना, हर देश हर काल का नियम रहा है, प्रत्येक युग में आवश्यक रहा है, पहलूहमारा भी सविता की गोद, संरक्षण में समर्पित होना न तो गलत है, न दोषी, न ही अनाधिकार चेष्टा, अपितु अत्यन्त उचित व सौजन्य पूर्ण है। इस तरह संसार भर का प्रेरक देव हमारे संसार का भी शुभ प्रेरक हो पाए, सही तथा शोभनीय है एवं हम अपना, आमनेसामने की रंगदार फिल्म बना डालें। काखां भी अपना मेल जोल भी अपना, हिंडोला भी अपना, प्रज्ञावान प्रतिष्ठित हो सकते हैं।

अलख निरंजन दुख भंजन भिक्षामदेहि

ऊं

मन्त्र की उपाधि

यूं तो जग तरणी, उपकार करणी के अनेकों नाम सुने गए हैं पर वेदों में इस मन्त्र के नाम को गुरुमन्त्र कहा गया है ! यह उपाधि लावण्यमयी है ! गुरू शब्द शिक्षा देने, नेता बनने, महान होने, आदरणीय होने के हेतु प्रयोग में आता है ! पर गौरव के कारण भी गुरु कह जाने में कोई हानि नहीं ! इस शब्द की जाँच पड़ताल करने की आवश्यकता महसूस करके यह भेंट आरम्भ कर रहा हूं !

सारा संसार चलता है बुद्धि के आधार पर, दुःख सुख-सत्कर्म दुष्कर्म, सदव्यवहार दुर्व्यवहार, उचित अनुचित, आदर सत्कार, पढ़ाई लिखाई, शालीनता गंवारपन, प्रियता अप्रियता, मेल जोल, भुगतान किनारापन, राग द्वेष, सत्पात्र असत्पात्र, खेलकूद, एकागृता उच्छृंखिलता, चतुरता मूढ़ता, समय असमय, सार असार, नमृता अभिमान, अहंकार साधु स्वभाव, सद् विचार अशुभविचार, सत्चिन्तन दुष्चिन्तन, संकल्प विकल्प, सदगुण दुर्गुण, स्वाधीनता पराधोनता, स्वाभिमान आत्मपतन, मोक्षवन्धन, प्रगति अवनति, सफलता असफलता, परीक्षा विफलता, दूरदर्शिता अदूरदर्शिता, कटिबद्धता ढील, व्यय अपव्यय, बहुभाषी मितभाषी, सहन असहन, सहजता कटुता, जागृति विमूढ़ता, सचेत अचेत, बोल चाल, आहार विहार, सफाई मैल, सुसज्जा उल्लंघन, प्राप्ति छूट, ग्रहण अपहरण, क्या-२ गिनें विश्व भर की सारी दिव्य व राक्षसी शक्तियाँ, प्रत्येक की बुद्धि पर अवलंम्बित हैं। यह सत्य प्रत्येक के मानने जानने योग्य है। कोई धर्म, कोई सम्प्रदाय, देश व काल से दूर इस सर्वमान्य बाट तोल से विमुख नहीं होता ! जाति भेद, वर्ण भेद, रंग रूप से

मुक्त, साधारणतया व असाधारणतया, केवल बुद्धि के कला, कौशल, परिधि से बाहिर नहीं, इसलिये सारे कार्यक्रम का एक ही माध्यम, मन्त्र तन्त्र बुद्धि ही मानी व जानी गई है ! इसलिए बुद्धि प्रदाता होने के कारण इसे गुरु, मुख्य हेतु, दृष्टिकोण की उपलब्धि के कारण, गौरव प्राप्त हुआ ! कोई देखे तो सुमति से माता पिता का सम्मान करते हैं, कोई माता पिता को जूता दिखाते हैं ! कोई भाई भाई सौहार्द से मेल मिलाप रखते हैं, और कोई जानी दुश्मन की भवना से कोसों दूर रहते हैं। गृहस्थ में पति पत्नी दो आत्माएं एक सूत्र में बन्धे, प्रत्येक अपने अपने स्थान पर प्रतिज्ञा वध तथा कोई अपितु आजकल तो प्राय: पति अफसोस करता है कि यह कैसी पत्नी टक्कर गई, और कोई स्त्री जार जार रोती है कि किस जालिम के पंजे में फंस गई ! कोई पिता कन्या को घर लक्ष्मी कर पूजता है। जमाना आ गया कि पिता भी कन्या के स्त्रित्व पर हाथ डाल सकता है। वह भी काल था जब यशोधरा भगवान बुद्ध को मिलने जाने से इन्कार करती थी और यह कहती पाई गई कि 'भारतोय नारी अपराध नहीं कर सकती' —कितना गौरवपूर्ण, उच्च लक्ष तथा महिमाशाली उद्‌बोधन था और अब जिससे चाहो अपने पतिदेव की कमजोरियों का कोष संजोया जाए ! सीता माता का राम के साथ बन में जाने का आग्रह सभ्यता का प्रतीक, सेवा की अराधना की स्वर्णमय अवस्था का वर्णन था और कहाँ अब पति पत्नी एक दूसरे के आचार विचार से उखड़े उखड़े, क्लबों और नाटयशालाओं में समय खोते हैं। किसी ने चाटुकरी की, किसीने जादूगरी की, किसी ने वफा किसी ने दगा, किसो ने सेवा, रावण सीता को चुरा ले गया। भलेमानस ने विद्वान होने पर युग युगान्तर के लिए महाराक्षस होने की उपाधि ली, हनुमान ने सीता को तलाश कर लिया जिसका नाम राम भगवान की

तरह अमर हो गया। यहां तक भी कह सकने में संकोच नहीं कि राम की अपेक्षा हनुमान की पूजा अधिक हो चली। तुलसी दास ने बहुत दिन पहले उचर दिया था :—

जिसको तू दारुण दुख देहि ताकि तू मति हारलेंहि

अर्थात् बुद्धि एक, प्रज्ञा एक, मेधा एक, ऋतम्भरा एक, पर प्राप्ति सबकी भिन्न ! इसी एक मन्त्र से महामन्त्र अलंकृत हुआ ! क्या सुलक्षणा है यह महातत्व एक में अनेक देखे, अनेक में एक देखे। संसार भर की देवियों को माता जाने, गिरे तो सबमें अपनी पाश्विकता का स्वरूप माने, कहाँ उत्सर्ग कहाँ अपवर्ग कहाँ अन्तरिक्ष अपने ही भीतर सम्भाले और कहाँ बैठेबैठे, पाताल देश को भी पाले, कोई चोर डाकू था, तो महर्षि भी वही जीव बन पाया। कोई स्त्री के प्रेम में सरावोर था, तो इस जगत जननी की कृपा हो गई तो राम चरित मानस का लेखक बनकर घर घर की शोभा बन गया ! कोई सात्विक प्रेमी है। तो कोई ऐसा भी है जो किसी देवी से विलास की ज्वाला में धधक उठा, पर देवी ने इन्कार करा ही था कि नवयुवक प्रेमी ने उसी शरीर के टुकड़े टुकड़े ही कर डाले। इतना भी कर दिया होता, तो विचार कहीं बाँध लेते। पर उस पिशाच ने अपनी ही प्रेमिका के वह टुकड़े, शरीर के भिन्न अंग, फ्रिज में रख लिये। रोज एक एक अंग खाता रहता, तथा अपनी नृशंसता की यादगार मनाया करता ! इतिहास कुछ भी नहीं केवल इस बुद्धि नामक तथ्य के, खिलवाड़ों की कथा मात्र है ! भगवान भी विचित्र, जिसने एक सिक्के के दो पहलू कर दिये, उन्हें भिन्न नाम दे देता, कम से कम एक ही वस्तु, शक्ति के दो प्रतीक तो न रखता। पर सिक्का है केवल सु और दु की उपाधि से सुलक्षण व दुलक्षण का वर्गीकरण कर दिया है इसी के द्वारा गिरावट की भी अन्तहा हैं, सौजन्य की भी अन्तहा

है ! इसलिये सारे प्राणीमात्र ने बुद्धि करण की माँग की है— हमारी देव माता व वेदमाता ने केवल बुद्धि की, सुप्रकृति की, प्रार्थना इस महा मन्त्र द्वारा गौरव गाया है। इसलिये अपनी समझ में इसे गुरु की उपाधि मिली है। सारे संसार में घूमते हुए तथ्य एक ही निकलता है कि गुरु मन्त्र की अराधना ही सर्वमान्य है ! इससे प्रेम वाटिका भी, इससे उपयोगिता विध्वंस भी, इससे एक ही तल कितना विशाल व्यापक, प्रभाव-पूर्ण-सारगर्भित-एक है। जो जीवन भर प्रणय सूत्र में नहीं बंधते, बाल ब्रह्मचारी हो के एक महापुरुष की उपासना में लगे रहते हैं, एक हैं वह भी जो संसार में ग्रहस्थी दिखाये जाते हैं पर क्या मजाल, अपनी ही धर्म पत्नी, जिस पर उनको संसार का यह यज्ञ सौंपा जाता है, को हाथ लगा पायें कल्पना में बात नहीं समाती, पर सत्य ही कहते हैं स्व० रामकृष्ण परमहंस आठ मास भर एक ही चारपाई पर पत्नी सहित सोते रहे, पर एक ही तो बार, विचारों का आश्रय नहीं बदला, न किया देवी ने गदला, और नही स्वामी जी ने नियम बदला ! सात्विक बुद्धि जो ऐसी मिल गई, सचमुच इस माँ के भी क्या कमाल जो कटिबद्धता में जरा भी ढील आ जाए ! प्रतीक से कोई शब्द होता तो यहाँ लग जाता पर एक वह भी तो है जो अपना वचन भंग करने, दर बदर भटकने, प्रणय सूत्र को तोड़ने जोड़ने पुनः पुनः जोड़ने तोड़ने में व्यस्त रहते हैं। शान की बात यह कि प्रणय सूत्र का भी तो समय नियत है पर देखा यह जा रहा है कि १०१ वर्ष की आयु में तलाक या १०० वर्ष की आयु के पश्चात्त ६५ वर्षीय देवी से पुनः विवाह ! प्रणय सूत्र क्या हुआ ! खेल तमाशा बन गया ! अमरीका में इन्हीं दिनों ३००० रोजाना तलाक होते हैं। मालूम यह होता है कि वहाँ और कोई काम ही नहीं होता। रिश्ता टूटना, फिर बनना, फिर बिखरना, अमरीका जैसे सुविकसित राष्ट्र में प्रति वर्ष

विवाहों में ५० प्रतिशत शादियाँ टूट जाती हैं। फिर कहाँ हमारे यहाँ तो धर्म पत्नी एक लक्ष था, सुलक्षणा, सरस्वती, फिर उसे वरने का अधिकार मिला, शूरवीरों की बहादुरी के द्वारा और कहाँ अब स्त्री गौण हो गई ! लक्ष रह गया दहेज जिस निमंत्रण के द्वारा देवियों की आहुति एवं स्वाहा होती जा रही हैं और उस मापक मन्त्र का यह हाल कि दुनियां का सबसे महंगा विवाह १६ जून १९७९ को फ्राँस में हुआ जहाँ इस अवसर पर ४० लाख रुपए खर्च हुए, खरबपति डनसिमाग परिनु ने अपनी पुत्री के विवाह पर उसे २१४००००० डालर का दहेज दिया ! यह सारे ब्यौरे बने हमारी बुद्धि माता के, जो जिधर चाहे वह जाए ! इसलिए इस तत्व की श्रेष्ठता, दिव्यता, सौजन्यता, जितनी माँगी जाये थोड़ी है ! गाँधी भी देवता जिन्नाह भी नेता था महर्षि दयानन्द भी उद्धारक थे, राजा राममोहन राय सुधारक थे, सुभाषचन्द बोस भी देश की आत्मा थे, भगतसिंह भी देश के शहीद-ए-आजम थे। बुद्धि एक, सिक्का एक, परख अनेक जिनमें कोई कोई करे विवेक, लक्ष एक, राह अनेक, एक उत्कर्ष कक्ष का यह मन्त्र "महतो महास्तेन ग्रहणामि", का व्रत बनाता है, जीवन भर की शोभा बढ़ाता है ! प्रभु नाम की उच्च प्रदाता है, इसलिये इस गुरु मन्त्र को कोटिशः बार प्रणाम हो तथा स्वीकार हो।

भेंट समाप्त करते एक वेद भगवान का यह आदेश भी सुनें ! भक्त कहता है मैंने बुद्धि द्वारा सूर्य की उपासना की है। मनुष्य का बुद्धि स्थान (सिर) ही मनुष्य में धुलोक (सूर्य लोक) है, मैंने अपनी बुद्धि द्वारा सत्य को ही सब तरफ ग्रहण करके धारण किया है। धारण होने से यह मेधा कहलाती है ! द्युलोक को, अपने में समा के मैं सूर्य के समान हो गया हूं। जहाँ तुलना करें कहाँ मानव कहाँ सूर्य ! कितना प्रकाशमय, यह सब हुआ बुद्धि के द्वारा !

अलख निरंजन दुख भंजन भिक्षामदेहि

भेंट १०

जाप महा ताप

इस महामन्त्र के जप से साधक की अन्तः चेतना में प्रसुप्त सूक्ष्म स्थानों पर आघात होता है, जिससे प्रसुप्ति जागृति में बदलती है। यही इस भेंट का रहस्य है, इसी तरह शक्ति स्त्रोतों के भंडार खुल जाते हैं ! विश्व की किसी सभ्यता के केवल २४ मात्र अक्षरों द्वारा ब्रह्म विद्या तथा साधना विज्ञान का अभ्युदय नहीं होता—घात तो घात रहा : इस मन्त्र के जाप से प्रताप, अग्नि, ताप, कर्मरत होने की सद्प्रेरणा, ऊर्जा गर्मी, प्राप्ति की आकांक्षा तथा बलपूर्वक लगे रहने की सद्प्रवृति उत्पन्न होकर लाभदायक होती है ! यह उत्पन्न ताप आराध्य देव की स्वीकृति में आकर पुण्यफल के देने वाला बनता है। जो सतत प्रयत्न ज्ञानपूर्वक महाशक्ति की शरण में लगा रहता है, वह अन्ततः सत्कृत होता तथा शुद्धाचरण में समाविष्ट होता है, यह वह पुण्य मन्त्र है जो ज्ञान व कर्म, ज्ञान विज्ञान, की सन्धि बनाता, उपासक को अलंकृत करता है ! इसलिये विधि-पूर्वक, निष्ठा को लक्ष में रखकर शुभ प्रसाद पाने की सत्पात्रता का वरदान भी प्राप्त होता है। मनोविज्ञान स्वयं बोल रहा है, कि जो आकांक्षा हो, उसे दिलओ दिमाग में संजोए रहना स्वयं स्वागतम् का रूप लेना है, बात को दुहराते रहना, भाव को निर्धारित करना ही तो जाप है : लक्षित गुण कर्म स्वभाव में शोध जाप का ही एक रूपान्तर है, इसलिए जाप शब्द, न केवल शब्द है, अपितु प्रयोग में आया जादू तथा उत्सर्ग है। यह जरूर है कि अर्थहीन जाप, लक्षरहित दुहराव किसी काम का नहीं ! जाप ताप है स्वयं एक विज्ञान है, अनुभव है, सत्य है, वास्त-

विकता है। बल मिल जाने पर गाड़ी का पहिया चल निकलता है, तथा उपासक को उत्तरोत्तर सौभाग्य मिलता जाता है। मैंने स्वयं प्रभु आश्रित जी के गायत्री जाप में रत प्राणियों में बल दृढ़ता तथा स्वच्छता देखी थी, जैसे सुमति को पाने हेतु नाच किया जा रहा है। शरीर की इन्द्रियों का नहीं अपितु मानसिक गुणों का, सद्विचारों का। यही उमड़ता सत्संग, ऐसा रंग जमा देता था कि साधक वर्ग उसी का नाम नहीं लेते थे, सामूहिक राग, समष्टि पूर्वक जाप, एक फोर्स बनती थी। सत्संग की समाप्ति पर बाजार से गुजरते नर-नारी मन ही मन गाते जाते थे, जिसे हम ताप के नाम से स्मरण करते हैं। यह एक प्राकृतिक सत्य है कि जब लोहा भी गर्म हो जाता है तो उसे तोड़ा-मरोड़ा जा सकता है, एवं मानव बल शुभ संकल्प से प्रभावित, सद्गति, शुभविचार, शुद्ध व्यवहार में बदलकर शुभ ही शुभ का समागम करते थे! किसी चीज को, लोहा को बार-बार रगड़ने से गर्मी पैदा हो जाती है, इसी तरह मंत्र का सम्बोधन, भावना का संयम, शुभसंकल्प की उत्तेजना, एक विद्युतधारा बनती है, जिसके द्वारा प्रवाह एक बहाव लेता है, यह कोई नई बात नहीं, आए रोज के सत्कर्मों में नई रोशनी, नया जीवन, तथा नई ताजगी की प्राप्ति है, जब गर्मी से पैदा किया हुआ विचार संरक्षण में जाता है, तब मानव के पास तल्लीन होना, व्यसत होना, राह न बदलना, छोड़े मार्ग को पुनः प्राप्त न करना, एक इष्ट बन जाता है! जिसे परमपिता की कृपा से, अपने हां एक dynmo संगृहीत मन्त्र बन जाता है। एकत्र हुई यह सम्पत्ति, निष्ठा का स्थान लेती, साधक की सफलता का कारण बनती है! संघर्ष ही जाप है, ताप उसका फल है! जाप से स्मृति में कोने-कोने से बल, बल से कार्य सफलता तथा सौभाग्यशीलता आती है, सामूहिक जाप में एक-दूसरे के साक्षी, साधकों की बैठक में शहादत, उच्चारण में वाण, बाण में लक्ष, तथा लक्ष

में प्रवृत होने की क्षमता' भक्त को उद्‌वोध करके, सम्मानित करने का रहस्य ही इस भेंट का विषय है ! शिकायत तो आज निःशुल्क प्रयास है, जिससे मानव का हृदय अपने आप शरमिन्दा होता है ! भावोत्पादन का विद्युत मिलता ही जाप से है। इस मन्त्र की धारा ही तो कुण्डलिनी बनाती है ! इस मन्त्र का जाप भावों की पृष्ठ भूमि में तैयार होता है। भाव अपने में इतने स्वच्छ विकसित हो जाते हैं, कि भाव आपका काम दे जाते हैं,जैसे एक रेल का इंजन भाप के बलवोते, हजारों टनों का बोझा, सैकड़ों मील अच्छी रफ्तार पर खींच जाता है, उसी तरह हमारे भावों की भाप हमें भी सुविकसित स्वच्छ लक्ष की ओर पूरे जोर से खींच ले चलती है, इसलिये इस भेंट में भाप का वेग, भाप का बल दिखाकर इस माता के वरदान की ओर ध्यान जमा सकने की क्षमता पर प्रकाश दे रहा हूं ! गायत्री की महाशक्ति संजोने की कला ही मेरा ध्येय है। जाप-ताप में परिणित होना अत्यन्त आवश्यक है, इसी से ऊर्ध्वगामी हुआ जा सकता है। मोटर चलाने वाले, रेलादि के इंजन चालक-हवाई जहाज चला सकने वाला जानता है कि ध्येय की गति के लिये पहले ताप ऊर्जा भाप का उत्पन्न होना, सामर्थ्यवान होना, क्षमता प्राप्त करना, अत्यन्त आवश्यक है। रेलगाड़ी के इन्जन कुछ काल पहले चालू कर दिए जाते हैं, हवाई जहाज ताकि पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण से ऊपर उठने की खातिर, वह पूरी बल लगा सकें, जूं ही जहाज ऊपर चढ़ जाता है, तब उसका साधारण गीयर लगाकर ऊपर वह वैसे उड़ता है, जैसे पृथ्वी पर मोटर गाड़ी ! इसी के अनुसार साधक जाप से उत्प्रेरित होकर, ताप की क्षमता से पृथ्वी लोक की योग्य सामग्री के विचारों से, ऊपर उठकर महान शक्तिमान में एकाग्रचित्त हो सके। यह वैज्ञानिक रूप जाप से ताप प्राप्ति, सत्य है, निर्विवाद है, प्राप्ति का सही रास्ता है, दिव्यमान होकर ही कोई दिव्यता का पात्र

बनता है। महान् को प्राप्त करने के लिये महान होना योग्य है !

गुरु ब्रह्मा गुर्रुविष्णु गुरुर्देवा महेश्वर :
गुरु साक्षात् पर ब्रह्म तस्मैं श्री गुरुवे नमः

सर्वंव्यापी महाकाय सूर्यकोटि सम प्रभा निर्विघ्नम्
कुरू मे देव सर्व कर्येषु सर्वदा।
सर्वस्य बुद्धि रूपेण जनस्यहृदि ष्ठि संस्थिते:
स्वर्गाद अपवर्गाद नारायणम नमोस्तते।

प्रातः काल इस भावना से युक्त प्राणी दिन भर की राशि, सत्प्रेरणा, सदभावना का श्री गणेश करके आत्मोत्कर्ष का सत्पात्र हो जाता है। योग साधना का मौलिक रहस्य एकाग्रता है, एकाग्रता की शक्ति, सम्पन्नता ने आज के मनोवैज्ञानिकों को लुभायमान करके उसके परिणामत: टैलीपैथी आदि उपचारों की महिमा को जतला दिया है। पुन: पुन: किसी शब्द व भाव को मन में सन्मुख रखना उस शब्द के सार को सफलता प्रदान करता है। इसलिए जाप न तो गलत है न ही व्यर्थ, अपितु, ताप का उत्पादक है। सूर्य की किरण का शीशे पर केन्द्रित करना, आज के युग में एक ऐसा चमत्कार दे रही है कि एक किरण का प्रकाश कई दिनों व वर्षों की तुलना करता है। मैस्मेरेजम भी और कुछ नहीं, केवल किसी विचार धारा का केन्द्र रूप होना है। वैज्ञानिक वर्ग ने यह भी सिद्ध कर दिया है कि रूस की एक देवी, अपनी एकाग्रता के बल बोते, एक मेज पर रखी वस्तु, बिना हाथ लगाए, केवल दृष्टि द्वारा ध्यान से एक स्थान से दूसरे स्थान तक खिसका सकती है। यही कला हमारे पूर्वज आचार्य लोगों में थी, उनकी शिक्षा का माध्यम, छात्रों में सदविचार तथा सदाचार का जीवन, गुरु वर्ग के ताप से होता था। वह नेत्र की आकुति, दिव्य दृष्टि से शरणार्थी शिष्यों में प्रयुक्त होती थी, जिसके कारण शिक्षा अपनी

पटड़ी पर सुरक्षित चल सकती थी। आज का युग, ताप,ऊर्जा, के माध्यम से, असाधारण कला कौशल दिखाकर चकाचौंध कर रहा है। कोई कारण नहीं की हम जाप द्वारा ताप प्राप्त कर अपने इष्ट देव की उपासना में व्यस्त न हो सकें। ताप का घर के चूल्हे जलाना, गली कूचों में प्रकाश पहुंचाना नगरों में स्ट्रीट लाइटिंग इत्यादि तो साधारण से काम हो गए हैं। हमारा सत्पात्र होके, जाप से श्रद्धान्वित होके, लक्ष पर चोट करना, हमारे जीवन का लाभान्वित होना, किसी सन्देह का कारण नहीं बनता। द्रोपदी स्वयंवर में, अर्जुन का जल में मछली की आंख को उतार लेना, उसी पर अपने तीर का लक्ष वेंध लेना, एक मानी हुई प्रमाणिक कथा सिद्ध हो चुकी है यद्यपि अधर्म का बोलबाला हो जरूर रहा है पर परमार्थी लोग अपनी असाधारण शक्ति का सूचीपत्र पेश करने से पीछे नहीं रहे। एक ही सज्जन का लगभग एक करोड़ पुस्तकों के भण्डार में किसी पुस्तक का आशय व परिचय केवल उसके ताप प्राप्ति का साफ प्रमाण बन चुका है। मैंने स्वयं अभ्यास द्वारा, किसी शुभ संकल्प द्वारा, किसी अपने दिनचर्या के कार्यों में सफलता यूं देखी हैं जैसे कि वह मेरी ओर आ रही हो। यह सारा बल लगता है ताप से, भावना के सन्ताप से, तथा ध्येय की सच्ची आरजू से। अन्तः साधक का तो श्वास के सहारे जाप चलता रहता है भगवती सीता का राम के चरणों में सतत ध्यान, यशोधरा का बुद्ध के चरणों में सतत् प्रणाम दोनों भगवानों में वह ताप ला पाए कि दोनों ही अपनी प्रियतमा के हां पुनः लौट ही आए।

अलख निरंजन दुख भंजन भिक्षामदेहि

भेंट ११

त्रिपदा के रूप अनेक

गायत्री को आद्य शक्ति का नाम दिया गया है ! स्थूल सूक्ष्म कारण शरीरों में संस्थित शक्ति को गायत्री कहते हैं ! सृष्टि के भी तीन शरीर है, भू, भूव, स्वः, इनमें भी त्रिपदा का समावेश है गायत्री के तीन चरण सत, चित, आनन्द का भी नाम देना है ! गंगा, यमुना, सरस्वतो, की त्रिवेणी भी इसका ही अलंकार है । समय के अनुसार कभी लक्ष्मी विष्णु काली भी इसके ही रूपान्तर थे गायत्री को ही वेदमाता, देवमाता तथा विश्वमाता को भी संज्ञा प्राप्त हुई । बुद्धि, प्रज्ञा, ऋतम्भरा भी इसके ही स्वरूप है । श्रद्धा, प्रज्ञा, निष्ठा भी इसकी शाखाएं हैं ! चेतना के यह स्तर इस माँ की व्याख्या करते हैं । भक्ति योग, ज्ञानयोग तथा कर्मयोग भी इससे प्रतिपादित होते हैं । सत्यं, शिव सुन्दरम् भी इसको प्रशंसामात्र हैं ! हृदयचक्र, आज्ञा-चक्र तथा नाभिचक्र भी इसकी कुञ्जी से गति में आते हैं ! ब्रह्मचेतना, संस्कृति, तथा सभ्यता, भी मंगलमय प्रमाण है ! भटकाव से बचाव, जुट जाना तथा तदात्य हो जाना, इस मां का पुण्य प्रताप है ! सर्वश्रेष्ठ सत्य पथ की प्रदर्शिका हर प्रकार से सुरक्षित करने वाली, इतने लाभों के देने वाली के कारण, महाशक्ति महाप्रज्ञा भो कही जाती है । जैसे पूर्व भेंट में विचार किया गया कि मौलिक सब सुख सामग्री इसके उदगम से प्राप्तव्य है, इसलिए इसे अलंकृत करने में कोई कमी छिपाई नहीं जा सकती ! विलक्षण सुन्दरता इस महामन्त्र की इसलिये भी बनती है, कि इसके सम्पर्क में कोई कथानक, मनघड़न्त कहानियाँ हैं नहीं, निजी शुद्ध सत्यस्वरूप में दर्शन करना इसके

महत्व को स्वीकार करना है। सत्य तो यह भी है कि इसकी पृष्ठभूमि नहीं बनती, यह सारे रूपान्तर अपने दर्शन तथा अनुभव में ले आने से गौरवपूर्ण है, इसके विस्तार को चित्रित करने के लिये अलंकारों व आभूषणों की आवश्यकता नहीं ! यह सिद्धि की जानकारी स्वतः प्रमाण है जो साधक इस माँ की गोद में बैठकर गये, स्वयं प्रकाश मुक्त होते गये, तथा सदप्राप्ति से सम्पन्न होते गये ! इसे त्रिपदा कहें, तृतीय वरदानी कहें, त्रिगुणात्मका कहें, अपनी अपनी आवश्यकता तथा उपार्जन के सफलीभूत, तीन सत्य, तीन नियम, तीन रूप, तीन मुख तथा तीन प्रयोग भी मान सकते हैं ! सृष्टि के तीन मौलिक तत्व, सत रज तम भी, उसी व्याख्या में सामने आते हैं। केवल अपनी पवित्र भूमि में तीन अवस्थाओं, तीन लोकों, तीन सम्पदाओं की प्राप्ति में अनुग्रहीत होना, इसका रहस्य है ! पशुवृतियों का दमन, दिव्यता का समर्थन तथा सन्तोष की उपलब्धि, इसके तीन फल, इस पुण्य दायिनी माता के सान्निध्यका प्रमाण हैं। ज्ञान, कर्म, उपासना इसके तीन भाग, अपना अपना पार्ट अदा करके, माता के प्रति गौरव देने वाले नियुक्त हैं। तभी तो आदिकाल से इसकी स्तुति के गीत गाये गये ! इसके २४ अक्षर २४ अवतार भी गिने गये। अक्षरों के वरदान उच्चस्तरीय गरिमा के कारण महामना बना सकने की सामर्थ्य इस छोटे से मन्त्र में केन्द्रित इसकी आभा को दोबाला करते हैं व्याख्याकारों का भी क्या कहना, रामायण का दिव्य काव्य, महाभारत का स्त्रोत भी इन २४ अक्षरों से उद्गम हुआ, इससे बढ़कर इसकी शोभा की क्या तुलना बन सकती है। श्रद्धामय होकर अपने अपने अन्तःकरण में जागृत दिव्यता, जनमानस को सत्प्रेरित करती गई, इसकी महिमा बढ़ाती गई, यही विद्या आत्मिक विद्या के नाम से विख्यात हुई, इस महामन्त्र की वरदान सिद्ध हुई, उसे वर्णन में ले आना, उपहास भी हो सकता

है, पुष्टिकरण भी अपनी कमाई, अपनी जुटाई अपनी कटाई, निजी लाभ प्राप्ति है, जिसका लेखा जोखा नहीं बनता! यदि स्तुति पढ़कर गायत्री उपासक होना है तो क्या कहना, अपने पुण्य प्रताप का फल, अपनी उपज, अपने मनः क्षेत्र अपने साधनों द्वारा, एक मौलिक सत्य का उद्घाटन करना है! सबसे लाभ इस माँ के जाप का निजी व्यक्तित्व के उभार का है। इसे ही आत्म विज्ञान का नाम दिया गया है। दोनों लोकों में शुद्ध वर्चस्व, महातत्व द्वारा सुख शान्ति प्राप्त होती है। बुद्धि शरीरिक क्षेत्र में प्रज्ञा का मानसिक क्षेत्र में तथा ऋतम्भरा का परम सत्ता में, स्थिरता ही इस प्रयोगशाला का वास्तविक निवास है। त्रिपदा के रूपान्तर देखकर हम बढ़ते ही गौरवन्वित होते हैं। सृष्टि के यह खेल हमें स्वयं प्रतिज्ञावध करते हैं कि त्रिवेणी के शुभ स्नान से हम आत्मज्ञानी होने की प्रतिष्ठा प्राप्त करें।

देख खुला है द्वार पुजारी

पल में अरे समा जाएंगे, तब प्रवाह में यह सब सागर,
मिल जायेगी नदियाँ तुझ में डूबेंगे कि नभ चुम्बी गिरिवर
अपने अन्दर झांक बटोही उसमें कितनी गहराई है
तुझ पर करुणा निरझरी कितनी प्रभु प्रियतम की लहरायी है।
रुकन सकी है अब तक जग में शुद्ध प्रेम की धार पुजारी
देख खुला है द्वार पुजारी! (श्री महावीर प्रसाद)

विचार बाहर से आते हैं भाव भीतर से उठते हैं! भाव विभोर हो उठना, शरीर को संयम में बांधना, मस्तिष्क में निराले भगवान की प्राप्ति है! यह तो सिद्ध है कि अत्यन्त गुणकारी गायत्री, आश्रयदाता है! प्रखर बुद्धि देने वाली, चमत्कारपूर्ण तथा उपकारपूर्ण है! जिसके जाप से ऋत में स्थिरता हो जाए! इससे बढ़कर खालिस मुनाफा क्या हो सकता है! स्थित प्रज्ञ

हो जाना गीताकार का वरदान है ! ऋत से भर जाना, स्वयं स्वर्णमय है ! असार संसार का सार निखरी बुद्धि है ! कहते हैं स्वयं जगत नियंता ने इस महातत्व से सृष्टि रचना का श्री गणेश किया था ! इतने गुणों में विश्वास जमा कर सद्प्राप्ति का लक्ष बना लेना, महापुण्य वरदान है ! साधनारत ने प्राप्ति कर ली, मंगलमय होकर दुख दर्द भूल गये, जिन्हे सत्प्रेरणा हो गई वह निहाल हो गये !

"नहीं अध्यात्म है झूठा मगर समझे नहीं हैं हम !
इसी कारण जहाँ पर थे वहाँ पर भी नहीं हैं हम
हजारों साल हैं बीते मगर बढ़ हम नहीं पाए
पकड़ ली एक ही सीढ़ी वहाँ से बढ़ नहीं पाए
हुई यह भूल साधन को साध्य हम समझे,
भुलाया इष्ट को हमने नहीं आराध्य हम समझे
हमारी इष्ट की दूरी इसी कारण हुई कब कम(मंगल विजय)

यह परम वन्दनीया मां कभो भूलने वालो नहीं । आशीर्वाद देने से दूर हटने वालो नहीं, उपासक का निरादर करने वाली नहीं, भटकाव देने वाली भी नहीं, वरदान ही इसका एक ही काम है । एक ही मन्त्र में अतुल्य शक्ति, एक ही मन्त्र में अमोध प्रगति, सन्मार्गगामी, ऊर्ध्वगामी बन जाना, कला भी, विद्वता भी है, पूजा भी है, पुजापा भी है, ओत प्रोत हो जाना, आत्म-समर्पण के अभ्यास से, निश्चिन्त हो जाना, हल्का हो जाना, निर्विधनता से चलते चले जाना, कुछ न होकर सन्तुष्ट हो जाना, सन्तुलित हो जाना, तीन तीन समागमों का आनन्द पा जाना, त्रिवेणी का शुभस्नान कर पाना, सर्वेभवन्तु सुखिना की दृष्टि प्राप्त कर लेना, सब ओर से परब्रह्म की सुरीली तान में सराबोर हो जाना, गदगद हो उठना, सन्तुलन में घुल जाना, निर्विकार, शान्त स्वभाव नियन्त्रित हो रहना, सब हाल में मस्त, न राग न द्वेष, न शोक, न मोह, सब ओर से आनन्द ही

आनन्द साक्षात स्वतः प्रमाण है ! गायत्री माता द्वारा, भीष्म पितामह का शरशैय्या पर महीने काट देना—बाल्मीकि दीमक से बाल्मीकि ऋषि का रूप प्राप्त कर लेना, सुकन्या का च्यवन ऋषि को कष्ट दे लेना, प्रायश्चित में उन्हीं की धर्मपत्नि व्रत को निभाकर अमर हो जाना, इतिहास के पृष्ठ दृष्टान्तों में लबालब हो रहे हैं, कगार से बाहर निकल रहे हैं, प्रचुर महिमा से सत्कृत हो रहे हैं ! केवल एक मुख्य हेतु, कि बुद्धि प्रज्ञा ऋतम्भरा के दिव्य वरदान न गिनाए जा सकते हैं, वरेण्यं के अवरेण्यं रूप रूपान्तर, आभा, प्रतिभा, निष्ठा की सामग्री संजोए रहे हैं, मेरी खातिर आपकी खातिर, उत्साही जन की खातिर, मंगलमय हो जाने की खातिर, त्रिपदा माँ में आश्रित हो जाने की खातिर ही खातिर !

अलख निरंजन दुख भंजन भिक्षामदेहि

भेंट १२ (क)

मानवता सम्मानित

जगत् नियंता ने बड़ी अनुकम्पा तथा उत्सुकता से जड़-जगत् रचा। अनेक धातु, खनिज पदार्थ, सागर, सागर में शक्ति-भंडार, वनस्पति, धरती के भीतर की उपज, ऊपर का उत्पादन, चमत्कार पूर्ण रचना से सराबोर कर दिया, पर यह सब कौतूहलपूर्ण समष्टि, अर्थहीन होतो, यदि मानव को उन्हें ढूंढने, तथा उपयोग में ले आने की सामर्थ्य, बुद्धि कला कौशल न दिया होता ! वह भगवान् देता कैसे, मांगने की आकांक्षा, अन्वेषण की सत्प्रेरणा ही, एक उसका द्वार था जिसे टटोलने की क्षमता मानव को प्रदान कर दी। यही मानवता को सम्मानित करने का उपकार करके, अनन्त सत्ता ने अवर्णनीय वरदान दिया है, जिसे अधिक ध्यान से पेश करने का विचार लिये बैठा हूं ! हमें गायत्री मां की गोद दी, तो अन्य धर्मों में भिक्षा, मांगने की तिलमिलाहट देकर सर्वहितकारी ने साक्षात् मंगलसूत्र बताये हैं ! यह केवल पदार्थों, जड़ वस्तुओं के लिए ही नहीं, गुण-वर्द्धक चुम्बक की तरह, प्रदान करते हुये अपने लावण्य का प्रमाण प्रस्तुत किया है ! इस भावना से सम्मान का रहस्योद्घाटन ही मेरा इष्ट है, सात्विक बुद्धि, उपकार कर्मीण्यता, निस्वार्थ भावना, भक्ति विश्वास, उदारता, सन्तोष तथा सहनशीलता, अपना रंग आप जमाते हैं ! भगवान के उपकार अनन्त सत्ता के अनन्त आलाप है, गिनती का तो काम नहीं, फिर भी वर्णन करने का साहस भी, एक अनुगृहीत होना है। भगवान की अनुभूति, भगवान् से शक्तियों की प्रार्थना, अत्यन्त सही विधि तथा सिद्धि है। इस तरह वेदमन्त्र द्वारा उसे तेज स्वरूप,

वीर्यरूप, बलवान, ओजपूर्ण, मृत्युंजय, सहसावान, सम्बोधन करके तेज, वीर्य, बल, ओज, मृत्यु को सहने की शक्ति की प्राप्ति की इच्छा की है, पर्वतों की विभूतियां तो भूल ही गई—पर्वत एक समान हैं। केवल पत्थर ही पत्थर हैं पर पत्थरों में हरियाली, अपनी लीला बनाये बैठी है। हरियाली भी क्या, औषधि-संजीवनी, औजिस्वतापूर्ण अत्यन्त लाभकारी परन्तु नवजीवनदायनी ! किस-किस पर्वत का नाम कहें केवल उदाहरणार्थ नवनीत फरवरी ८२ में प्रकाशित आयुर्वेद, प्राचार्य सुरेशचन्द चतुर्वेदि का प्राचीन औषधि वैज्ञानिक लेख--राम और कृष्ण के काल में, संजीवनी, अपनी शोभा आप दिखा रही है।" रामायणकाल में मेघनाद द्वारा, लक्ष्मण जी को शक्ति-बाण मूर्छित कर देने पर श्री रामचन्द्र जी बहुत दुखी हुये, शीघ्र ही सुषेण वैद्य को उनके वहां हनुमान जी ले आये। चिकित्सक हमेशा अपने कर्त्तव्य का पालन करता है, यह मान्यता प्राचीन-काल से चली आ रही है ! इसीलिये शत्रु देश का वैद्य भी वैद्य ही है, इसी धारणा से उनसे परामर्श किया गया। सुषेण वैद्य ने कहा, कि लक्ष्मण मूर्च्छावस्था में है, पूर्ण रूप से मृत नहीं है, यदि उन्हें शीघ्र ही संजीवनी बूटी का प्रयोग कराया जाए तो यह पुनः चेतनावस्था में आ सकते हैं। अब प्रश्न यह था कि यह औषधि कहां से प्राप्त होगी ? इस पर सुषेण ने कहा कि हिमालय पार कर कैलाश के समीप द्रोणाचल शिखा पर मृत संजीवनी विशालयकरणी, रोहिणी और सरोहिणी यह औषधियां हैं। वे अन्धेरी रात्रि में भी प्रकाशित रहती हैं। उपस्थित समूह चिन्तित हो गया, श्री राम के अनुज अचेतन अवस्था में पड़े हुये हैं किसे चैन आए, लेकिन इतनी दूर कौन जाए और कौन वनस्पति लाए, किसी को इनकी पहचान भी नहीं थी ! स्तब्ध वातावरण, सन्ध्या की वेला, सूर्योदय के पहले औषधि आनी चाहिये, अन्यथा लक्ष्मण जी संसार में नहीं रहेंगे !

राम जी, सीता जी का क्या हाल होगा, लक्ष्मण जी की पत्नी उर्मिला का क्या हाल होगा, अयोध्यावासी क्या कहेंगे, अनेक प्रश्न अब सबके सामने खड़े थे। हनुमान जी से यह सब कुछ देखा न गया और उन्होंने स्वयं ही इस औषधी को ले आने का संकल्प किया। विश्वास किसी को नहीं हो पाया, कहां लंका और कहां हिमालय, लेकिन हनुमान जी आज के हवाई जहाज या राकेट के बिना उड़कर, पवन वेग से, हिमालय पार पहुंचे और वहां जाकर संजीवनी को ढूंढा लेकिन वहां अनेकों दिव्य-औषधियों के होने के कारण वे किसी निष्कर्ष पर न पहुंच सके, रात बीती जा रही थी, ब्रह्ममूहुर्त की वेला भी निकट थी क्या करते कुछ न सूझा तो पहाड़ी को लेकर ही पूर्ण वेग से लंका को लौटे! कौनसी शक्ति में यह असम्भव कार्य किया होगा। यह विषय आज भी विचारणीय बना हुआ है! सब आसमान की ओर टिकटकी लगाए देख रहे थे—आश्चर्य महान आश्चर्य, श्री हनुमान जी पहाड़ी को लेकर उतर रहे थे। यह देख प्रसन्नता की लहर दौड़ गई, चारों ओर चहल-पहल मच गई, संसार का महान् आश्चर्य दिखाई दे गया, तुरन्त वैद्य सुषेण ने संजीवनी बूटी का रस निकाल कर लक्ष्मण जी को पिला दिया, इसके प्रभाव से मूर्छित लक्ष्मण होश में आने लगे। चारों ओर खुशी का वातावरण छा गया। मृत संजीवनी की गन्ध से अनेक मृतक भी जीवित हो गए, विशलयकरणी से शरीर के बाण बाहर निकल आए, ब्रणशोषिणी से घाव सूखने लगे, सरोहिणी के प्रभाव से, आघात एवं क्षतों के दाग हटने लगे। इस ब्रह्माण्ड लीला का यही रहस्य है। जिसने हमें जन्म दिया है, वह हमारी प्रीति का इच्छुक है। योगानन्द परमहंस का मार्गदर्शी लेख और सोने पर सुहागा का काम कर रहा है कि ईश्वर से संवाद भी हो सकता है! हम तो गायत्री द्वारा मांग का पहलू पेश कर रहे हैं पर यह सन्देश उल्लास का विषय बनता है। ऐसी ही एक हृदयप्यारी घटना बाइबल में उल्लिखित है। रात के

समय सोलोमन का भगवान से वार्तालाप ! वेदांजली में भी तो 'तच्चक्षुर्देवहितं' वाले मन्त्र में लिखा गया है, आओ मनुष्यो हम इस सूर्य को देखते हुये सौ वर्ष तक जीते रहें। हम सौ वर्ष तक इस दिव्य सूर्य को अनन्तर नेत्रों से अनुभव करते रहें और सौ वर्ष तक इसकी अनुकूलता में प्राण धारण करते रहें। महान पिता का सर्वश्रेष्ठ वरदान, मानव को यथावत ज्ञान प्राप्त करने की क्षमता देना है।

विवेक उसको अनुपम कृतज्ञता है। एक वेदमन्त्र में भगवान को सुमना होना कहा है, अर्थात् भक्तों को प्रसन्नचित्त करना है, सखाभाव से शरणागतों का पथ-प्रदर्शन करना, अत्यन्त शोभनीय है। ईश्वर के लिये मनुष्य का प्रेम ही एकमात्र भेंट है। इस ब्रह्माण्ड लीला का यही रहस्य है कि जिसने हमें जन्म दिया है वह हमारी प्रीति का इच्छुक है। संगीत भी भगवान् ने जहां कला बनाई, वहां विशेषतया भारतीय संगीत का लक्ष्य आहत से अनाहत की प्राप्ति, साकार से निराकार की प्राप्ति, सावरण से अनावरण की प्राप्ति, खंड से अखंड की प्राप्ति और सविकल्प से निर्विकल्प तथा सविशेष से निर्विशेष की प्राप्ति है। एक से एक बढ़कर लावण्य पूर्ण प्रसाद मिलता जाता है। गायत्री मन्त्र के बाद सर्वाधिक महत्वपूर्ण और प्रभावोत्पादक मन्त्र है—महामृत्युंजय मन्त्र, जिसे साक्षात् अमृत कहा गया है। ऐसा विश्वास है कि उसके नियमित जाप से आसन्न संकट और यहां तक कि मृत्यु तक को टाला जा सकता है। इस मंत्र के द्वारा ऋषि भगवान् से मुझे जन्म और मृत्यु के चक्र से मुक्त करके अम्रत्व की प्राप्ति करा। अमरत्व का अर्थ मृत्यु से मुक्ति नहीं, उसे उपनिषदों में अमरत्वम् कहा गया है। इसका अर्थ अनन्त काल तक स्वर्ग में निवास करना नहीं, पर वास्तव में पृथ्वी पर ही दिव्य चेतना की प्राप्ति है। भला किसी सभ्यता किसी साहित्य में जीवन का इतना सुरम्य भाग्य वर्णित नहीं।

इस दिव्य चेतना में जानना व होना एक हो जाते हैं। इस मंत्र के जाप से, हृदय रोग जैसे घातक रोगों से निवृति है, सुखी, सन्तुष्ट, शान्त जीवन, व्यतीत करने की क्षमता है। प्रतिदिन पांच मिनट प्रातःकाल जाप से मनोयोग पूर्ण होकर स्नायविक तनावों से मुक्त होना है। क्या उत्तम लीला है उस महाराजाधिराज की। हिन्दू लोग गायत्री को सर्वाधिक, महत्वपूर्ण तथा प्रभावशाली मानते हैं, उसके वाद मृत्युंजन्य मन्त्र की महिमा का अनुभव करके मानव अमृतपुत्र होने का अधिकार लेता है। चिकित्सक तो है ही मां, अब, ›प्रतीन्द्रिय चिकित्सक अपना कला कौशल दिखाकर मानव को चकाचौंध कर रहे हैं। भगवान के रंग निराले हैं। हंसी भी आती है कौतूहल भी, कैसे हमारे कलाकार होते थे। कहते हैं एक बार शान्ति निकेतन से कविवर रविन्द्रनाठ ठाकुर के दो चित्र चुराये गए, छानबीन शुरू हुई, पर कोई सुराग न मिला, लेकिन शान्ति निकेतन के संचालकों को इस बात का पूरा इत्मीनान था कि आखिर तो चोरों को उन चित्रों का मतलब समझने के लिये आना तो शान्ति निकेतन ही पड़ेगा। अर्थात् यदि चोर भी अमूल्म चित्रों को बेचेंगे तो समझने के लिए उनको आगे बढ़ना ही होगा। ताकि अपनी मांग पूरी सम्भाल सकें। इसलिये तलाश का जोर ढीला कर दिया गया। तभी कहा था कि मानव को बुद्धि प्रदान करके, भगवान ने बड़ा सम्मानित किया है। कवि होता क्या है, मार्मिक वेदना बुद्धि के तारतम्य की ताल मिलाता है। कवि बोलते क्या हैं हार्दिक तारों को झकोरते जाते हैं। वर्णन भी कला है पर वरेण्यं के सम्पर्क से नफासत दिव्यता तथा भावों के हिलोरे लेते हैं, तुलसीदास जी की चौपाइयां प्रकृति की

अठखेलियां हैं, गुरुग्रन्थ साहिव क्या है, भगवान के अमृत वचन का जाप है। संसार भर के विदुषी लोग क्या से क्या कर जाते हैं। भावोत्पादन, रस उत्पादन, जिन्हें प्राप्त होता है, वह बड़े भाग्यशाली हैं। सूरदास थे तो सूरदास पर रासलीला में कृष्ण भगवान से उसकी पुण्यमाता को, बाल गोपालों को, किस ठाठ से सजा दिया है, यहां बुद्धि कौशल में अनुपम सुन्दरता को भर दिया है। कविता की कविता—भावों का उत्कर्ष, भौतिक तथा अध्यात्मिक क्षेत्र में कमाल कर दिखाया है। मानव अति मानव, महामानव किस-किस का वर्णन करें। कविवर का एक कथानक कि एक वृक्ष पर एक पक्षी बैठा है, नीचे पक्षी पकड़ने वाला अपना तीर कमान फैलाए बैठा है। ऊपर की टहनी पर बाज पक्षी झपटा मारने की धुन में बैठ रहा है। पक्षी दुविधा में है दोनों तरफ पंजे में है। पक्षी अन्तः मुद्रा में है। अचानक नीचे वृक्ष के तने से सांप निकला और पक्षी को मार गिराने वाले पर जा पड़ता है। शीघ्रता में उससे बाण छूट जाता है, जो बाज की जान लेवा बनता है, भाग्य का विचित्र जोड़ा, भगवान भरोसे पक्षी दोनों ओर से आजाद हो निकलता है। कवि की बुद्धि कल्पना अपने में शिक्षा का प्रसाद देती है, जब इस सन्दर्भ को वास्तविक जीवन में देखें तो अनेक पाठ पढ़ने को मिलते हैं। कल्पना भावी अनुभूति, एक नया संसार खोजे जा रही है। एच-जी० वेलस महान् लेखक ने तीसरे संसार के आकार प्रकार को दृष्टिगोचर बहुत वर्ष पूर्व कर लिया था। उन्होंने अपनी फिक्शन उपन्यास 'दी इनविजीवल मैन' में मानव के भीतर, सम्भावनाओं पर प्रकाश डाला है जिसके द्वारा वह देशकाल से परे अदृश्य लोक में पहुंच पाना तथा उससे सम्बन्ध स्थापित

कर सकने की रूपरेखा बताई है। यहां बैठा लेखक, आकाश में उड़ना, वहां का संसार बनाना, एक नई प्रगति के द्वार खोल पाता है, मनुष्य सामर्थ्य का पुन्ज है, उसकी अपनी सत्ता का क्षेत्र, परमाणु संरचना में किसी प्रकार कम अद्भुत नहीं। बुद्धि मन को काबू में ला सकती है, उसकी यह कला अब पर्दे पर आ रही है। तिलक महाराज का अंगूठा पक रहा था, कष्ट बढ़ता देख वह हस्पताल पहुंचे। चिकित्सक आनन-फानन कलोरोंफार्म ले आए, ताकि उन्हें बेहोश करके चीरा-फाड़ी कर सकें। तिलक जी हैरान—कहने लगे कि मुझे भगवद्गीता पकड़ा दो और अपना काम कर लो। विचित्र प्रयौग, विचित्र तल्लीनता, हुआ भी ऐसा ही, गीता उन्हें मिल गई, चिकित्सक महोदय ने उनके शरीर के साथ जो चीर-फाड़ करनी थी कर ली, क्या दर्द, क्या सटफटाहट, देखने वाले परेसान जब आपरेशन हो चुका तो पूछने पर तिलक महाराज ने यह उत्तर देकर अधिक कौतूहल का विषय पेश कर दिया कि सुख दुख तो मन को होता है, शरीर का क्या ? अभिप्राय कि हाय तोबा करें। कमाल यह कि बुद्धि खूंटे में बांध छोड़ी और आप मस्त हो गए। सत्य है तभी तो तिलक महाराज ने गीता रहस्य नामक पुस्तक लेख बद्ध कर भगवान तिलक कहला पाए। युग का प्रकाश यह, कि मानवी काया आत्म विज्ञान की बहुमूल्य प्रयोग शाला बनी जा रही है। अब अन्तःकरण ही व्यक्तित्व का मूलभूत स्वरूप तै हो गया है। यह तथ्य भगवान द्वारा मानव को सम्मानित करने को नहीं तो क्या है। पेड़ों का आकर्षण, बादलों को पिघला वर्षा लाता है। आंख की पुतली सही तो प्रकाश का आनन्द, कान की झिल्ली ठीक तो ध्वनि का मजा,

इसी तरह पवित्र अन्तःकरण व्यक्तित्व के झरोखे से चुम्बकीय पिण्ड की शक्ल लेता है। महामानवो का योग दृष्टिकोण वर्तमान की बड़ी उपज है। जार्ज वर्नाडशा कहते हैं "कि जीवन का सच्चा सुख यही है ऐसे उद्देश्य में जिसे तुम स्वयं ही महान समझते हो काम आ जाना, इसके पहले कि तुम ढेर पर रद्दी की तरह उठा कर फैंक दिए जाओ, काम करते करते पूर्ण रूप से घिस जाना, प्रकृति की एक शक्ति वन जाना, कहीं अच्छा है, बजाए इसके कि तुम रोग और आपत्तियों की एक उदर पीडित स्वार्थ पूरित क्षुद्ध पीडा वने हुए रोते फिरो कि दुनियां तुम को सुखी बनाने की ओर कुछ ध्यान नहीं देती।" मस्तिषक चेतना का समूचा जादूगर की पटारी है। फिर भी केवल रहस्यमयी पर्तें, तेरह प्रतिशत की उपलब्धि बन पाई हैं। कितना बड़ा मानव है, कितने बड़े पिता का भागीदार है। महानता से महानता की जांच बनती जा रही है, एवं अरोरणीयान महतो महीयान का अनुभव बन रहा है। श्री बी. जी. रेले की पुस्तक दी वैदिक गाडस इन फिर्गस आफ वियालाजीव में कह रहे है कि वेदों में वर्णित आदित्य, वरुण, अग्नि, मरुत, मित्र, अश्नि इत्यादि मस्तिषक के स्थान विशेष हैं जहां में छिपी शक्तियां जागृत होती तथा असाधारण क्षमता प्राप्त कराती हैं।

अलख निरंजन दुख भंजन भिक्षामदेहि

भेंट १२ (ख)

मानवता सम्मानित

हमारे हां एक पुरानी कहावत है कि नाम चढ़ा व्यापारी खट खाता है अर्थात् मुनाफा में रहता है। मनुष्य भी प्राणियों में सर्वश्रेष्ठ नाम लिखा बैठा पर वास्तविकता यह है कि अनेक कारणों से अन्य प्राणी अर्थात् पशु पक्षी अधिक वलवान अधिक लाभकारी, काया वाले, अधिक चुस्त चालाक पाए गए है। उनकी क्षमता के मुकाबले में मानव कुछ भी नहीं। अब प्रश्न यह है कि किस कारण मनुष्य सर्वश्रेष्ठ गिना गया है। इस सन्दर्भ में यह तो पहले पहचानें कि इसका गर्व कहां-कहां चूर होता है। भगवान सबके सांझे है। प्रत्येक प्राणी को जीवन हेतु रचयिता ने पूरे साधन दे रखे है। उल्लू शब्द ही जगत विख्यात हो गया, किसी को बीचा जताने द्वारा। पर वास्तव में न ही तो वह इतना मूर्ख, जितना हम समझते है, नहीं नकारा, उल्लू रात का राजा होता है, दिन का अन्धा पर इसकी कमी पूरी कर दी कानों के द्वारा, कानों पर ढकने इस प्रकार लगे है कि किसी राडार यन्त्र की भांति वह तुरन्त हिसाब लगा लेता है कि ध्वनि किस दशा तथा कितनी दूर से आई है। मानव ने मुहल्ले में सूचना देने, घोषणा करने के लिए मनादी का ढंग बनाया, परन्तु दीमक मानव से नम्बर ले गई। एक विशेष ध्वनि के द्वारा शत्रु का पता देकर यह अपने सारे कुम्बे को सचेत कर देने में आगे बढ़ गई। दृष्टिपात में मानव अपने को बड़ा पहुंचा

हुआ मानता है, पर इस ओर भी इसका घमण्ड तोड़ के ऐसा रख दिया है कि विस्मय होता है। जटिल कीटक पानी के भीतर भी रहता है, और सतह पर भी तैरता है, उसकी आंखों पर इस प्रकार का चश्मा चढ़ा हुआ है, इसके द्वारा जब पानी की सतह पर होता है तो हवा में देखने के लिए ऊपर की आंखें प्रयोग में लाता है, और जब पानी के भीतर हो तो नीचे की आंखों से काम लेता है। मानव ने शैम्पीयन बनकर दौड़ों के मुकाबले भी किए, पर भगवान ने शुतुरमुर्ग सात-आठ फोट लम्बा एक डेढ़ क्विन्टल भारी ९० किलोमीटर प्रति घण्टा की तेजी से दौड़ लेता है। मानव ने सुराख करने की मशीनें भी बनाई, पर शुतुरमुर्ग एक डेढ़ इंच मोटी चादर को अपनी चोंच से छेद कर सकता है। भार उठा लेने में मानव ने सैंडों पैदा किए, पहलवान भी अखाड़े में उतरे, जो बड़े नाज के साथ अपने बाजू के मस्सल दिखाता डराता तथा अभिमान लेता है, पर ह्वेल मछली ३५ टन चर्बी ६० टन मास की काया, एक विशालकाय भगवान की माया है, जिसकी जीभ का वजन एक क्विन्टल से अधिक होता है, उसका हृदय वजन एक क्विन्टल उसके आठ टन खून की नियमित सफाई करता है, ह्वेल के फेफड़े १४ हजार लिटर वायु एक बार में ग्रहण करते हैं। शिकारी होने का यह भाग्य कि सैंकड़ों मील दूर से शिकार की ताक ऐसी विद्युत क्षमता उत्पन्न करती है कि तैरते शिकार को मार गिराती है। तारपीडोफिश इस प्रकार विद्युत से भरपूर होती है कि त्रिशूल फैंकने वाले को मार गिराती है। मछलियां नियत स्थान पर अण्डे देती, नियत समय में सुरक्षित हो जातीं, अण्डों को सुरक्षित करके नियत अवधि

पर पहुंच पातीं, जबकि अण्डे फटते है और इस बीच अण्डे देने वाली मछलियां पूरी सावधानी से कुशलता दिखाती है। मिस्टर टाड के अनुसार मछलियां नियत स्थान से रासायनिक संकेत ग्रहण करती हैं, और उसी के सहारे अपने नियत स्थानों पर आना जाना बनाती है। मानव ने गौरव प्राप्त कर लिया, धरती व आकाश में उड़ानों का, पर अमरीका में ऐसी गलहरियां हैं, जो धरती पर भी दौड़ लेती हैं, तथा आकाश में भी उड़ लेती हैं। मलाया, सिंगापुर की छिपकलियां व सर्प उड़ने में प्रसिद्ध दुनियां भर में विख्यात हुए। मानव भले सिर नीचा न करे, पर ऐसे पशु पक्षी हैं, जो परिवारिक जीवन में सफल करार दिए गए हैं। आस्ट्रेलिया में ऐसे शतुरमुर्ग पाए गए है, जो अन्य पशु वर्ग के बच्चों की भी देखभाल करते, माता पिता की अविद्य मानता में, उनको सुरक्षित रखते हैं। एक ऐसा अनुभव भी मिला है, जहां बच्चे दूसरे जाति वर्ग के हमारे चिल्ड्रन होम की तरह शतुरमुर्ग चलाते पाए गए हैं। हाथियों की हथिनी के प्रसूत के अवसर पर, सामूहिक उत्तरदायित्व देखभाल मानने व सराहने की दलील है। समाजिक्र जीवन में मछलियां नम्बर ले रही है। मछलियां न केवल तैरती है पर उड़ भी सकती हैं। अपने बच्चों को उड़ाना भी सिखाती है। अनेक पक्षी गाने वाले अपने बच्चों को गाना सिखाकर संसार की चहचहाहट में नियमित वृद्धि कर रही हैं। बच्चों को ट्रेन करना एक बड़ा कौशल है जो कई पक्षी पूरी योग्यता से निभा लेते हैं। पैन्गिन पक्षी मादा पक्षी को गर्भ के दौरान देखभाल, आगुन्तकों की पूछताछ खुराक लाना, खिलाना ऐसा सुन्दर खेल तमाशा बनाता है कि

मानव हैरान होता है। यह ठीक है कि मानव कला कौशल से दूसरों की कला भी अपने सिर मढ़ लेता है, पर वास्तव में भगवान ने हर एक को अपने-२ जन्म में सम्पन्न करके, प्राणी मात्र को आशीर्वाद दिया है। दूसरे प्राणी पढ़ें लिखे नहीं, इसलिए न वह प्रचार कर लेते है न मुकाबले में सामने आकर अपनी बाजीगिरी की गूंज मचा लेते हैं, पर अपने कर्त्तव्यपालन में एकाग्र, रत, तन्मय होकर, भगवान के सेवक के रूप में अपना वर्ग सुसज्जित किए जा रहे है। मानव प्रपंच भी कर लेता है, डींग भी मार लेता हैं, पर्दा पर अपने कारनामे प्रस्तुत करके तालियां भी पिटवा लेता है। सन्तुलन में जब यह खेल तमाशा निगाह में आता है, तो मानव तो तुच्छ प्रतीत होता है। फिर प्रश्न होता है कि सर्वश्रेष्ठ होने का सौभाग्य इसने क्यों और कैसे प्राप्त कर लिया। हां प्राणीमात्र में शरीर और आत्मा है। मानव को यह सौभाग्य मिला बुद्धि की परख से, विवेक के यंत्र द्वारा अपना तथा दूसरे का संतुलन बना सकने से। स्पर्द्धा में न आकर सोच विचार से अपनी अध्यात्मिक क्षमता को पनपा सकें। केवल यही वर, यही हुनर, यही अवसर इस योनि की स्वर्णमयी आभा है ऋत-सत-गति, भावुकता, प्रतिभा, भावना के विशलेषण से अपनी सुयोग्यता का सत्पात्र हो सके, यही मानव को सम्मानित करने का शुभ अवसर मिला गौरव मिला, सौभाग्य मिला, अर्थात् गायत्री माता के सत्पात्र का वरदान मिला। आत्मा से परमात्मा तक पहुंचने का अवसर मिला। अन्यथा शारीरिक कमी बेशी तो कुछ भी नहीं। शरीर के द्वारा आत्मा को चमित्कृत करने का अवसर मानव को मिला। यह सब मिला ही मिला, इसके साथ शोभा बनी यह भी कि मानव

को याचना करने का, आत्मा को परम के वरदानों से अलंकृत होने का, अशान्त, अशिव असुन्दर को शान्त शिव सुन्दर में तबदील करने का, अपना-पन सविता के चरणों में रखने का, भर्ग से सत्कृत होने का, सविता से प्ररेणा लेने का भूः भुवः स्वः में अपने को स्थापित करने का, इतने विशाल अनन्त शक्ति सम्पन्न परम पिता का संकल्प करने का, छोटे सिर में अवर्णनीय को समा सकने का, अपनी हीनता दीनता में उसे विभूषित करने का, धीमहि से धी प्राप्त करने का सुयोग्य अनुदान मिला गायत्री के उपासक को। गायत्री माता के पुजारी को, दिव्यता के आभारी को, यही केवल यही विधि ही महान प्रभु ने मानव सम्मानित करने की, जो अपने आप में, सष्टि भर में, रचना में एक सोने की कील लगा दी मानव में कि पूजा और प्रजापा बनकर सत्कृत हो सके, अलंकृत हो सके, गदगद हो सके, जो सारी तुलना में एक बड़ा उपकार है, बड़ा चमत्कार है, बड़ा अलंकार है। यही भगवान का वरदान, कि उसका वरिष्ठ पुत्र, प्राणीमात्र सुमति विवेक ऋतम्भरा के आधार पर सिर ऊंचा कर सके, निखर सके, एक पदवी है, सामर्थ्य है, हकीकत है, कक्षा में पहली पंक्ति है, व्यक्तित्व की पूंजी है, उत्तरदायित्व की कुन्जी है, अपना नम्बर प्राप्त करने का सौभाग्य है, वेदमाता के सुन्दर आलाप से गदगद होने का मिजाज है। पर यदि मानव सम्मानता में योग्य, सत्कृत होकर प्रभु के आशीर्वाद को सही उचित प्रमाणित करने का अधिकार ले सके।

अलख निरंजन दुख भंजन भिक्षामदेहि

भेंट १३

शक्ति सम्पन्न मन्त्र

साधारणतया मंत्र चन्द अक्षरों का समुचय होता है, सारगर्भित होने के कारण यह सुमन को उपाधि लेता है, विशेषतया वैदिक मंत्र तो स्वर्गीय तथा दिव्य आदेशवाहक होते हैं, मन्त्र का अर्थ समझ में लाकर श्रद्धापूर्वक उसका ध्यान तो एक अनुपम मंत्र के ऋषि के सम्पर्क करना भी है। इस स्वरूप यथोचित उत्तर पाने के लिए हमें कल्पना के पंखों पर सवार होकर वैदिक काल में, जब मंत्रों को रचना हुई थी, जाना होगा। योगो अरविन्द का इतना मत भी है कि उपनिषदों के मन्त्रों के रहस्यवादो अक्षर, स्वेच्छा से एक अध्यात्मिक वातावरण की सष्टि करने में समर्थ हैं, आर्य लोग, हिन्दु जनता, मंत्रों को सर्वाधिक और प्रभावशाली शक्तिकला मानते हैं। मंत्रों का शुद्ध उच्चारण, अर्थ सहित चिंतन तो एक राम बाण माना गया है ! मन्त्रों के द्वारा आदमो उड़ सकता है। इतना हो नहीं अपितु रामायण काल में मंत्रों के बल से बाण छोड़े जाते थे। अग्नि बाण, वर्षा बाण, आदि युद्ध विद्या के अनेक शस्त्रास्त्र मंत्रों के द्वारा वेगवान बनाए जाते थे। ऐसे अनेक उदाहरण है जो कि मंत्र शक्ति के चमत्कारों को प्रकट करते हैं। युद्धकाल में विभिन्न प्रकार के शस्त्रास्त्रों का अभिमंत्रित प्रयोग प्रचुर मात्रा में होता था। सम्भव है कि सुदर्शन चक्र का महाप्रभावी होना, मंत्रों से आमंत्रित होने पर ही होता रहा होगा ! गायत्री

मंत्र जहां लोक में सर्वप्रिय हैं वहां शुद्धपवित्र धारा से सम्पन्न एक अपने में दिव्यता से ओत-प्रोत है ! इस भेंट में मंत्र, मंत्र की शक्ति तथा उपयोग पर ध्यान देने का विचार ले बैठा हूं। मंत्रों द्वारा मुद्रा जाना, प्रभावित होना, जादू टोना, अविद्वानी, बाजारी लोगों का धंधा भी बन रहा है। यह धंधा मध्यकाल में गूढ़ प्रणाली बनी रही ! अर्थ न जानने वाले, गलत उच्चारण पर भी एक परम्परा का रूप लेकर भारतीय समाज की व्यवस्था बनाये रही ! वोणा वादक सपेरे मंत्रों के प्रयोग से सांप डसने तथा फलस्वरूप बच निकलने के लोकप्रिय कथानक प्राय: देखने व सुनने में मिलते हैं ! मन्त्र विद्या की सामर्थ्य विज्ञान की आधुनिक शोधों को प्रष्टि दे रही है। मन्त्रों द्वारा शाप वरदान, रोगों से छुटकारा, मारण मोहन, कला-कौशल का कौतूहल पूर्ण दर्शन हमारे आये रोज की दृष्टि में आता है। कभो विस्मयपूर्ण हो जाना हाता है, जब बुद्धिहीन पेशेवर लोग मन्त्रों का माया जाल बनाकर अपना वायुमण्डल बना लेते हैं तथा पढ़ो-लिखो जनता को भी फंसा लेते हैं। कहते हैं इटली की एक युवती ने, सामवेद को एक ऋचा पर सितार द्वारा अभ्यास किया, जिसके फलस्वरूप उसने हजारों दर्शकों को मन्त्रमुग्ध कर दिया। अच्छा वक्ता, संन्यासो, वैरागो, प्रतिभाशाली मन्त्रों के गान से अपना कार्य आरम्भ करने तथा इस भंडारे से शुभ प्रसाद के दाना बनते हैं ! यह अपनो देखो बात है कि मन्त्र विद्या के प्रवोण पंडित निज आकर्षण मन्त्र प्रवाह से श्रोतागण को बांध-सा लेते हैं। Well begin is half dane के

अनुसार सुनते ही कोर्ड टिक कर व्याख्यान का लाभ उठा, उसके वरदान से गद्‌गद् होते हैं। महर्षि दयानन्द के वैदिक मन्त्रों के सुनते ही बनती थी। मंत्रों की व्याख्या युक्तियुक्त, जिज्ञासु के मन में वाण रूप लगती गई, एक ही व्याख्यान महर्षि के अनेक लोगों के जीवन प्रवाह बदलने में सामर्थ्यवान हुये ! यह सब आध्यात्मिक शक्ति का एक जीता जागता प्रमाण इस युग ने अनुभव किया। हाल में ही आनन्द स्वामी जी महाराज का स्वर सहित मन्त्र उच्चारण सोतों को जगा देता तथा श्रद्धा की गंगा बहा देता था—प्रभु आश्रित महात्मा टेंकचन्द जी इसी मंत्र लय व ताल से एक निराली व्यवस्था चला कर अमर हो गये। मन्त्र की अदाएगी इतनी लावण्यता उत्पन्न कर देती है जैसे सर्प कर्ण रहित होने पर वीणा के प्रवाह से बंध जाता है। पिछले दिनों आर्य परिवार प्रातःकालीन मन्त्र गायन से इतना मुग्ध प्रवाह बांधते कि रस, कला, प्रभात, अपनी शुभ आशीर्वाद से वातावरण सौम्य, शांत तथा सुरक्षित जीवन का श्रीगणेश होते दिखता तथा बनता था ! अब भी कई आर्य मन्दिरों में शास्त्री पंडित सन्ध्योपासना के मन्त्रों के उच्चारण मात्र से प्रभातबेला को सुशोभित करते हैं तथा पिछले काल की शुभ स्तुति को जीवित करके विश्वास दिखाते हैं कि अमोघ शक्ति का यह भण्डार, शुभ रीति-नीति का वाहक, अपना भारत देश सुनिश्चित लक्ष के भावोत्पादन में सक्रियता ला सकता होगा।

मन्त्र की वैज्ञानिक छानबीन करके ढंग की बात आरंभ करता हूं। सामान्यता मन्त्र वह जो मंत्रणा का स्रोत बने। वैदिक मंत्र तो है ही वह जो जागरण चिन्तन तथा विवेक प्रदान करे ! जिसके मनन मात्र से संसार का यथार्थ स्वरूप

प्राप्त हो ! संसार बन्धन से मुक्ति प्राप्त कराये. जो सफलता के मार्ग पर लगाये, उसे मन्त्र कहते हैं। मंत्र शब्दों का पिरोना मात्र है ! अर्थपूर्ण रहस्य के दे सकने की क्षमता ही मंत्र की शोभा है ! जप भी मन्त्र की दृष्टि से हृदय की चोट है। 'ज' का अर्थ जन्म का रुक जाना, 'प' का अर्थ पाप का नाश होना, अर्थात् पाप को मिटाने वाली प्रक्रिया को जाप कहा जा सकता है। वाणी जो जप का विधान लेती है, द्रव्य-शक्ति सम्पन्न अंग है। सुशोभित जिह्वा को वाक् कहा गया है। हृदय को शिव, जिह्वा को शक्ति कहते हैं। हृदय प्राण जिह्वा राय भी कही जाती है। हृदय की अग्नि जिह्वा को सोम भी कहते हैं ! रगड़ से गर्मी पैदा होती, गर्मी से हलचल, कम्पन्न पैदा होती है ! हाथ की हथेली प्रत्येक को यह प्रमाण दे रही है, जिह्वा का विचार से रगड़, भाव का शब्दों से टकराव, गर्मी, उल्लास, पैदा करती है ! शब्द केवल जानकारी ही नहीं बहुत कुछ भिन्न है—यूगोस्लेवेकिया में फसल को सुविकसित बनाने के लिए खेती पर अमुक प्रकार की लहरें फेंक, ध्वनि से भाव प्रवाहित किये गये, जिसका परिणाम उत्साह-वर्धक पाया गया। हालैण्ड के पशु पालकों ने गाए दोहते समय संगीत द्वारा अधिक दूध की प्राप्ति की, जापान में छात्रावासों में रात्रि में संगीत द्वारा, सुरेले वाद्य द्वारा, खरी नींद, निश्चिन्तता तथा सौम्य का अनुभव छात्रों पर आजमाया गया। गायत्री मंत्र के अक्षर सुन्दरता पूर्वक गूंथे गए। गूंथन विचार तथा शक्ति का इस मंत्र में समावेश इस मंत्र की शोभा बढ़ाता है। शब्द को ब्रह्म भी कहा गया है।

शब्द, ब्रह्म नाद, ब्रह्म से सम्बोधन पाए जाते हैं। शब्दों का, मन्त्र के अभीष्ट हेतु, लय बद्ध ताल बद्ध, तथा क्रमबद्ध, होना आवश्यक है। गायत्री मन्त्र में वाक् तत्व हीं प्रधान है, जो इस मन्त्र को सुशोभित करती है! मनुस्मृति में गायत्री के उद्भव के विषय में यह कथा पाई जाती है कि इस सृष्टि के कर्ता ब्रह्म ने ऋग् यजु और साम इन तीनों वेदों से क्रमशः अ-उ-म तीन अक्षर निकाले और एक अक्षर ओ३म् की रचना की। इसके साथ पृथ्वी आन्तरिक्ष और स्वर्ग के प्रतोक स्वरूप भू भुवः स्वः को उसमें सम्मिलित किया गया। तत्पश्चात् ब्रह्मा जी ने 'तत् सवितु' आदि से प्रारम्भ करके पवित्र गायत्री मन्त्र के अन्य अक्षरों की रचना करते हुए तीन मात्राओं का दोहन किया। इस मन्त्र की उपासना से अध्यात्मिक, अधिभौतिक तथा अधिदैविक, इन तीन तापों से मुक्ति मिलती है। गायत्री की उपासना से अविद्या, काम और दुष्कर्म, इन तीन ग्रन्थियों का नाश होता है। और धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष इन चार पुरुषार्थों की प्राप्ति होती है, जिस ओर से देखें, इस महामन्त्र की महिमा, वैज्ञानिक गूंथन तथा प्रतिष्ठा अधिक से अधिक अनुभव में आती है। जितना यह मन्त्र महिमा वाला बना है, वहां विदुषी जन-समुदाय ने भी नामों की बहार इस मन्त्र के इर्द-गिर्द भर दी है! कोई तो इसके हजार नाम भी कह छोड़ते हैं। कुछ भी हो, महिमा से महिमा बनना भी प्राकृतिक नियम है। ब्रह्मा जी की दो पत्नियां अर्थात् क्षमताएं कह कर एक का नाम गायत्री दूसरी का सावित्री नाम धर दिया। बात एक है, एक मूलस्त्रोत है, एक प्राकृतिक चेतन सत्ता जिसे परा विद्या से विख्यात किया

दूसरी अपरा विद्या अर्थात् पदार्थं सत्ता ! एक का धर्मज्ञान, दूसरी का धर्म कर्म। एक दृश्य, दूसरी अदृश्य, एक सजीव, दूसरी निर्जीव, सारांश वही कि एक उद्गम स्त्रोत की दो धाराएं ! कोई तो इसे गंगा यमुना भी कह लेते हैं, गायत्री को मूलतः ब्रह्मी शक्ति भी कहते हैं। प्रत्येक विद्वान् ने अपने-अपने अनुभव के अनुसार, अपने दिये नामों की व्याख्या, ईस महामंत्र को सुशोभित किया हैं। कोई इसे परम तत्व, कोई परमगति, कोई ब्रह्मातिमका, कोई महेश्वरी अर्थात् तपस्वी जनों ने अपने प्रयोग से इस धेनु को जैसे दोहना चाहा, दोह लिया, लाभान्वित हो गये, सत्कृत हो गये। इसलिये इस महामन्त्र को असीम शक्ति का भंडार कहकर परम सन्तोष लेना भी, हमारे जैसे साधारण बुद्धि वाले समुदाय का आशीर्वाद लेना ही पर्याप्त है।

छान्दोग्य उपनिषद के अनुसार, तीन पाद वाला परम पुरुष, अमृत और प्रकाश बनकर आत्मा में प्रगट होता है। इमका एक पाद, सन्तोष कहकर अमृत प्रकाश तथा सन्तोष का पवित्र सुमन परम लाभकारी गुणकारी तथा हितकारी लेकर विश्व से अपनी महिमा बनाए हुए हैं ! मूल रूप से सुमति का फल ही इस महामन्त्र का एक आशय है, बुद्धि ही हर कार्य का हेतु-शक्ति देने वाली, भोगने वाली, समस्त जगत की Back Bone मेरु भूमि है सुरों में दिव्यता, ब्राह्मण में प्रकाश, कर्मशीलों में तपस्या, भक्तों में शक्ति, संसारी लोगों में कर्मणयता, अपने में जहां जिस तरह चाहो दर्शन करके कृत्यकृत्य हो सकते हैं। इस महामन्त्र में भरी शिक्षा यदि कोई जीवन में उतार ले, तो देवात्मा होने का सौभाग्य प्राप्त होता है। छोटा-सा यह मन्त्र, थोड़े से अक्षरों से

विभषित, महामना बन जाने का सौभाग्य मिलता है वैज्ञानिकों ने १०३ तत्व, ढूंढ़ निकाले हैं, पांच अधिक का वर्णन भी सन्मुख आ रहा है, इस तरह १०८ तत्वों से माला के तत्वों से माला के तत्व, हमारे जाप का विषय बन रहे हैं। गात्री का देवता, सूर्य देव की किरणों की तरह हमारे लिए प्रकाश पुंज होकर हमें आलोकित करने की क्षमता धरे हुए है। सविता देवता, अध्यात्म क्षेत्र का, ज्योति केन्द्र, हमारे समस्त कार्यों में ज्तोतिमान होने का पुण्य प्रताप धारण करता है। महान ग्रन्थों के २४ पर्व २४ अध्याय २४ श्लोक भी इस महामन्त्र की लीला क्रमवद्ध हैं। आराधनीय मन्त्र की व्याख्या में जीवन के यह पद असंख्य गुणों से सम्मानित करने की प्रचण्ड शक्ति जिज्ञासु जन प्राप्त करने की सत्पात्रता ले सकते हैं। गातत्री वह जो गाई जा सके तथा अपने चमत्कार दृष्टि गोचर करा सके। तेज स्वरूप भगवान से सुबुद्धि की प्रार्थना करके जीवन का निचोड़ दे डाला है। मन्त्र में अक्षरों का गूंथन, स्वर शास्त्र की विशेष प्रक्रिया का सन्देश है। इस महामन्त्र को गा सकने वाले, भावावेश में नाचने भी लगते है। यह तो प्राप्ति का विषय है, कोई व्याख्या करे तो क्या, गुड़ कैसा होता है, इसका वर्णन कोई क्या कर सकता है जब उसे जिह्वा पर लेता है, सुमति का वरदान कोई बताए तो क्या, अमल में लाकर कर्त्ता द्रष्टा को प्रह्लाद दे पाता यह तो नशा लेने की बात है : सर्प को संगीत शास्त्र का ज्ञान तो होता नहीं, पर वीणा के वाद से लहरें जूं जूं निकलती है तूं तूं सर्प लय में बद्ध, वीणा के आगे झूमता रहता है। बहेलिये मधुर वादन से हिरणों को बिना रस्सी के खड़े कर लेते है।

मधुर तानें स्वयं में प्रभाव सजाए होती है : जिससे बच्चे भी भावों में गुम हो जाते हैं, ठीक इसी तरह पवित्र अन्तःकरण से सविता देव भर्गों देवस्य धीमहि का प्रवाह लेकर, पुजारी स्वयं में आनन्दित होता है, तथा दूसरों पर कृतज्ञता कर पाता है, यही इस मन्त्र की असीम शक्ति का प्रमाण है। इसी ज्योति का अन्तःलोक में उतारना मात्र ही उपासना है। जिसके अवतरण से सविता देवता का ध्यान आवश्यक है। व्याख्या तो दोहराना मात्र है पर साक्षात् कर लेना शुद्ध भावों का प्रवाह, कण-कण में व्याप्त प्रकाश को प्रभा को प्रज्वलित करना, अपने तथा अपने वातावरण को अभिव्यक्त करना प्रयोग का विषय है जो आजमा ले वह महामन्त्र को विभूति से सुशोभित हो जाए। यही सारांश मेरी इस भेंट का है : तमसो मा ज्योतिर्गमय की प्रार्थना ही इसकी समुच्चय शक्ति का पुन्ज मात्र है : जब कोई मन में अलंकृत हो उठेगा, वह स्वयं कह उठेगा, 'पा लिया पा लिया' सारी व्याख्याएं उसके सामने हेच होंगी। संसार ही बुद्धिपूर्वक संसार में बुद्धिमान हो जाना एक अनुपम पदवी है, जिसका दाता महान् सखा है। जीवन लाभ यही है, पुण्य यही है, तीर्थ यही है, स्वर्ग यही है, ऋग्वेद में यही तो कहा गया है।

'न हिते शर राक्षसो अन्तं विन्दामि सत्रान्दशस्या नो मघवन नू णिद अग्निवोदियां वाजेमि राखियः।

हे शूर सचमुच ही तेरे ऐश्वर्यों का अन्त मैं नहीं पा सकता ऐश्वर्य वाले हमें अवश्य ही तू प्रदान कर, ज्ञानों और बालों द्वारा हमारी बुद्धियों कर्मों की हे वज्र वाले तू रक्षा कर !

अलख निरंज दुख भंजन भक्षमदेहि।

भेंट १४ (क)

वर्णन तत वरेण्य के

गायत्री मन्त्र महान परमपिता वरेण्य के उपकारों का वर्णन करती करती स्वयं भी अनेक स्थानों, अनेक रूपों में वर्णित हो कर यशलाभ प्राप्त कर चुकी है। अखण्ड ज्योति अप्रैल १९७६ के अनुसार इस महामन्त्र का जिक्र ऋगवेद में ६।६२।१० साम-वेद में २।८।१२ यजुर्वेद में ३।३५. २२।९, ३०।२, ३६।३ अथ-र्वेद में १९- -१-१ में विस्तार पूर्वक मिलता है। ब्रह्मण ग्रन्थों में गायत्री मन्त्र का उल्लेख स्थान स्थान पर मिलता है। यथा एतरेय ब्रह्माण ४।३२।२, ५।६-१३।८, १९।८ कौशतकी ब्राह्मण २३।३, २६।१०, गौपय ब्राह्मण १।१।३४ दैवत ब्राह्मण ३।२५ शतपथ ब्राह्मण २।३।४।३९, २३।६।२।९, १४।९।३।१२, तैत-रीय में सं. १।५।६।४, ४।१।११।१ मैत्रायणी सं. में ४।१०।३ तथा १४९।१४ में मिलता है। आरण्यकों में इस महामन्त्र का उल्लेख-तैतरीय आख्यक १।११।२१०।२७।१ वृहदारण्यक ६।३। ११।४।८ में विद्यमान है। उपनिषदों में भी नारायण उपनिषद १५-२, मैत्री उपनिषद ६।२।३४ जैमनिउपनिषद ४।२८।८ श्वोताश्वर उपनिषद ४।१८, इसी प्रकार सूत्र ग्रन्थों में भी अनेक प्रसंगों में विवेचन प्राप्त है। सार की बात एक, कि महामन्त्र

अपने में ही बुद्धि प्रज्ञा प्रकाश वाहक है, इसलिए कोई सदग्रन्थ इसके बिना तालाब बिना जल की उपमा के अनुरूप है।

"सृष्टि के हर रंग पर सम दृष्टि है पालक पिता की,
हो रही अनुदान वर्षा है कमी बस पात्रता की"।
(डा० हरगोबिन्द सिंह)

प्रज्ञा शक्ति मनुष्य को आत्मिक दृष्टि से सुविकसित तथा सुव्यवस्थित बनाती है। और प्रज्ञा वरदायिनी मन्त्र है तो यही हैं, यही महामन्त्र स्मृति, धृति, बुद्धि, जरा, पुष्टि, तुष्ठि, कान्ति, शान्ति विद्या लक्ष्मी गति, कीर्ति मेघा देने वाली है। इसे ही उषसी, गायत्री सावित्री, सरस्वती, पृथ्वी, प्रजा, कौशिकी, जिसे वेद माता भी कहते हैं। प्रज्ञा ही बस पवित्र वरदान है जो मानव में सत असत का भेद निखरी बुद्धि का विकास, प्रस्तुत करती है, अर्थात सर्वगुण सम्पन्न, दिव्य शक्तियों से आलोकित, यह मन्त्र जिसे क्या कहा नहीं जा सकता, क्या नाम दिया नहीं जा सकता, कितना विभूषित किया नहीं जा सकता, एवं जिसे प्रकाश मिल जाए, उसके लिए सूर्य भी है, जिसे ठण्डक प्राप्त हो सके, उसके लिए चांद भी है, जिस मस्तिषक की तीक्षणता, चतुरता, सूझ-बूझ, स्मरण, क्षमता, दूरदर्शिता तथा विवेक, मिल सके, उसके लिए सर्वे सर्वा भी है। इसीलिए पतित पावनी भी कह लेना, पतित तारणी, भक्तों का आश्रय, हृदय तरंग तथा परम पुनीत आर्शीवाद भी कहा जा सकता है। गायत्री का निवास मानव मस्तिष्क में है, देवताओं का निवास ब्रह्मरंध्र में बताते हैं, सैकड़ों दिव्य शक्तिों का केन्द्र होने के कारण, इसे शतदल कमल भी कह डाला गया है। ऋतम्भरा भूमा भी इसे कहा गया है, अध्यात्मिक क्षेत्र की बोधि तत्व इसे ही कहते हैं।

तपस्वियों का तप, ब्राह्मणों का ब्राह्मणत्व देने का गौरव इसे मिला है। ओज, शक्ति, बल, महिमा, क्रान्ति, तेज, पराक्रम प्रकाश, ज्ञान, ऐश्वर्य, विकास, सहनशक्ति, जय कीर्ति, स्थिरता प्रतिष्ठा, लक्ष्मी, विज्ञान, प्रतिभा, मति इत्यादि रूपणी यह सकल जगत संचालिका, सर्वहितकारी, सदप्रेरणा का वरदान देकर यह जगत जननी, सब काल, सब देश में कीर्तिमान हुई है। इसे महामन्त्र का पद मिला ही इसलिए क्योंकि सारी गति मति की कुंजी इसी मन्त्र में व्यवस्थित है। सूर्य हजारों किरणों से सुशोभित कीर्ति स्तम्भ है, ठीक उसी तरह जिसे इस मन्त्र के जप बल से जो सुमति मिल गई, वही उसके लिए प्रकाश पुन्ज बन गया।

"जिसने 'जग के मंगल' को अपना जीवन व्रत मान लिया,
'परिव्याप्त विश्व के कण कण में' भगवान' तथ्य को पहचानलिया
उस आत्मा का सौभाग्य अटल है वह ही 'प्रभु की प्रणीता'।
है उसका हर आंसू 'रामायण' प्रत्येक कर्म ही गीता है।
(माया वर्मा)"

तभी कहा कि मण्त्र अपने में हा वरेण्य का वर्णन मात्र होकर अमर पद पा चुका है, बल लाभ कराने से महापराक्रमी, पौष्टिक होने से महापुष्टि, निर्मल, प्रखरता प्रदान करने वाली, कलेषों से मुक्त कराने वाली, ब्रह्म, तेजसयुक्त रूप दायिनी, अनेक गुणों से सम्पन्न, महाशक्ति कह कर, इसके स्तोता साधक स्वयं सुशोभित होकर जन कल्याण में, अग्रणी होकर एक उदाहरण व्यक्तितत्व तथा पुरुषत्व का मा

पा चुके हैं। आवश्यकता प्रत्येक की अपनी अपनी है, इस लिए जितनी जन संख्या गिनी जाए, जिसे जिस चिन्गारी से स्वः निर्माण का सौभाग्य मिल गया, वह ही इस महामन्त्र का वर्णन बन गया, चाहे भाषा कोई ही हो, वातावरण कुछ हो, एवं प्रत्येक का सूर्य-नृचक्षु उदीयभान हो जाना, प्रत्येक की अपनी गायत्री, अपनी प्राप्ति तथा अपनी ही सम्पन्न महाशक्ति है। प्रश्न नाम का नहीं, प्रश्न है लाभ-न्वित होने का। वरेण्यं के हैं वर्णन अनेक, कौन कहां प्रयोग में आता, कौन कहां सत्कृत कराता, यह अपनी जान पहचान का विषय है। इसलिए इतना भर कह सकना कि प्रत्येक वरेण्य की अवधि में समा सकता है, यदि उसे लौकिक आलौकिक अवसर बल रास्ता तथा सदप्रेरणा मिल जाए, जो किसी की नौकरी का प्रवन्ध करा दे, वह उसका अन्नदाता कहा जाता है, जो कोई किसी को किसी बन्धन से, कर्ज से, दुर्दशा से, छुटकारा दिला दे, वह उसके लिए प्राण दाता, संरक्षक की उपाधि ग्रहण करता है, जिज्ञासु जन को जब किसी महान आत्मा का दिव्य प्रकाश सन्मार्ग पर डाल दे, वह उसका गुरु, महात्मा तथा दिव्य पुरुष बन लेता है, ठीक इसी तरह जब अन्तरात्मा किसी के उदाहरण से, किसी की टिप से, शिक्षा से, उठ पड़ने की, उर्ध्वगामी होने की, सत्प्रेरणा लेता है वह सही अर्थ में गायत्री मां के वरदान से सुशोभित हो जाता है, अवसर का भी कोई अवसर नहीं, पुण्य आत्मा के सत्संग का भी कोई अमृतबेला नहीं, प्रत्येक अपने सत्पात्र होने, अपने कल्याण के लिए आशापूर्ण होने, अपने सौभाग्य को सत्कृत होने की निष्ठा वाला, किसी क्षण तमसो मां ज्योर्तिगमय के प्रताप का आर्शीवाद ले सकता है। वही क्षण

इस जगत माता से सुंस्कृत होने, गौरवशील होने तथा सुसज्जित होने की उषा से सौभाग्यवान होने की, गायत्री वर दायिनी का समागम है, पुण्य लाभ है, पुण्य बेला है, अमृत बेला है, तथा वरेण्यं से वरने योग्य होने का सत्य नियम है। मन्त्र के ऋषि ने आपत्ति व्यापक, देशकाल से दूर अवस्था व्यवस्था से बाहिर, एक तत्व विधान कर दिया -वे जिसका जी चाहे, यही इस वर्णन कीपराकाष्ठा है पुण्य भूमि है।

यह समय बहती नहीं है हाथ में आती नहीं है,
सामने हों भागती है दूर भी जाती नहीं है।
हर तृषातुर अंजलि को तृप्ति की सस्थावना है,
जिन्दगी जीवन कला और जीवन साधना है॥
(लाखनसिंह सौमित्र)

इसीलिए गायत्री को ही परमतत्व और गायत्री को परम-गति भी कहा है। यह केवल पथ प्रदर्शन ही नहीं करती, पथ पर डाल भी देती है, केवल संकेत नहीं करती, परन्तु साहस द्वारा धारणा की शक्ति भी देती है। जहां यह मन्त्र अपने में ज्ञान है, वहां कर्म भी है, जहां कर्म है, वहां कृत्कृत्य होने की रीति नीति भी है। बल से बल मिलता है, सन्तोष से तन्मयता जुटे रहने की सामर्थ्य, यही निजी अनुभव है, जो सहारा बना रहा। अन्धेरे में सवेरा बना रहा, अपने आप में स्थिरता देता रहा, तथा मुझ सा दीन साधक भी उभरता रहा, उबलता गया, जुटा रहा, लगा रहा, यही वरदान रहा कि मैं अधिक से अधिक

खिचा जाता रहा और आज इतना कुछ कह सकने की क्षमता प्राप्त करता रहा, कि यह अनुभव, यह प्रयोग, यह तर्ज जिंदगी में भीनी-भीनी सुगन्ध लेता रहा। अभीष्ट खींचता गया प्रमाण से समन्वित गायत्री सभी मन्त्रों में दुर्लभ है, इस छोटी सी जान ने छोटे से मन्त्र ने, असार संसार का सार, प्रस्तुत कर दिया, अनधिकृत को सत्कृत कर दिया, यही वर्णन है वरेण्यं का—संवाद का, प्राप्ति का विषय है इस भेंट का—यदि स्वीकार हो जाए।

अलख निरंजन दुख भंजन-भिक्षामदेहि।

भेंट १५ (क)

युगलों की बारात एवं आलौकिक रिश्ते

महा सुरभित मन्त्र में आलौकिक रिश्ते नाते बड़ी बारात लिए फिरते हैं। यथा 'सविता प्रचोदयात्' 'भर्गः देवस्य' 'धिया से धीमहि' 'यो व न' 'तत सविता' 'भूः भुवः स्वः' 'तत वरेण्यं,' 'ज्ञान व कर्म,' 'धीमहि व प्रचोदयात' एक से एक बढ़ कर शोभा-यात्रा का वरदान दे रहे हैं। यह नीति सारगर्भित तो है ही पर पारस्परिक सम्बन्ध द्वारा वीणा के एक स्वर, एक तार तथा एक लय का प्रतिपादन भी करते हैं। यह सुन्दरता वरमाला को शोभा बढ़ा रही है। भावों में समा जाने की क्षमता दे रही है। इन्ही रिश्तों की जांच करलें तो तथ्य और भी सामने चमित्कृत हो जाएगा, जिससे हमारी श्रद्धा का स्वागत होगा, प्रभाव का उदय होगा तथा सत्कृत होने का मार्ग मिलेगा।

भर्गः व देवस्य की जोड़ो—तिलक महाराज के जीवन की एक कथा आती है कि भादों के तीज का शुभ दिन था जब घर की सभी स्त्रियां अपने अभीष्ट की पूजा आरती हेतू व्यस्त थी, देखा देखी, घर की बेटियां भी माताओं को सहयोग देकर वातावरण की शोभा बढ़ा रही थीं, पर छोटे बच्चों को संत समागम से बाहिर कर दिया गया था। उन छोटे बच्चों में

तिलक जी का पोता भी था, देवियों ने चुनाचि उसे भी बाहिर कर दिया, यद्यपि उसने आग्रह किया, पर उसकी कोई न चली, परिणामतः वह दादा के पास गया और माताओं की शिकायत की। उस समय तिलक जी किसी विचार विमर्श में व्यस्त थे, उन्होंने बच्चे को आश्वासन देकर कि उसे प्रसाद चाहिए, वह उसे मिल जाएगा, और कहा कि पूजा में उसका भाग नहीं बनता बच्चा पूजा का अधिकार मांगते हुए दादी दीदी की तरह भागीदार होने की दलील देने लगा, पर तिलक जी ने तीज वाले दिन, देवियों की देवताओं से निजपति के सुख शान्ति की प्रार्थना का विधान है, इसलिए उसे शामिल न हो सकने का रास्ता दिया—पोता आखिर था तो मेधावान का, वह बोला उसे भी तो अच्छी पत्नी चाहिए, इसलिए उसे पूजा से वन्चित क्यों किया जाता है। तिलक महाराज बालक के उत्तर से प्रभावित हुए और बोले कि देवियों को पार्वती की तरह कड़ी तपस्या से अच्छे पति की इच्छा अत्यन्त उचित है, पर देवियां तो स्वभाव से साध्वी होती हैं इसलिए अच्छी पत्नि पाने का प्रश्न कम बनता है, साथ में बोले, अच्छी पत्नी पाने के लिए अपने को गुणी बनाना चाहिए, इसलिए तुम्हीं गुणों और चरित्रवान बनने की निष्ठा कर सकते हो। बच्चा बहुत प्रसन्न हुआ तथा बोला कि हम तो गुणों की पूजा करेंगे। गुणी बनना दिव्यता है, जो मेरे महानमन्त्र का महान विषय है: लक्ष है, अधिकार है, जिसके लिए सारा मन्त्र रचा गया। भर्गः वह तेजोमय सूर्य का रूप है, जिससे पाप धो डालने की सामर्थ्य है। साथ मे नाता जोड़ा देवस्य का अर्थात् सदगुण धारण करने का मल को साफ कर स्वच्छता को प्राप्त करना, भर्गो देवस्य की उपासना है। हमारे वेदों में स्थान-स्थान पर निष्पाप हों। जाने

की इच्छा, प्रार्थना, प्रयास एक ही महान कार्य है। साफ होते जाना, दिव्यता लेते जाना, एक गर्जना है, संकल्प है, कर्त्तव्य है, निष्ठा है तथा तल्लीनता का एकमात्र सौदा है जो किसी भी प्रकार बुरा नहीं कहा जा सकता। विश्वानिदेव वाले मन्त्र में हमारी यही साधना है। ऋग्वेद में तथा अन्य वेदों में, जगह-जगह, उत्तम गुण प्राप्त करने का इरादा, विभूतियों को बुलावा देना है। दोषों को हटा, सद्गुणों को उनका स्थान देना, अच्छे व्यक्तित्व की अनुभूति है। स्थान रिक्त न रहे, बुरे भावों को हटा, अच्छे भावों को बसा पाना, मानवता का परम ध्येय है, इसलिए यह जोड़ी जोड़ी मन्त्र के ऋषि ने। सभ्यता के निर्माण ने। कैसा हमारा पुराना मानव होता होगा, जो समष्टि रूप में बार-बार पुकार ही यही लगाता था, प्रार्थना भी यही करता था लक्ष भी यही अपनाता था गीत भी तो था।

हे दयामय हम सभी को शुद्धताई दीजिए,
दूर करके हर बुराई को भलाई दीजिए।
पूज्यनीय पिता हमारे भाव उज्ज्वल कीजिए,
छोड़ देवें छलकपट को मानसिक बल दीजिए॥

सब ओर से, सब नर-नारियों का, बाल-बच्चों का, गुरु छात्रों का, जान अनजान का, छोटे-बड़े का, एक अलाप चलता था, कि दोषों को दूर करो, सद्गुणी बनो। यही नैतिक जीवन का रहस्य था। उत्थान का डंका था, प्रगति का विषय था, अन्तरिक्ष का भी विधान था, कि मल ऊपर उठा लिए जाते, स्वच्छ वायु धरती पर ला दी जाती। सर्वव्यापक को यह रीति नीति, हम भी अपनाने अच्छे लगते थे एवं भर्गः देवस्य का रिश्ता, नाता जोड़ना, हमारी कला का सम्मान था।

जरा सृष्टि को तलाशा जाए, सृष्टि का कारण ढूंढ़ा जाए, सारी उथल-पुथल को पल्टा जाय, तो निष्कर्ष एक ही निकलेगा, कि सब आत्माएं परमात्मा का सम्पर्क प्राप्त कर, परमात्मवत् हो जाएं। दोषी निर्दोष, संकीर्ण विस्तीर्ण, मैले साफ, अशुद्ध शुद्ध होते चले जाएं, यही प्रक्रिया ही संसार का सार है, और हमारे मन्त्र का स्वर है। सकल प्राणीमात्र, अपने अपने जन्म के फलस्वरूप अपनी कक्षा में बँधे, भोग भोगते रहते हैं, इन सबमें से केवल मानव को सौभाग्य-महापराक्रम मिला, अन्धकार से प्रकाश में आने का, परमपिता से गुण प्राप्त करके गुणी हो जाने का, नर से नारायण होने का, दानव से देव होने का, जिसका तर्ज जिन्दगी बताया, भर्गः द्वारा देवस्य लाने का कितना महा-मन्त्र, कितना बड़ा उद्घाटन, कितना बड़ा राज, कितनी बड़ी करामात, कैसी व्यवस्था, इसीलिए इस गुण ने इस महामन्त्र को गौरव दिया, गुरुत्व दिया, संस्कृत किया, जिसके द्वारा हम सदगुणों की पिटारी भरते चले जाएं। प्रातः से सायं तक, सायं से प्रातः तक एक लगन, एक भजन, हे दयामय हम सभी को शुद्धताई दीजिए।

"मानवी जीवन हमारा यज्ञमय कर दो दयामय,
सृष्टि को सुरभित करें हम शक्ति भर वह दो दयामय।

भगवान ने धरती भर दी सुन्दर फूलों तथा वनस्पति से, और धरती पर खड़े कर दिए गुणी नर-नारी, फुलवाड़ियों के मध्य गुणी-जन काम-काज करते ऐसे नजर आएं जैसे भंवरे गूंज रहे हैं। पर भाग्य हमारे, गुणी लोग किसी भी धर्म तथा देश के प्रतिनिधि, वातावरण को सुशोभित करते हैं, चाहे वह अमीर है, चाहे फकीर, वह सारे मतमतान्तर में सर्वप्रिय हुआ करते हैं।

कहते हैं खिलाफत आन्दोलन के दिनों में देश भर में जलसे किए जा रहे थे। चुनाचि एक विराट् सभा इलाहाबाद भी नियोजित हुई। उसे सफल बनाने हेतू, महात्मा गांधी, मुहम्मदअली, मौ० आजाद तथा पण्डित मोतीलाल नेहरू इत्यादि का विचार विमर्श हुआ। इरादा था, कि अधिक से अधिक संख्या में नर-नारी सम्मिलित हों। प्रश्न यह पैदा हुआ कि मुस्लिम देवियां पर्दे में कहां और कैसे बिठाई जाए ताकि वह स्वेच्छा से विचार सुन सकें। सुझाव पेश हुए, श्री मुहम्मद अली ने राय दी कि वक्ता महोदय आंख पर पट्टी बांध कर बोलें ताकि देवियों को वक्ता को देखने व सुनने में संकोच न हो। जूं ही यह सुझाव हुआ महात्मा गांधी तो कहकहा मार कर हँस पड़े, यह कहते हुए कि यह तो वक्ता से मजाक बन जाएगा। विचार विमर्श के पश्चात् सभा नियोजित हुई, पर्दा वाली देवियों के लिए पर्दा लगा दिया, जिसके पीछे बैठने की व्यवस्था थी, सभा में जब भी मुहम्मदअली बोले वह सचमुच आंखों पर पट्टी बांध कर बोले! जब गांधी जी की बारी आयी, गांधी जी मंच पर बोलने खड़े हुए, निगाह नीची, सिर भी झुका हुआ, ताकि मन निर्विकल्प रहे। अभी गांधी जी खड़े ही हुए थे कि मुस्लिम देवियां पर्दा हटा कर मंच के सामने आ गईं। कमला नेहरू की माता बोल पड़ी—यह क्या ? आप लोगों के लिए तो पर्दा लगा था। पर उत्तर मिला भला पीर फकीरों से भी पर्दा किया जाता है ? सभा बड़ी सफलतापूर्ण रही। गुणों के गुंचे खिलते थे, हमारे मध्य ध्यान भी भगवान का, मान देश का, अभिमान सभ्यता का, भर्गः अर्थात् पापों को नष्ट करने वाली किरणें, शुभ गुणों की अधिक चमत्कार देती हुई, उल्लास तथा हर्ष बिखेरती थीं। इस प्रसाद के सत्पात्र जहां बैठते, बोलते, निहारते, ऐसा लगता

भगवान बीच में बैठा हो। राम भगवान् को क्या चुम्बक था। था तो यह सारा खेल एक परिवार का। परिवारों में ऐसे भेद-भाव प्रायः हुआ करते हैं पर रामायण क्या बनी कि एक परिवार भर की कहानी, उच्च नियमों की जवानी ऐसी विस्तृत हुई मस्तानी, कि देश भर की बन गई जबानी जो अतीत की शुभ-बानी, शुभ सन्देश वाहिनी, हमारे स्वर्ण युग की एक निशानी बन गई। गुण गुणी की तरह निराकार है पर जहां सत्कृत होते हैं, उसी गुणीजन को साकार बनाकर धरती पर भगवान के दर्शन करा देते हैं। यह महामन्त्र इन दो नियमों का जोड़, एक आर्दश तथा प्रताप अनेक भारतीय जनता के जीवन का प्रतीक दृष्टान्त बन पाया है। और तो और, गुणी आत्माओं का वर्णन, रामायण का पाठ, मीठी वाणी में प्रस्तुत, ऐसा चलता है जैसे नया खून उबल-उबल कर नया आलोक दिखाई दे रहा है। भर्गः देवस्य का चुम्बकीय रिश्ता नाता, आत्मा को अमृत्व देने वाला, गदगद कर देने वाला, ऐसे दृश्य बना पाए, जैसे उपवन में भंवरे का भ्रमण, डाली डाली फूल फूल से मधु एकत्र करना, मधुपान मधु खान, अमृत के घूंट, मानव जीवन की सुन्दर वाटिका, उपस्थित करने में प्रत्येक व्यक्ति संलग्न तथा व्यस्त नजर आए।

जिज्ञासु लोग वेद के छोटे-छोटे सूक्तों द्वारा पाप रहित होने, मुक्त होने की रीति से सफलता पाते हैं। वेदों का आदेश हमारा प्राण वाहक बने, यथा 'वि पृछो नुदस्व'-- हे मानव तू अपने चित को सब दोषों से दूर कर। मानव की पुकार 'अपैतु सर्व-मत पापम' (अथर्ववेद) हे परमात्मन, मेरे समस्त पाप मुझ से दूर हो जाएं। यह साक्षात भिक्षा, संकल्प, व्रत साधना, जीवन

का उपहार बन जाए तो फल भी निकले। व्यर्थ में तो वेद भगवान ने भर्गः देवस्य के आदेश, मानव चिन्तन को सुसज्जित करने हेतू नहीं कह दिए हैं। ताकि क्रियात्मिक जीवन ही धरती पर स्वर्ग की निशानी बन सके। यही रूप रेखा होगी वास्तव में भर्गः की सार्थकता देवस्य के समावेश से -- ऐसा लेख मैंने १६७६ में युगशक्ति गायत्री में पढ़ा था, जो मेरे दिमाग में घर किए हुए था, जिसे प्रस्तुत करके हलका होने जा रहा हूं। यदि अत्यन्त संक्षेप में पूछा जाए, गायत्री के अर्थ का प्रश्न किया जाए, तात्पर्य जाना जाए, तो इन्हीं दो शब्दों के जोड़ में सार समाहित किया गया है। संसार की चाल भी यही हो सकता है, सृष्टि का प्रयोजन ही हो सकता है, लाभ भी यही, लावण्य भी यही, कि दोष भागते जाएं, सद्गुण उनका स्थान लेते जाएं। इससे भिन्न सुन्दर उपमा बनती ही नहीं। वास्तविकता भी यही है, क्रम भी सही है, उचित भी है योग्य भी है, सर्वगुणी भगवान् का अवतरण भी है, मानव का, मानवता का प्रदर्शन भी है, सारे चक्र का तथ्य भी है, जीवों का जीवों से उपकार भी है, सारे देवताओं का सत्कार भी है, एकमात्र प्रयोजन अत्यन्त लाभदायक भी हैं, अमरीका के ऋषि इमर्सन ने योग्य ही तो कह दिया था कि वहसारी सम्पति बेच बिचा कर वहां जा रहेंगे, जहां सद्पुरुष पुण्य वचन, सगुण जीवन, सुन्दर गति वाले रहते हैं। भले इन दो शब्द के सन्तुलन को तोल लीजिए, रत्ती भी यही कहेगी, टन भी यही उचरेगा कि अशुभ छोड़ दें, शुभ लें, पाप दें, गुण प्राप्त करलें, गणित की भाषा में अपने ही देश का रूप इन दो शब्दों के तोल में देखें तो धरती पैरों से खिसकना चाहती है, जहां प्रतिदिन ४४०० जुर्म सरजद किए जाते हैं। सरजद ही नहीं, केवल दर्ज किए जातें हैं, इससे

दुगने में अज कम तो यू टाल दिए जाते हैं, पिछले दो वर्षों में ३५००० अपराधी जेलों से भाग गए, परिणामत: ४० प्रतिशत कत्ल व डाके, बिना लेखा-जोखा के, दाखिल हुए, देहली में ही केवल ३६८४ नामी ग्रामी अपराधी कैद ही नहीं हो सके, किसी हजारी नेता की सरप्रस्ती में पकड़-धकड़ से दूर रहे केवल १६८० में चार लाख कत्ल देहली के भाग्य में आए अब यदि पाप की यह प्रवृति तोली मापी जाए, एक अपराध को कितने व्यक्तियों से सम्बद्ध किया जाए। हजारों की संख्या लाखों की कक्षा में जा बंधती है। देश का, जाति का, कितनी हानि का, विवरण बनता है, मालूम नहीं यह सब पढ़ने को सामर्थ्य दे पाएगी, आंखें मस्तिषक, यह आंकड़े समा सकेगा कि नहीं, यह सब भविष्य के गर्भ में समाता जा रहा है। मूल कारण वही, रहस्य वही, दोषों की फसल आबाद हुई, अनेकों की शान्ति बरबाद हुई, वातावरण बिगड़ा जनगण उखड़ा, क्या से क्या हो रहा है। अब तो अनुमान भी आंखें मूंद के पर्दा कर लेना चाहता है। बड़ा भद्र समय था जब निर्विघ्न राजपाट था, अमन अमान था, निरुपद्रव साजो सामान था, भर्ग देवस्य का मान था, अब तो कल्पना ही नहीं बनाए बनती बड़ा अच्छा समय था, जब प्रत्येक बच्चा गाया करता 'मैं तो अच्छा लड़का बनूंगा', 'माता पिता की सेवा करूंगा' इत्यादि इत्यादि। दैनिक पत्र निकले शुभ-शुभ का सन्देश पहुचाने, ताकि प्रसन्नता हो, स्वराज्य की चर्चा हो, अब रह गए यह पत्र अपराधों की सूचि देने, आंकड़े देने, डराने, घबराने, दुखी करने। सच पूछा जाए, तो गुरु है यही दो शब्दों की जोड़ी। गुरु मन्त्र का गौरव यही दो शब्दों का सहयोग, गुरुमन्त्र का गुरुतत्व इन दो शब्दों का ओत-प्रोत साक्षात ग्रह उपग्रह बना रहे हैं। मंगलमय सत्यस्वरूप की

ध्वजा फहरा रहे हैं, शुभ बोल बोल रहे, वायु भी इन बोलों को समर्थन साएं-साएं कर रही हं, जल में कलरव से भीनि-भीनि महक भी फैल रही है, शुभ-शुभ वातावरण बनाने हेतू महाराजधिराज की जय-जय हेतू। सारे ससार में यही नाद अपितु सिंह नाद. मन्दिर-मन्दिर का एक घडियाल एक ताल, सारी घड़ियों का एक पैण्डुलम, एक आवाज दे कि दोष छोड़ते जाओ गुण लेते जाओ, इस महान बाजार का एक सौदा बनाते जाओ, बढ़ाते जाओ, भर्ग देवस्य की फुंहार चलाते जाओ ताकि महक-महक बूंद-बूंद एक-एक करके गिरती जाए, एक समुद्र भरती जाए जहां परिणामत: सागर बलेबले ले, सुख शान्ति का अमन अमान का, चैन का तथा परमपिता के प्रसाद का।

अलख निरंजन दुख भंजन भिक्षामदेहि।

भेंट १५ (ख)

मन्त्र के दो ध्रुव सविता व प्रयोदयात्

शाश्वत शक्ति तुम्ही सविता की, जीवन ज्योर्तिमय बनाती,
देती हो सद्बुद्धि तुम्हीं मां और तुम्हीं सन्मार्ग दिखाती।

सूर्य जिस शक्ति से सारी सृष्टि को जीवन चेतना प्रदान करता है, उस शक्ति का नाम [सविता है। अहोभाग्य हमारी वैदिक भाषा के, सूर्य एक है, अत्यन्त प्रकाश पुन्ज, महापिण्ड, पर इसके भी नाम अनेक, अनेक रूप, अनेक अलंकार, आदित्य भी इसे कहा, रवि भी, भास्कर भी सविता भी, भर्गः भी, सावित्री भो, मरीचि भी, विराट भी, सम्राट भी। भारतीय धर्म और अध्यातम का सारा महल विज्ञान के बलबोते पर खड़ा है, सूर्य, सविता देवता का स्थूल रूप है। सृष्टि भर की जिन्दगी, चेतना की चिनगारी सविता देव से जन्म लेती है यह तथ्य जरा समझने की बात है—सविता देव से हमें उत्सुकता मिलती है. उसका अनुभव, प्रातःकाल, प्रभात बेला में ऊषाकालीन समय में, जब हम सन्ध्योपासना में बैठते हैं, सविता का ध्यान स्वयं में विज्ञान का एक श्री गणेश बनाता है। समस्त सृष्टि को सूर्य भगवान से जीवन चेतना प्राप्त होती हैं, यह भावना उस समय की अनुभूति, अपने में स्फुर्ण, अपने में एक चिन्गारी, सविता शब्द सविता रूप, सूर्य की उपासना, इस महादेव की पूजा, उस

की आरती, अपने में उसका, उसके इस रूप का, इस शक्ति का ध्यान, अपने सविता को प्रणाम करना, निद्रा से जागते हुए इसी महाशक्ति में पुनर्वास लेना, अपने को घिरा हुआ पाना है, सविता भगवान का सान्ध्यि है। यह राज है, जहां से हमारा जहान प्रातःकाल से जीवन लेता है। उस शक्तिशाली महापिण्ड की इस चेतनामयी, सर्व समर्थ सर्वव्यापक स्थिति का अनुभव अपने पर उपकार करना, नवजीवन का प्रतीक बनना, बना लेना, एक आर्दश बनाना है, जिसके आधार पर हमारी जदो-जहद का शुरूआत, नए उल्लास का वरदान प्राप्त करना है। चेतना मात्र मुझ में एक आकांक्षा भर रही है। नयापन, नया आयाम, नया प्राण, भगवान का नया आदेश, नियामक का निराला नियम, सविता शक्ति का सोपान करना है। यह एक मर्म है जिसके कारण सूर्य के सविता रूप शब्द की लपेट में, मन्त्र के आरम्भ में, पुरो देना एक रहस्योदघाटन है। अधिक व्याख्यान सही, चेतना दायनी शक्ति का संचार, अपनी नस नाड़ियों में प्राप्त करना, मन्त्र से सत्कृत होना है। जो महापुण्य है, अत्यन्त लाभकारी है, कृतज्ञता है, जो जितना इस शक्ति का बसाऊ करेगा, स्वयं में, पुण्य अर्थ पूर्ण मन्त्र की पूजा का लाभ उठाना। माचिस पर अर्णि ताली लगाई जाती है प्रकाश भी अग्नि भी प्रकट की जाती है, इसी तरह अन्तःकरण में, जागृति का साधन सविता देवता के उदयमात्र से प्रेरणा ली जा सकती है। अध्यातम प्रयोगशाला का यह एक स्वर्णमय बोध, जीवन ज्योति से आलोकित होना, सविता शब्द से अलंकृत होना, सत्पात्र का पहला पाठ है। इस माता का ध्यान, सूर्य मण्डल मध्यास्था की अवस्था में आरम्भ करना, एक अपने लिए नया मण्डल खड़ा करना है। उत्पन्न तथा प्रेरणा गुणों के कारण,

सविता शब्द को प्रथम स्थान देकर मानव प्रगति की प्रथम सीढ़ी लगाना है। जो सारे मन्त्र की नाभि रूप स्थिति है। गायत्री को एक प्रकार से सूर्य का मन्त्र भी कहते हैं। गायत्री का देवता ही सूर्य है। सूर्य जैसी आभा, प्रकाश, प्रभाव ऊर्जा दाता, पतित पावनी, पवित्र करने वाली तमन्ना शक्ति की उपासना, गायत्री माता के जाप व ध्यान का विषय बनता है। सन्मार्ग पर लाने वाली सन्ध्या हमारे लिए वन्दनीय तथा अराधनीय है। सुन्दरता इस सार में निहित है कि विश्वभर की प्रेरक शक्ति परमात्मा से प्राप्त गायत्री मां का वरदान एक बड़ा रहस्य जो हमारी सद्बुद्धि को उचित रूप देती, एक प्राण देवता मानी जा सकती है। सविता भी यही है जो प्रातःकालीन हमारी बुद्धियों को ठीक रास्ते पर डाल सकने में समर्थ, परउपकार कर्त्ता परम सत्य का उदबोधक होने से हमारी पूजा विधि की सामग्री का स्थान लेती है। इसे समझना उचित है।

प्रत्येक वैदिकमन्त्र का अपना देवता होता है। गायत्री महा-मन्त्र का देवता सविता है। अर्थात् उपासना के समय सूर्य के ध्यान की अवस्था में सूर्य की अदृश्य शक्तियों, किरणों को, ध्यान में लाकर, वैज्ञानिकों के कथानुसार इन किरणों को अपने अन्दर धारण करके, अपने भीतर लौकिक पारलौकिक शक्तियों से सत्कृत होना ही गायत्री उपासना है। हमारी अन्धकारपूर्ण स्थिति, ज्योति में आलोकित होकर, हमारी मनश्चेता को प्रकाशयुक्त कर देती है, यही गायत्री जाप है। उच्च आदर्श की कल्पना, भगवान् की आभा से प्रभावित हो जाना, अपने में एक चमत्कार को प्राप्त करना है।

सिन्केलयर लेखक का यह कहना है, कि प्रत्येक का मस्तिष्क एक शक्ति सम्पन्न मानसिक वायरलैस सैट है, इन भावों से उद्बुध उस परम शुद्ध चेतना से विकरण होना, स्वयं ज्योतिष्मान होना ही गायत्री लाभ है। प्रातःकालीन सूर्य की झलक मात्र से पृथ्वी पर वनस्पति जगत, पशु पक्षियों में कोलाहल मच जाता है, ऐसे ही गायत्री उपासक सविता की झलक मात्र सत्पात्र के जीवन में सत्प्रेरणा की दुंदुभि बज जाती है, अर्थात् शुभ शिवम् का समागम् बनना आरम्भ हो जाता है बस यही मोटे अर्थ में सविता की व्याख्या जीवन दायिनी बन पड़ती है, सच पूछा जाए तो सेना का मार्च दिव्यता का प्रादुर्भूत हो पड़ता है। यही सबसे बड़ा उपकार, बड़ा उपहार चल निकलता है। एक मित्र से बात चीत हो रही थी, वह कहने लगे, कि सूर्योदय लाल बर्ण का होने के कारण, असल सविता देव के दर्शन नहीं होते, इसलिए उपास्य देव की भ्रांति बनती है इसका उत्तर यह था कि सूर्योदय समय, धरती परिक्रमा करती हुई, तिरछी होने के कारण हमें सूर्य का लाल वर्ण दृष्टिगोचर होता है। सूर्य तो सविता सफेद वर्ण का है। हमें जिसे ध्यान में लाना है, वह सूर्य का वह स्वरूप जो उषाकाल में, सब अन्धकार को मिटाने वाला, प्रकाश युक्त किरणों वाला, वेधन करने वाला, पापमल को बेंध डालने वाला, ध्यान में लाना है। जो निखरा स्वरूप, हमारी प्रज्ञा बुद्धि को निर्मल करता हुआ दृष्टि में समा पाए। सविता देव के साथ प्रातः काल में, अपने आन्तरिक मन्त्रों वाले,

आरकेस्ट्रा को सैर करना है। जो शुद्ध लगन से दिन भर का सम्पर्क शोध लिया जाए ताकि मंगल सूत्र पूरे साजो समान से चलता रहे। अभ्यास से सविता देव तथा मानव प्रकृति बुद्धि का नाता रिश्ता पति पत्नी सा बन जाता है।

अब एक नया रूप भी देखने योग्य हैं। छान्दोग्य उपनिषद में सविता के मधु विद्या का विवेचन दिया गया है। भारतीय उपकारी विद्वानों ने इसके गुर्ण कर्म स्वभाव का प्रतिपादन करके सविता का अमृत रसपान करने का विवरण दिया है। आदित्य को देवताओं का मधु बताया गया है, उसी उपनिषद के एक मंत्र द्वारा यह कहा गया है कि ऊर्जस्य ही देवताओं का मधु है। द्यौ लोक ही वह तिरछा बांस है जिस पर यह मधु लटका है। आन्तरिक्ष एक छत्ता है किरणें मधुमक्खियां हैं। आध्यात्मिक दृष्टि से आदित्य सर्वव्यापी सविता ब्रह्म है। देवता उसे मधुकर मानते है सविता हो देवों का प्रसविता है, उससे ही मधुरस प्राप्त दिव्य शक्तियां बलवती होती हैं। आन्तरिक्ष सागर में जो चेतना का मधु भरा है, वही सविता है, हमारे अनुग्रहणीय ऋषि लोग वैज्ञानिक क्षमता से अति विकसित होने का दावा करते थे। यह भी कहा गया है कि ऊर्जाएं उसी आदित्य से रस प्राप्त करके प्रवाह बनाती है सविता सम्पर्क के प्रत्यक्ष दर्शन आत्म सत्ता का प्रसाद देता है। अति चेतन, जिसे अरविन्द घोष ने एक स्टेज करार देकर मानव की उच्चस्तरीय

अवस्था का वर्णन किया है वह इस गोपनीय शक्ति का सुन्दर सोपान देती है। गायत्री का उपास्थ सविता ब्रह्मचेतना है। यहां तक भी कहा है कि गायत्री चेतना को प्रार्दभुत वेदों से हुआ इसलिए गायत्री को वेदमाता की भी उपाधि प्राप्त हुई, अतः ऊर्जा ही वीर्य है, जिसके बलबोते हमारी सुमति जलती तथा जगमगाती है यह सब ज्ञान रूप सविता की किरणें हैं। सविता के इस अमृत का साक्षात कर लेना, इसका परख करना है, सविता को सामने रखकर समस्त चेतना का चित्र चित्रण, सक्रियता देती, अनुभूति प्रदान करती है। उपासक का वास्तविक जीवन शक्ति का उपहार देती, यही अर्थों में सविता की अराधना, सुमति की प्राप्ति तथा दिव्यता की उपलब्धि की रूप रेखा है जो पुण्य प्रभात बेला में समष्टि बलदाता बनती है। यही आदित्य का अध्यात्मिक रूप है जो र्स्वव्यापी चेतना द्वारा ब्रह्म की सब प्राणीमात्र में ओत प्रोत होने का अनुभव है। अणु व विराट को एकीकर होने का दर्शन ही सौभाग्य का विषय बनता है। ऐसे सविता के साक्षात्कार से मंत्र के ऋषि ने सत्प्रेरणा वरदान प्राप्त करने को साधना का कार्यक्रम बनाया, विधि विधान किया यदि यही पहलू समझ में बैठ जाए तो हम सौभाग्यशाली होंगे।

एक उपनिषद है जिसका नाम ही केनोपनिषद पड़ा, जिस का केवल मात्र कारण प्रश्नों की बूछाड़ से, क्या क्यों कैसे की

प्रश्नावली इस उपनिषद की रचना ले पाई। हम भले मान लेते हैं कि सविता देव चेतना प्रदान करते हैं पर कैसे यही तो सूर्य देवता, जो देवताओं में बृहस्पति का दर्जा रखते हैं, कैसे चेतना देते है, सृष्टि भर की प्रयोगशाला में अनुभव का विषय है, कि जूं ही सूर्योदय होता है, उसका प्रकाश ताप सबकी आंखें उधाड़ता, हलचल पैदा करता है, सूर्यास्त ही रात्रि अन्धकार-तम-थकावट-ऊबटन-निद्रा आराम ऐयाशी का वातावरण देती है। सूर्योदय से प्रकाश व ताप, वनस्पति जगत ने पत्ते पत्ते में फुस-फुस उत्पन्न करता, वायु को गति देता, पक्षियों में ध्वनि, मानव वर्ग में नींद के खुलने से गति की प्रगति बनाता है। सूर्य देव, अधिभौतिक जगत के संचालक ठहरे और सविता देव हमारे आन्तरिक जगत के बृहस्पति ठहरे, जिनकी कृपा से हम जीवन दायनी उथल-पुथल में लग जाते हैं। यही चेतना हमारी गतिशीलता की जान, प्राण तथा जिन्दगो बनती है, इसलिए यह देवता मन्त्र का उद्धारक नियत हुआ। जिस तरह सूर्य देव हमारी जदोजहद का प्रेरक करार हुआ उसी तरह सविता हमारी बुद्धियों का प्राण करार पाया यदि यह रूप इस देवता का समझ में बैठ जाए तो बड़ा उपकार हो जाए। सविता यह अनुदान भरा परमेश्वर है प्रातः कालीन सूर्य उसका प्रतीक है।

इस युगल का दूसरा जोड़ीदार प्रयोदयात ठहराया गया।

प्रेरणादायक जैसे प्रकाश व ताप जड़ जगत तक को उकसाता, हलचल देता है वैसे ही कार्यक्रम में लगने की प्रेरणा भी प्राप्त होती है अच्छी हो या बुरी, विना प्रेरणा के जीवन नहीं, वह तो मुर्दों का सा जीना भी न हुआ, इसलिए जिस ताप प्रकाश से हम गतिशील होते हैं वह बड़े रहस्य का विषय है। मन्त्र से शक्ति मिलती है। ओज कैसे मिलता है, यह हम किसी भिन्न भेंट में देख पाएगे, अभी तो यह धारणा बनानी है कि प्रेरणा स्वयं में एक जीवन है, कुंजी है, चाबी है इसलिए निद्रा का मारा व्यक्ति जागने पर सोच विचार, आहार व्यवहार, कर्म उपचार आदि का वरदाता बनता है, यही उसका बड़ा स्वभाव, जिंदगी का निशान, तथा प्राणों का प्रमाण बनता है इसलिए सार्वमौन कार्य सविता के सहारे सम्भाल पाना बड़े हित तथा उपकार का तथ्य करार पाता है। हमारे धर्म में गायत्री मां के वरदान का यही रहस्य, सारे जीवन पटल के उद्घाटन का श्री गणेश ठहरा। वह सचमुच वड़े सौभाग्यशाली हैं, जो प्रेरणा-दायक तत्व को अपना साक्षी बना कर, साथी बना कर, कर्म क्षेत्र में उतरते हैं, इस जोड़ी की सुन्दरता का चमत्कार यदि सोचा जाए तो प्राणी विस्मयपूर्ण हो जाता है, कि ऋषि ने मन्त्र के सिरे पर एक देवता-ज्ञान बिन्दु ज्ञान चक्र तथा दूसरे सिरे पर कर्म क्षेत्र कर्म, धर्म, तरजे अमल, गतिशीलता को संजोएकर मन्त्र को गूंथ डाला ज्ञान व कर्म के दो पंखों के मध्य का मानव

खड़ा कर डाला। एक ओर इतना महान देवता दूसरी ओर छोटा सा मानव, परन्तु संकल्प तथा सत्पात्रता, जिम्मेदारी तथा परीक्षा से समन्वित करके प्राणी को जीवन पटल पर अपना रोल खेलने को नियुक्त कर दिया। यही कार्यक्रम प्रति दिन का, यही अहोभाग्य हर रोज का, यही उत्तरदायित्व प्रति दिन का, निभाने के हेतु प्रावीमात्र जीवन धारण कर रहे हैं। यह ताना बाना इस मन्त्र का धड़कर प्राणीमात्र नदी नाम संयोग से प्रयोगशाला में उतरते हैं। सफल व विफल होने की महफल बनाते हैं, सौभाग्य तथा दुर्भाग्य की लड़ी पिरोते हैं, सुकर्म दुष्कर्म की यातायात चलाते हैं, स्वर्ग व नरक तैयार करते हैं।

नर व नारायण, देव व राक्षस की पदवी लेते हैं। संसार के नावक सृष्टि के संचालक नाटक के पात्र, खेल के मैदान के खिलाड़ी, अच्छे व बुरे की सूची तैयार करते हैं। सारी सृष्टि चलती मानव मात्र के सत्कर्मों तथा दुष्कर्मों की भुगतान की खातिर, सविता देव के सहयोगियों तथा विरोधियों की खातिर कमश-ए-अदालत में हाजरी व गैर हाजरी की खातिर, नम्बर लगवाने व कटवाने की खातिर जो प्रज्ञावान होते हैं वे किताब और जीवन को साथ-साथ पढ़ते हैं (लिन

यूटांग) इसलिए गायत्री मां को सम्बोधन करते डा० हरगोबिंद सिंह ने ठीक कहा था।

पतित पावनी भर्ग ज्योति से कर्मों के सब कलेष मिटाती,
देती हो सदबुद्धि मां और तुम्ही सन्मार्ग दिखाती।

लेकर तुमसे बन जाते हैं सभी देवता देने वाले, पाकर कृपा कटाक्ष तुम्हारा बनते योगिराज मतवाले।

अलख निरंजन दुःख भंजन भिक्षामदेहि।

भेंट १५ (घ)

यो, नः की शादी

यो व नः दो छोटे से शब्द, मन्त्र के ऋषि ने पास-पास रखकर इनका पारस्परिक जोड़ के बड़ा कमाल कर दिया है। छोटे से यह शब्द कितने सर्वव्यापी अर्थ का संकेत करते हैं कि सृष्टि ही सारी लपेट कर रख दी। 'यो' शब्द परमात्मा वाचक है, जिससे बुद्धि की याचना की गई है तथा नः का अर्थ है हमारी—यो शब्द उन तमाम बुद्धि, बल, दल, समूह, सम्भव, संयोग, कालानुसार योग्य उचित आवश्यक यथा चाहिए इन अर्थों में निर्दिष्ट है तथा 'ना' हम ठहरे हिन्दू, मुस्लमान, सिक्ख, ईसाई, बुद्ध जैन, हर मजहब हर मिल्लत हर सम्प्रदाय, हर जाति, हर प्रकार के व्यक्ति इस सूची में सारा संसार लिख लो।

कहते हैं किसी फकीर का पुराना कम्बल चुराया गया, उसने थाने में चोरी की रपट दर्ज कराई, गुमशुदा चीजों की सूची में फकीर ने तकिया, गद्दा, छाता, पजामा, कोट आदि का वर्णन कर दिया। संयोगवश चोर भी वहां खड़ा था, इतनी लम्बी लिस्ट देखकर चोर तो आग बगोला हो गया, और

गुस्से में कम्बल दारोगा के सामने फैंकते हुए कहने लगा, यही है वही सड़ा कम्बल, जिसके साथ यह झूठा फकीर झूठी लिस्ट दे रहा है। फकीर ने अपना कम्बल उठा लिया और लेकर चलने लगा, जिस पर दरोगा ने झूठी रिपोर्ट लिखाने के लिए उसे डाटा। गम्भीरतापूर्वक फकीर ने कहा यही कम्बल मेरे लिए सब कुछ है। इसी से तकिया, गद्दा, पजामा, छाता का काम लेता हूं। स्व: रामतीर्थ, यह दृष्टान्त देते हुए कहते थे कि जिनके लिए ईश्वर ही सब कुछ है, उसे एक ही में समस्त आकांक्षाओं की पूर्ति दिखाई पड़ती है। हमारा 'यो' अर्थात् जो शब्द भी इसी भाव का पर्यायवाची है—इस मन्त्र के सन्दर्भ में यो शब्द नो के अर्थ में जिनका जैसा, तथा जौनसा भगवान है, वह ही उनके लिए सब कुछ है। सांसारिक भाषा में भी भक्त के लिए भगवान, फ़कीर के लिए महान, अमीर के लिए ऐंठ, बलबान के लिए धौंस, डूबते के लिए तिनका, मौत के लिए सान्तवना, भूखे के लिए ग्रास, प्यासे के लिए एक बूंद ही सब कुछ है। ऐसे हर हाल में जो जो शब्द बहुत उत्साहवर्धक है ऋषि सूचि देता ही क्या? किसे-किसे गिनाता, मन्त्र का ढांचा बिगाड़ता, खलबली मचाता, इसलिए यो शब्द में ऐसी सूची घड़ दी, जो हर प्रयोग, हर समय, काम आ जाए। सारी आवश्यकताओं का एक केन्द्र, प्रभु नाम के साथ जोड़कर ऋषि ने सर्वव्यापक को बांध दिया है, यह कला, यह नुसखा, यह संकेत बहुत गम्भीरतापूर्ण, अभिव्यक्ति सारगर्भित है। इसका

तो ठिकाना ही नहीं, जो भी हम जहां, जब, जूं, जैसे हो सब रिश्ता डाल, हम की उपाधि से अलंकृत होकर पुण्य के भागीदार बनते हैं। इसलिए इन दो शब्दों को शादी नाम देकर अटूट रिश्ता, लम्बा नाता, सम्भावना नियत करके मन्त्र के सइज में भी फर्क नहीं आने दिया। अर्थ भी पसार दिया, प्रभाव भी बड़ा लिया, तथा सार्थकता भी कायम रखी। इन दो शब्दों के सम्बन्ध से यो ने नः पर बड़ा उपकार किया है तथा नः ने सृष्टि भर की करामात का ठेका ले लिया है। जहां हम संसार भर की अच्छाइयों के ग्राहक बनते हैं; वहां अच्छे चुनाव सत्पात्र भी बनते हैं। इससे अधिक सुन्दरता यह कि यो की अवधि न लगाकर हम अतीत में परोक्ष में, जो भी योग्य है, उसकी मांग से सत्कृत होने की विचारधारा से अपने विस्तार का प्रतीक लेते हैं, तथा विवेक व सत्पात्रता का नाता रिश्ता जोड़ते हैं। यो व नः अपना विस्तार स्वयं लेते हैं। यह एक और सौन्दर्य की बात है आत्मा का परमात्मा से प्रेम ही तक उपलब्धि है, जिसके लिए यह सारा नियोजन किया गया है। प्रेम वस्तुतः आदर्शों से किया जाता है, पदार्थों से नहीं, आत्मा की प्यास जिस उत्कृष्टता की होगी, उसी को परमेश्वर कह सकते हैं। कला भी, अनुभव भी, यो व नः की दौड़ धूप, अन्तरिक्ष में, प्राणीमात्र में, दूर से दूर समीप से समीप में देखी दिखाई जा सकती है। नः नामी भगत जिज्ञासु 'यो' की गोद में विस्तृत होते जाएं अपने को नः का

नामधारी, सौदा बनाते जायें, ग्राहक होते जाएं, बड़े ही सुचारू कला व्यापार व्यवहार है, जिसे संजोए लेना, हर प्राणी की अपनी सामर्थ्य का विषय है। कल्पना में दो शब्द की अवधि निर्धारित न करते हुए, श्रद्धापूर्वक यो का प्रसार पाने की उग्रता एक निराला व्यापार बन सकता है। हम केवल इन दो शब्दों को अपने भावों में ओत-प्रोत करें प्रार्थना समय यो की अनन्त परिभाषा, जहां भगवान में आस्था बढ़ाएगी, वहां अपने सामर्थ्य का माप-तोल भी करेगी, हम मांगने वाले वह देने वाला, इसकी प्रयोगशाला टकराव एक विचित्र लीला बनेगी। सविता यह अनुदान भरा परमेश्वर प्रातःकालीन सूर्य का प्रतीक अपना जोड़ एक सुन्दर कार्यक्रम का रूप ले पाता है। यही अनुभव जाप, भक्ति तथा शक्ति का लेखा-जोखा करार देगी। श्रद्धा का अर्थ है श्रेष्ठता से प्यार, उदार आत्मीयता सहृदय सेवा, सज्जनता भक्ति है, जो सचेतन परमेश्वर की भावात्मक पूजा पाठ का विषय बन सकती है, यो व नः को गूंथते जायें, लड़ी खड़ी हो जाएगी। आत्मा परमात्मा में लय हो जाने का रस अनुभव करेगी। कविवर टैगोर कहते थे कि तेरे में मेरा विश्वास मेरी शक्ति बनें, याचना नहीं, पदार्थ अपनी योग्यता स्वयं सिद्ध नहीं कर सकते। मनुष्य की बुद्धि ही उन्हें खोजती है, और काम में लाने योग्य बनाती है, पदार्थ की तुलना में चेतना का महत्व है, यही दोनों में चेतन अर्थात् यो व नः में लगाव मानव की प्रगति की करामात है, ब्रह्म विद्या इसी का विवेचन करती है, ऋतम्भरा प्रज्ञा, भूमा धी इसी प्रयोजन के लिए प्रयुक्त होते हैं। यो नः का सम्बन्ध सर्वकालीन, सर्वदेशीय

है, यही मनोरम कथा, सबके जीवन की शोभा बन सकती है, हमें वह वेदमन्त्र भी तो नहीं भूलता जिसके द्वारा हम उस वृत्रहन—विघ्नों के छिन्न-भिन्न करने वाले इन्द्र का आवाहन करते हैं, कि मैं और तू हम दोनों संयुक्त हो जाए तब तक जब तक पूर्ण प्राप्तियां न हो जायें, जिससे अदानी कभी त्याग करने वाले भी है, वज्र वाले है शूर, हमारा दान प्रतिदानों का अनुमोदन करें। विचार करके समझ जायें, निस्सन्देह परमेश्वर के दान बड़े कल्याणकारी हैं। रिश्ता नाता का यह अपूर्व दृष्टान्त कि उसके द्वारा प्रार्थी व रोगी, कल्पना द्वारा मिल पाते हैं, तथा उस महाधिराज, स्वास्थ प्रदान के सत्पात्र बनते हैं। कहते हैं कि एक वृद्ध पुरुष रात्रि के दो बजे से ४ बजे तक अपने कक्ष में नियत रोगी का ध्यान करके, सदूर बैठा हुआ भी, रोगी के पास न होने के बावजूद भी, अनेक रोग पीड़ितों के रोग निवारण में सिद्ध हो पाया है। कला भी होती होगी, जादू भी होता होगा पर यह तो साक्षात अनुभव यो व न का समर्थक प्रमाण दे रहा है कि हम जो भी कुछ प्राप्तव्य है से सम्मानित हो सकते हैं। यो व न को सर्वव्यापकता प्रदान करके मन्त्र के ऋषि ने कल्पना का रहस्य खोल कर बड़ा उपकार कर दिया है। केवल प्रश्न है तो यही कि कौन कहां और क्या का जिज्ञासु है।

इसके अतिरिक्त एक ओर से धिय: की बांध दूसरी और सत्प्रेरणा की बांध में यो न: ने झूला डाल दिया है—कोई साधक इन दो शब्दों को साक्षात् करके संसार की प्रत्येक शुभ अनुदान का भागीदार बनकर प्रेम व्यवहार में कुशलता का प्रकाश व वरदान का सौभाग्य प्राप्त कर सकता है। शब्द दो हैं पर

इनका संयोग, प्रयोजन, अनेक पर अनेक सृष्टि में लाए जा सकते हैं। मानव की सत्यात्रता देने की उदारता का वातावरण दिलो दिमाग में बिठा के जो देख ले वह गदगद हो जाए। इसी तरह यो और न के झूले में प्राणीमात्र सन्तुलन भी करले, निहाल भी हो जाए, मन्त्र की उपासना करले, आशीर्वाद ले ले, तथा प्रयोग पर प्रयोग का क्षेत्र बढ़ा ले, तथा एक नया संसार वसा ले। प्रेम का कोई पारावार नहीं, प्रेम की भी कोई व्याख्या नहीं, अराधना करने वाला अपने लिए न समझ सकता है, न ही जान सकता है, पर परम वन्दनीय की अथाह सूची में, जो वरने योग्य है, उस सबका, सत्प्रेरणा के अनुदान द्वारा जीवन भर को सम्मानित कर सकता है। इसकी कोई व्याख्या तथा वर्णन नहीं, केवल विश्वामय श्रद्धा द्वारा दो शब्दों की लड़ी में पिरोया जा सकता है। यही विचार सारे मन्त्र का चमत्कार भी है, विस्तार भी है, सार भी है, उपकार भी है तथा वास्तविकता में सरावोर हो जाने का उद्‌गार भी है, अन्तरिक्ष में यान बड़ी गति में चल लेते हैं, लोकलोकान्तर में घूम सकते हैं, आज के विज्ञान वाले युग में नए चित्र विचित्र खेल तमाशे दिखा सकते हैं, पर हम केवल दो शब्दों के मध्य, बिना हर्ज खर्च किए, बिना दौड़ धूप किए सब स्थान सब कल्याण का आनन्द लेने का अधिकार ले सकते हैं। यही धारणा स्वर्ग की सैर, सन्तोष की लहर तथा सत्कृत होने का क्षेत्र बनाती है।

भेंट १४ (ख)

वरेण्य के रूप अनेक

वरेण्यं के स्वरूप की एक नई परख यह कि जहां हम खड़े हैं वह इस पृथ्वी की सीमा है। प्रत्येक मनुष्य की अपनी यज्ञ-वेदि ही उसके लिए इस गोलाकार पृथ्वी की अन्तिम सीमा है : इस सम्पूर्ण भवन का नाभि स्थान ही यज्ञ केन्द्रीय वस्तु है। यज्ञ रूप से प्रभु समस्त संसार को जोड़े हुए हैं। वीर्य सोम इस महावीर्यशाली अश्व का वीर्य है, सब वाणियों का परम व्योम नित्य आधार एक रक्षा स्थान है। इस रहस्यमय आदेश को अपने तथा परमपिता को सम्बन्धित करने में बड़ा लाभ है।

वर्ल्ड एटलस आफ मिस्ट्रीज के लेखक फ्रांसिन्स हिथिंग ने अगणित प्रमाणो से ब्रह्माण्डव्यापी स्थिति का परिचय दिया है उनके अनुसार समुद्र के गहन अन्तराल में ऐसे महापाषाण खोजे गए हैं, जो पहाड़ों की सामान्य चट्टानों से सर्वदा भिन्न हैं। अटलांटिक महासागर की तलहटी में २५०० किलोमीटर लम्बे महापाषाण भी हैं जो सौरमण्डलीय पदार्थों के साथ पृथ्वी की सम्पदा को जोड़ते हैं। स्टोनहेज (सैल्सबरी-इंग्लैंड) का हैली स्टोन सूर्य मापक यन्त्र बना हुआ है वह २१ जून को सबसे लम्बे दिन सभी ओर से स्वप्रकाशित होता है। इसी तरह स्टैन्टन ड्रिपू की चट्टानें ब्रह्माण्ड का अनेक गृह नक्षत्रों की स्थिति का

परिचय कराती है। विराट देव की अद्‌भुतशाला तो बुद्धि की समझबूझ से बाहिर की बात है।

दृश्य की अपेक्षा अदृश्य कितना रहस्यमय है, उतना ही सामर्थ्यवान भी है, दोनों की तालमेल से उस सूत्रधार का परिचय, जो जगत नियंता सृष्टि का संचालक है, एक सर्वाधिक सौभाग्य का विषय बनता है। इसके थोड़े से विवरण विस्मय-पूर्ण है। भारत के पहले स्वतन्त्र संग्राम अर्थात् गदर वाले दिनों कैलोफोरनिया की नापाकाउंटी में कई दिन लगातार वर्षा हुई —वर्षा वाला पानी बहुत मीठा था, जो कई लोग एकत्र कर कुछ समय शरबत की तरह पीते रहे। कलामाराट नगर (फ्रांस) में एक बार ऐसी वर्षा हुई जिसे लाल रक्त से स्मर्ण किया जाता है। एविग्मान के निकट एक ठण्डे पानी का कुण्ड है जिसके समीप सोच्यु नदी बहती है, नदी के दूसरे तट पर एक अंजीर का सुन्दर वृक्ष है। यह देखा गया है कि मार्च में नदी का लैवल प्रति वर्ष अपने आप बढ़ता है, कमाल यह कि नदी का जल प्रवाह उल्टी दिशा में ऊंचाई पर अवस्थित अंजीर के पेड़ की ओर जाता है वृक्ष की जड़ों को छूता तथा लौट आता है। ऐसा खेल प्रति वर्ष नियत समय पर होता है, जिसे दर्शक देख दंग रह जाते हैं। कोरिया में कोयम नदी के किनारे एक पत्थर की चट्टान है। ६६० में चीन के राजा ने वहां के राज्य मन्त्री तथा सेना अधिकारियों को बन्दी बना लिया। वहां की ७१ रानियों ने आत्महत्या कर ली। उसके पश्चात १४०० वर्ष से वहां एक ही प्रकार के ७१ पौधे एक साथ उगते हैं और एक ही प्रकार के फूल खिलते हैं और उसी दिन नदी में गिर जाते हैं। किंवदन्ती के अनुसार अनीति का दृश्य दिखाने हेतु प्रकृति अपनी चेतना की आपसी तारतम्य सम्बन्धित ग्रन्थियों

को समझ पाना मानव के सौभाग्य का विषय बना हुआ है।

धरती पर अभी तक अपने यहां एक ही ब्लैक होल का पता मिला है, जहां पर जाकर कोई लौट नहीं पाया। साहसी वीरों ने बड़े यत्न किए, विमान भी गए, जहाज भी गए, पर जूँ ही वहां पहुंचे, फिर पता नहीं चलता, कि कहां गायब हो गए, उसका विस्तार पूर्वक लेख अखण्ड ज्योति नवम्बर ८१ में छपा था। पढ़ते ही विस्मयपूर्ण हो जाना पड़ता है कि वरेण्यं के रूप अनेक ही अनेक हैं।

यह सारे संकेत केवल सूची मात्र इसीलिए दे रहा हूँ ताकि वरेण्यं में हमारी श्रद्धा जागे तथा हमें उसके प्रताप तथा महिमा में नतमस्तक होने का सौभाग्य मिले यूं खाली वरेण्यं का का सम्बोधन उस महान सत्ता से मखौल करना है। यदि हम इस घटना चक्र को अपने दिलो दिमाग में बिठा पाएं ताकि सच्चे अर्थ में डूब जाना बन सके और हमारे यहां उसकी पावन ज्योति उदबुध हो सके।

वेदमंत्रों के अनुसार संसार का एक मात्र वरुण, इतना महान कि यह विशाल भूमि ही नहीं किन्तु इससे भी लाखों गुण द्युलोक भी, स्थूल दृश्य जगत ही नहीं, इससे प्रकाशमय संसार, दूरे अन्तः दूर भी, समीप भी, विलक्षण स्वरूप, अध्यात्मिक रूप से द्यौ का अधिष्ठाता, पार्थिव समुद्र की देखभाल करने वाला दूसरा अन्तरिक्ष समुद्र जल वाष्पमय पारावार उस वरुण की कोख के समान है। जहां इतने विशाल हैं, वहां बूंद में भी समाविष्ट है : स्थूल सूक्ष्म एक ही सत्ता में मिल जुल कर निज आभा को बढ़ा रहा है। परमपिता को हम सहज मे वरेण्यं कह कर अपनी श्रद्धा तथा आस्तिकता का दम भर लेते हैं पर वास्तव में 'वर्णन करने के योग्य' की उपाधि केवल अलंकारिक

हैं, वरेण्यं के वर, विस्तार, क्षमता, कुशलता, दया, प्रतिभा क्षण क्षण की विलक्षणता इतनी महान है कि जैसे पल पल का लेखा जोखा नहीं देखा जा सकता वैसे ही उसकी पल पल की महिमा, प्रतिबन्ध नहीं गिना जा सकता है। न कहा जा सकता है, न ही लेख बद्ध हो सकता है, यह तो एक सस्ता मात्र शब्द कि वह वरने के योग्य है, सहज मखौल ही है। यदि कोई जिज्ञासु प्रयास करे भी, वरेण्यं के स्वरूप बाँधने का, सम्भवतः संसार भर का कागज, स्याही खुट जाए पर वरेण्यं की रूप रेखा अधूरी रह जाए। क्योंकि हमारे मन्त्र में यह विभूति सम्पन्न शब्द सुशोभित है, इसलिए नैतिक मात्र, आदेश रूप चकाचौंध करने वाले लिख डालना उचित ही मान रहा हूं।

जन्म तो जन्म ठहरा, पुनर्जन्म का सत्य, प्रमाणों से भर रहा है। अमरीका के वर्जीनिया विश्वविद्याय के परामोहन विभाग के अध्यक्ष डा० इमन स्टिवेन्सन पिछले ३० वर्षों से इसी क्षेत्र में कार्य कर रहे हैं विगत दिनों वह भारत भी आए थे। एक नई बात जो उनसे सुनने को मिली, वह यह थी कि विस्तृत सर्वेक्षण से संसार के कुछ भौगोलिक क्षेत्रों का पता चला है, जहां पूर्वजन्म की स्मृतियों वाले बच्चे अपेक्षाकृत अधिक संख्या में जन्म लेते हैं यथा श्री लंका, उत्तर भारत, बर्मा, थाइलैंड, तुर्की, इन्डोनेशिया तथा उत्तर पश्चिमी अमरीका। ऐसा क्यों है फिर यह भी वरेण्यं के पल्ले पड़ गया है, मानवी सत्ता में सन्निहित महान सम्भावनाएं अपनी विस्तृत कहानी बना रही है। योगियों की सामर्थ्य भारत में तो अलौकिकता का विषय दे रही है। स्व० दयानन्द सरस्वती को कितनी बार नदी के ऊपर आसन लगा कर ध्यान करते हुए देखा गया, दारा शिकोह ने औलियो के जीवन वृतान्त में मियांमीर का उल्लेख किया है।

वह आवश्यकतानुसार कभी कभी लाहौर से प्रकाश मार्ग द्वारा 'हिजाद' जाते थे, वहां रात्रि व्यतीत करके पुनः सुर्योदय से पूर्व लाहौर वापिस लौट आते। चुम्बकत्व कई दृष्टियों से पदार्थ जगत पर छाया हुआ विशिष्ट अनुशासन है। धरती की भीतरी और बाहरी गतिविधियां उसी पर निर्भर हैं। अपनी धुरी पर घूमना, कक्षा में भ्रमण करना, अनायास नहीं होता, पृथ्वी एक विशाल चुम्बक है उत्तरी व दक्षिणी ध्र ुव उसके मध्य केन्द्र हैं, पिछले दिनों जो ज्वालामुखी पृथ्वी पर फटे हैं और उनके लावे में लोहे के कण बहकर जम गए हैं, उनमें चुम्बक के वह गुण विद्यमान है, जिनसे पृथ्वी के ६००००००० वर्षों के चुम्बकीय इतिहास का ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। अरस्तु का कहना था कि इस मेरु प्रकाश को देखकर आकाश में विलक्षण प्राकृतियां खाईयां और भीषण अन्तराल लाल लाल रंग की दूर तक फैली चादर किसी इन्द्र-जाल से कम नहीं लगती थी। वैज्ञानिकों का कहना है कि यह आलौकिक संरचना सूर्य के प्रति सूक्ष्म उत्सर्जित कणों इलैक्ट्रोन तथा प्रोटानों की गति से अनायास परिवर्तन के फलस्वरूप यह अन्धी उड़ाने ले पाती हैं, सामान्यता यह कण १००० मील प्रति घण्टा की रफ्तार से चल पाते हैं। सूर्य द्वारा पृथ्वी पर बरसने वाले अनुदान का दृश्य रूप, ध्र ुवों का मेरु प्रकाश और अदृश्य रूप में बरसने वाले चुम्बकत्व है, दैवी कृपा तथा दैवी प्रकोप तो वरेण्यं की बोलती तस्वीर है। पोर्टलैण्ड में एक आठ वर्षीय बालक एक सड़क कूटने वाले तीन टन भारी इंजन के नीचे आ गया और बुरी तरह कुचला जाने पर भी वह बच निकला। न्यूयार्क की पन्द्रह मील ऊंची इमारत से एक बार दो वर्ष का बालक गिर पड़ा, हड्डियों का कचूमर तो निकला, पर

वह जीवित रहा ही। एक वायुयान से कूदा पायलेट ६० घन्टे लगातार तैरता रहा आखिर किनारा पकड़ पाया। डा० टेलर ने अपने प्रयोगों द्वारा २२० डिग्री की गर्मी देर तक सहन करके दिखाई, २५० डिग्री का ताप भी १५ मिनट सहन कर सके यद्यपि १०० डिग्री गर्मी में पानी भाप बन कर उड़ जाता है। आयरिश स्वाधीनता के प्रर्वतक टेटेन्स मेकास्विनी ने जेल में अनशन किया और १२० रोज निराहार रहे। भारतीय स्वाधीनता के सेनानी यतीन्द्रनाथ ६९ दिन निराहार रहे और मौत का मुकाबला करते रहे। शरीर का क्या कहना—यह दिन रात १६० से १८० लाख किलोरी उष्मानित्य बाहिर करने का क्रम चलाता है। हमारा रक्त केवल दौड़ने का काम नहीं करता उसकी यह क्रिया हीटर भी कूलर भी दोनों काम करती है। वरेण्यं के यह भी विचित्र खेल हैं कि सख्त गर्म रेत, जहां पानी का निशान नहीं तरबूज को जन्म देती है, जन्म भी न निहायत मीठा, रसीला पानी सम्भाल देती है। खरबूजा लू में मीठापन बढ़ाता है, लोग झुलस रहे होते हैं और यह वेल फैल रही होती है, मीठी से मीठी बनती जाती तथा साफ से साफ गुदा होता जाता है। इलीची देखो तो छोटी सी गोली, छाल कांटेदार, भीतर का गुद्दा रेशम की तरह मुलायम ! उड़न तशतरियां तो अभी तक जानकारी की सूची में समा ही नहीं सकी—अज्ञान का अज्ञान ही हमारी चुप्पी साधने का हेतू बन रहा है। १९४२ में अमरीका के पश्चिमी तट पर मशीन के टुकड़े गिरे देखे गए, जब अधिक देखभाल हुई तो वैज्ञानिकों को यह जानकर विशेष आश्चर्य हुआ कि उन टूकड़ों की धातुओं में से एक भी धातु पृथ्वी पर नहीं पाई जाती। यह तनिक संकेत कल्पना के दरवाजे खटखटाता है, शेष चुप रह कर वरेण्यं के रूप अनेक की सूची भाग में जोड़

लेता है। वृक्षों के तने में प्रतिवर्ष एक पर्त वढ़ती है जिसे ट्रीविंग कहा जाता है। इन पर्तों से वृक्ष की आयु का पता लगाया जाता है। अमावस्या व पूर्णिमा को पृथ्वी पर पड़ने वाले सूर्य चन्द्र के प्रभाव से न केवल सागर में ज्वार भाटे आते हैं वरन पृथ्वी भी करीब नौ इंच फूलती और पिचक जाती है। संसार में विभिन्न समयों में जो भूकम्प आए हैं वह अधिकांश अमावस्या या पूर्णिमा के आस पास आए हैं। वनस्पति जगत में चन्द्रमा का वड़ा प्रभाव है। आयुर्वेद जड़ी बूटी का देवता चन्द्रमा को मान सोम की प्राप्ति का श्रेय चन्द्रमा को देते हैं। गणितज्ञ की घड़ी भी देखिए! चन्द्रमा पृथ्वी की परिक्रमा १२ दिन ७ घण्टे ४३ मिन्ट और १२ सैकिण्ड में पूरी कर लेता है। पृथ्वी अपनी धुरी पर २३ घण्टे ५६ मिन्ट ४६ सैकण्ड में घूम जाती है। सूर्य की परिक्रमा करते पृथ्वी एक सैकण्ड में १८।। मील की दूरी तय करती और अपनी धुरी पर १.३७ मील प्रति घण्टा को चाल से चल जाती है। अपनी पृथ्वी का ६७ प्रतिशत हिस्सा समुद्र से ढका हुआ है। दो प्रतिशत जल बर्फ के रूप में उत्तरी दक्षिणी ध्रुवों तथा ऊंचे पर्वत की चोटियों पर जमा रहती है। एक प्रतिशत खेती जंगल उद्योग धन्धों पर लगाया जाता है और पीने के काम आता है फिर भी बहुत बेकार चला जाता है जितना पानी बचता है उसका सातवां भाग नदियां समुद्रों में फैंक देती हैं। महानगरों में रहने वालों को ४० प्रतिशत ही स्वच्छ जल मिल पाता है। उद्योग पानी का वहुत अंश खपत करता है यथा एक लीटर पैट्रोल बनाने के लिए १० लीटर पानी फूंकना पड़ता है, एक किलो सब्जी पर ४० लीटर, एक किलो कागज पर १०० लीटर तथा एक टन सीमेन्ट के लिए ३५०० लीटर पानी जलाना पड़ता है। संकेत मापक लिखने का

ही संकल्प लेकर बैठा था, और ये पहले ही मैं कह चुका हूं कि वरेण्यं का वर्णन करना उससे खिलवाड़ करना है। अधिक परेशान करता हुआ हमारा शरीर एक अदभुत विलक्षण काया की माया है, जो प्रस्तुत करने जारहाहूं। जब वर्षा ऋतु आती है तो सूखे बीहड़ भी हरियाली से भर जाते हैं। ग्रीष्म ऋतु में जिनका कोई अस्तित्व दृष्टिगोचर नहीं होता, ऐसे दबे हुए बीज तथा सूखी जड़ इस प्रकार हरी भरी हो जाती है, मानो किसी चतुर माली ने प्रयत्न पूर्वक इस वनस्पति को सजाया हो। कुण्डलीनो साधना की सफलता को पावस का आगमन कह सकते हैं। मनुष्य शरीर एक विशाल उर्वर भूखण्ड कहा जा सकता है। इसमें एक से एक बहुमूल्य बीज दबे पड़े हैं। वर्षा न होने तक उनका अस्तित्व छिपा पड़ा रहता है किन्तु जैसे ही जागृत कुन्डलीनी का श्रावण बरसता है वैसे ही विशेषताओं और विभूतियोंकी सम्पदा अनायास ही अंकुरित और पल्लवित होने लगती है। रावण किसी शस्त्र से मर नहीं सकता था। क्योंकि उसकी नाभि में अमृत का कुण्ड था। उसे सुखाए बिना यह असुर वध सम्भव नहीं था ! यह भेद राम को विभीषण ने बताया। राम ने वह कुण्ड सुखाकर रावण मारा। यदि उसकी स्थिति को समझा जा सके तो प्रतीत होगा, कि अपने ही भीतर वह भण्डार भरा पड़ा है, जिसकी तलाश में जहां तहां भटकना पड़ता है। बताया गया है कि यह ब्राह्मी शक्ति है स्वर्ग से गंगा अवतरित होकर पृथ्वी पर आ गई थी और इस लोक को धन्य बनाया था ! इसी प्रकार यहां ब्राह्नी शक्ति सतपात्र साधकों की आत्मा सत्ता पर अवतरित होती है और इसे हर दृष्टि से सुसम्पन्न बनाती है। यह विश्व कर्म और कर्म फल के अकाट्य सिद्धान्त की धुरी पर परिभ्रमण कर रहा है। कर्म फल पर अविश्वास करना ही विश्व व्यवस्था पर ईश्वर पर अविश्वास करना है। यही है वह प्रमुख अवरोध जिस

चट्टान से टकरा कर आत्मिक प्रगति चूर-चूर होती रहती है। एक धड़कन एक मिनट के ७२ वें भाग में सैकिन्ड के पांच बटा छः भागों में सम्प न होती है। नवजात शिशु की प्रगति आवश्यकता के अनुरूप उन दिनों हृदय एक मिन्ट में १४० बार धड़कता है। ३ वर्ष के बच्चे का एक मिन्ट में १०० बार और युवा मनुष्य का मात्र ७२ बार धड़कता है। समर्थता की न्यूनाधिकता के अनुरूप धड़कन घटती बढ़ती रहती है। चूहे का हृदय ५०० बार चिड़ियों का २५० बार मुर्गी का २०० बार, खरगोश का ६५ बार, घोड़े का ५० बार और हाथी का ४० बार एक मिन्ट में धड़कता है। मनुष्य के शिशु और प्रौढ़ के बीच समर्थता वृद्धि के अनुपात से हृदय की धड़कन भी घटती जाती है।

बच्चों की श्वासगति २५ से ४० तक होती है। क्योंकि यह उनका विकास काल होता है। फेफड़ों में आंख से भी न दिखने वाली बहुत पतली वायु नलिकाएं बहती हैं। इन ४० नलिकाओं के मिलने से एक वायुकोष्ठ एयर सैक बनता है। यही सघन होकर फेफड़े का रूप लेते हैं। इनकी संख्या प्रायः १६०० होती है। इन्हें पूरी तरह फूलने का अवसर मिले तो वे समूचे शरीर से ५५ गुने विस्तार में फैल सकते हैं। कहना न होगा कि शक्ति प्राप्त करने और विषाकातता निकालने के अनुपात बढ़ जाएं तो उससे आरोग्य वृद्धि में अत्यधिक लाभ मिलेगा! २० से ३० घन इन्च हवा वह बार-बार भरते और शरीर की ताजगी प्रदान करते रहते हैं। प्रति मिन्ट के १७ बार के हिसाब से धौंकती धौंकते हैं। प्रत्येक गुर्दा प्रायः ४ इन्च लम्बा २५ इन्च चोड़ा और २ इंच मोटा होता है। जिस प्रकार फेफड़े सांस को साफ करते हैं उसी प्रकार जल अंश की सफाई इन गुर्दों के जिम्मे हैं। उसमें १० लाख से भी अधिक नलिकाएं होती हैं। इन सबको लम्बी कतार में रखा जाए तो वे ११० किलोमीटर लम्बी डोरी

बन जाएगी। एक घन्टे में गुर्दे इतना रक्त छानते हैं जिसका वजन शरीर के भार से दूना होता है। आमाश्य की प्रयोगशाला क्या-२ कौतुक रचती है। और क्या से क्या बना देती है। इसे किसी बाजीगरी की विलक्षण जादूगरी से कम नहीं समझा जा सकता। पर आंख कान जैसे अवयवों पर हुई कारीगरी तो अपनी विलक्षण संरचना से बुद्धि को चकित ही कर देती है। आंख जैसा कैमरा मनुष्य द्वारा कभी बन सकेगा, इसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती। कैमरों में नाभ्यान्तर फोकस लेन्स को बदला जा सके, ऐसे कैमरे कहीं नहीं बने :

किसी स्वस्थ हृष्ट पुष्ट युवक के शरीर में लगभग ६० हजार अरब कोशिकाएं होती हैं। इनमें से दस हजार अरब तो ऐसो ईकाइयां ही हैं, जो स्वचालन क्रिया को परिचालित करती है। जितनी जगह में "मैं कोशिका हूँ" छपा है उतनी जगह में औसत आकार की पचास हजार कोशिकाएं रखी जा सकती हैं। सच पूछा जाए तो कोशिका एक बड़ी झील है। उसे जीव दृश्य या प्रोटोप्लाजम की झील कह सकते हैं जीव चेतना को क्षीर सागर भी कहा जा सकता है, इन के चार मुंह हैं—डी० एन० ए० रूपी साढ़ी की पोड़ियों के चार योगिकाएं एडिनन, ग्वैनिन, साइटोमिन और थाइमिन लग जाने के कारण मासपेशियों के अतिरिक्त खिचाव में ऊर्जा खर्च होती है यह ऊर्जा मासपेसियों में रहने वाले, ब्लूकोनेट से मिलती है। यह तत्व मासपेशियों की क्रियाशीलता के समय आक्सीजन के साथ संयोग करता है और लैंक्टिक एसिड तथा कार्बन डाईआक्साइड गैसें बनाता है। इसीलिए शारीरिक श्रम में अधिक आक्सीजन खर्च होती है। जिसके लिए तेज सांस लेना जरूरी हो जाता है। तेज गति श्वांस प्रश्वास लेने पर कार्बनडाई आक्साईड तो सांस द्वारा बाहर चली जाती हैं, किन्तु लैक्टिक एसिड को ग्लोकोनेट में बदलने के लिए आक्सीजन की उतनी ही मात्रा में चाहिए जो

नहीं मिल पाती, मिलती भी है तो परिवर्तन की प्रक्रिया उस गति से नहीं चल पाती। परिणामतः तनाव उत्पन्न होने लगता है। भगवान को सृष्टि बहुत रहस्यपूर्ण है प्रत्येक रचना, कार्य-क्षमता गतिशीलता अपने-२ स्थान पर एक महिमावान की दुंदुभि हैं। जीवजन्तुओं में अतिन्द्रिय क्षमता, परिस्थितियों के साथ मनः स्थिति का तालमेल, यौगिक मनुष्य जो विलक्षणताओं की विभूतियों का भण्डार सिद्ध हो रहा है, मरणोतर जोवन की अनुभूति पर आधारित सौन्दर्य बोध, उपनिषदकारों की पुरानी पुकार 'ऊंचे उठने—प्रसुप्त को जगाओ, जो महान है, और आगे बढ़ो, धर्म विज्ञान और दर्शन का समन्वय, संस्कारों की महत्ता एवं उपयोग्यता, नियति के अन्तराल का सूक्ष्म प्रवेश, अध्यात्म, स्थूल से असंख्य गुण समर्थ सूक्ष्म, अति विलक्षण अचेतन की माया, मनोभावों का स्वास्थ्य पर प्रभाव, अन्तरिक्ष के प्रचण्ड ऊर्जा स्रोत, दिव्य अनुदानों का सुयोग्य, सौभाग्य, इत्यादि इत्यादि परम वरेण्यं, देव अधिदेव के एक से एक बढ़कर तथ्य प्रकाश में आकर मानवता पर बड़ा उपकार हो रहे हैं। वरेण्यं को जिस ओरसे,देखें —दांतों तले जबान दबाने की अवस्था है। वर्ष १९८२ में सात ग्रहण पड़ गए और वर्ष २२०६ तक यह सूरत फिर आएही न। महान गणितज्ञ, खगोल महामना, महिमावान ही जाने कि कभी, कुछ कमी कुछ की यह व्यवस्था क्यों और कैसी है। सारी प्रगति उस सर्व दृष्टा की अनुकम्पा सेसम्भव है इसलिए भी सारे प्रयास के लिए मूलमात्र भगवत कृपा का वरेण्यं की उपासना से प्रभान्वित होना, योग्य है, तथा परमावश्यक है। उसके आने के द्वार उसकी कृपा के अन्नत क्षण, यदि, सामंञ्यस में आ जाएं, तो जीवन को राह दें, वरना हानि ही हानि—वरेण्यं देव को साक्षात् रखकर मैं तो प्रतिदिन की दिनचर्या "दिव्य मन्दिर के दिव्य पिता —जीवन भर के एक सखा" के सम्बोधन से खोलता हूं।

अलख निरंजन दुख भंजन—भिक्षामदेहि।

भेंट १५ (क)

तत सविता

युगलों के जोड़ों में कुछ तो व्याख्या में आ गए, पर कुछ छोड़ इसलिए दिए हैं, ताकि दुहराव का दोष न लग जाए। धीमहि व प्रचोदयात की चर्चा अपने स्थान पर आ चुकी है, फिर भी, दो युग्म तत सविता कुछ अधिक विचार में आता है, यूँ तो सविता अपने स्थान पर व्याख्या में आया भी इसके अतिरिक्त सब प्राणियों में सब प्रकार के भावों को सविता उत्पन्न करती है उत्पन्न तथा प्रेरणा के कारण, सविता सम्मान के योग्य है सविता के तेज को सर्वश्रेष्ठ प्रकाश स्वरूप जान के, इसे अपने जीवन का पथ प्रदर्शक ध्यान में लाकर चारों ओर से घिरा देखकर, अपने को उत्साहित किया जाना उचित है। गायत्री का देवता ही सूर्य है। उस प्रकाशमय, प्रकाश पुन्ज का ध्यान स्वयं में ही आलोकित हो जाने का सौभाग्य लेना है। बुद्धि को सन्मार्ग पर लगाने वाला जो विराट दिव्यात्मा पुरुष है वही सत्य धर्म वाला ईश्वर रूप वन्दनीय सविता है गायत्री मंत्र में सर्वप्रथम इस शब्द का उल्लेख इसी दृष्टि से हुआ है कि साधक को प्रज्ञावान व शक्तिवान बनने के लिए, अधिक पुरुषाथ करना चाहिए। सूर्य सविता देवता का स्थूल प्रतीक है, सृष्टि के जीवन का अस्तित्व चेतना की क्रीडा सूर्य की उपस्थिति में होती है, जगत के कण कण में स्फुटता की फुस-

फुसाहट सूर्य सविता देवता की सत्ता से है। सूर्य जिस शक्ति से सारी सृष्टि को जीवन चेतना देता है, उस शक्ति का नाम ही सवितां है। आर्यों के लिए यह शब्द एक अन्य रूप में प्रायः प्रयोग में आता है हमारा छोटा सा चरण संकल्प प्रेरक यह भी तो है "दिन फेर पिता वर देर सविता—हम आर्य करे निज जीवन को" बड़े चाव और प्यार से गाया जाता है। यहां भी सूर्य की बजाए सविता शब्द लिखा गया है यह बार बार कहा गया है कि सूर्य सविता से भिन्न नहीं तथा न ही सविता सूर्य से पृथक है पर सविता शब्द प्रेरणादायक प्रातः कालीन सूर्य की वह शोभनीय प्रकृति, जिसकी ओर आंख उठाई जा सकती है, जिससे दृष्टि जोड़ी जा सकती है, जो रक्त वर्ण भी है, आंखें चुन्धयाने वाला नहीं, जिस पर टिकटिकी लगाई जा सकती है, जिस पर ध्यान जमाया जा सकता है, जो रमणीय भी है, लावण्यपूर्ण भी है, सबसे महान समय का वह ठण्डा-ठण्डा रूप, जिसे अपने में व्याप्त कर लेने की क्षमता बन सकती है, समय-कालीन उद्बुद्ध प्रदाता सविता नाम है। जिसे बोलने का संकल्प कर अपने जीवन में आर्यत्व ला देने की सामर्थ्य, शक्ति, उत्साह, साहस, को हम निमन्त्रण देते हैं। इसलिए तत सविता का सम्बोधन अपने में चमत्कार तथा रहस्यपूर्ण अमृतवेला का देव-दूत करार पाया है। सविता शब्द दिन फेरने वाला भी कह डाला, अथवा जो धरती माता की परिक्रमा में शुभ प्रभात वेला का संगम बनाता है, जिसे शुभ वेला की स्तुति वर्णन, सारी धरती के सविता अपनी अपनी भाषा में वर्णन में ले आने का प्रयास, सम्मोहन, आभास, तथा सहने योग्य प्रतिमा का खाका खींचा है, किसी कवि ने तो प्रभातकालीन सूर्य अर्थात सविता का यूँ सम्बोधन उचारा है, जैसे वह उतरा आ रहा है, हमारे भीतर समा लेने हेतु, बस जाने हेतु यह सारी अवस्थाएं वर्णन

से बाहिर होकर अनुभव करने आंखों को रोचक होने, दृष्टि-गोचर होने, की स्थिति अपनाने की बात है। मानव भी संबोधन वह उचारे जो अपने को प्रेम उत्पादन करने वाला हो। राजाओं का सरताज भी वही प्रिय होता था जो सत्य हो अवलोक हो सके, बुलावे में आ सके, इसलिए इस रमणीयता से पूर्ण इस घट्टी से सुशोभित, सर्वप्रिय तथा अपने में आर्कषण करने की क्षमता की विभूति हो। मैं न तो कवि हूं, नहीं बारीक बीनी से सम्पन्न व्याख्याता हूं—मैं तो केवल सूर्य देवता के उस प्रताप, प्रतिभा, समय, क्षण, तथा काल का वर्णन, पेश करने बैठ गया हूं, जो हमें प्राप्तव्य हो, कहते रहने का काम नहीं अत्यन्त जाज्व-ल्यमय सूर्य भगवान की उस आभा का संक्षिप्त गृहणीय स्वरूप का भिखारी हूं, जो हमारी पकड़ में आ जावे इसलिए दिव्य नाम का पुजारी जो हमारी दिनचर्या में चाबी दे पाए, जो हमारे सोएपन को ऐसी रोशनी दे, जिससे न तो अति, न ही नगण्य, का लेखा जोखा बना देवे अपितु हमारे भीतर समा-विष्ट हो सके, व्याप्त हो सके जम सके, विराजमान हो सके और हमारा इष्ट देव समर्पित हो सके।

अलख निरंजन दुख भंजन भिक्षाम्देहि।

सविता वरेण्यं क्यों

भेंट १५ (ख)

वास्तव में संसार के सब दुख क्लेश भय संकट टल जाने वाले हैं ! अटल तो केवल परमेश्वर है यही इसके वरेण्यं होने की बड़ी निशानी है । उसका साथ जोड़ा सविता अर्थात सूर्य को जिसके द्वारा संसार के बड़े से बड़े बादल नष्ट हो जाते, अन्धकार मिट जाते,—भगवान विचर्षणि है संसार को ठीक-२ देखने वाला है, उसकी शरण मानव को सही विवेक प्रदान करती है इसलिए वरेण्यं को सविता से संयुक्त कर, सविता को वरेण्यं की उपमा देकर मंत्र के ऋषि ने पूरा न्याय किया है । इस जोड़ी की शोभा इस रहस्य का उद्‌घाटन करती है इसी दलील से जगदीश्वर हमें संसार के भारी भय बार-२ जीने मरने तक को छुड़ा देगा, सदा के लिए अजर अमर अभय भी कर देगा-यह आश्वासन इस जोड़ी से ग्रहण होता है । विज्ञान सूर्य-यद्यपि वह प्रचण्ड अग्नि का एक अकल्पनीय पुन्ज है फिर भी उसके लाभ उपकार, विस्तार तथा प्रभाव को उचित रूप से प्रकाशित कर रहा है। फ्रांस के एक वैज्ञानिक डॉ० हपकिन्स का कहना है। मानव शरीर एक ऐसा पुष्प है जिसे सूर्य के प्रकाश की सबसे अधिक आवश्यकता है ; जर्मनी के प्रसिद्ध डॉ० लुईकुनी ने कई रोगों के उपचार के लिए सूर्य किरणों का उपयोग सफलतापूर्वक किया

सूर्य की अल्ट्रावायलेट किरणों से हमारे शरीर में विटामिन 'डी' का निर्माण होता है जिसके कारण हमारे यहां कैलशियम फासफोरस इत्यादि खनिज लवण उपयोग में आते हैं । पौधा अपने हरे रंग से सूर्य की शक्ति को शोषित करते हैं । जड़ों द्वारा जल, हवा से कार्बनडाई आक्साइड सूर्य शक्ति के माध्यम से पौधे अपने हरे रंग से एक संयुक्त पदार्थ कलोरोफिल बनाते हैं, जिसे कार्बोहाइड्रेट कहते हैं जिससे पौधे पोषण लेते हैं । पेड़ पौधे की प्रकाश संशलेषण से उनका भोजन बनाता है । मनुष्य का आहार वनस्पति है, जो सूर्य के द्वारा ही उगती बढ़ती तथा उपयोगी बनती है । रवि रश्मियां, घावों, अन्यान्य ज्वर, इत्यादी में काम आती है । एक ओर शक्ति, दूसरा ओर रोग निवारण-सूर्य के महान वरदान है । इस प्रकार वरेण्यं की उपाधि इस जगत के जीवन दाता के लिए अत्यन्त योग्य है । अपना सूर्य २२० किलोमीटर प्रति सैकण्ड की गति से अपनी मण्डली को साथ लेकर चल रहा है । यह एक परिक्रमा २५ करोड़ वर्षों में पूरी होती है । धरती का जिस दिन जन्म हुआ होगा उस दिन से लेकर अब तक सूर्य ने केन्द्र की एक परिक्रमा तक पूरी नहीं की । सूर्य स्तुति हमारे प्राचीनकाल से चली आ रही है, तत्वदर्शियों में 'त्वम मानो जगतश्चक्षु' 'त्व आत्मा सर्व देहिनाम' 'त्व अग्नि सर्व भूतानाम्' अपना अनुभव ही बता रहा है, कि जीवन प्रक्रिया ही सूर्य से होती है । सूर्य की प्रतिमा, तेज, ब्रह्मवर्चस, ऊर्जा साक्षात करने की विद्या है, केवल वर्णनमात्र कागजो घोड़े दौड़ाना है । वनस्पति जगत, पुष्प वर्ग, खिलना, बन्द होना एक से एक बढ़कर चमत्कार है, जो सूर्य के सच्चे पुजारी की साम्रगी प्रस्तुत करते हैं । क्या सुन्दर वर्णन 'त्वयाचार' क्रिया वतीम अर्थात आप पुरुषाथियों के आचरण हैं : अपने आप वरेण्यं का जीता जागता उदाहरण है । मैं तो वरेण्यं के कण मात्र से अपनी लेखमाला को

सुशोभित करने में तुच्छ प्रयास मात्र कर रहा हूं। भला सूर्य जो परमपिता का श्रेष्ठ सेवक ठहरा वर्णन में आ सकता है। शब्द साथ-साथ रखकर दोनों की ओर, दोनों असाधारण गुणी एक दूसरे की शोभा वढ़ा रहे हैं। प्रभुवर तो गुप्त हैं। सूर्य तो साक्षात है इस लिए वरेण्यं की वरमाला, जो भगवान महान दानी के लिए सन्चित होती है, डाली तो सूर्य देव के चरणों में जा सकती है। इसलिए वरेव्यं सविता व सविता वरेण्यं बड़े रहस्यपूर्ण समागम के, आराधना के योग्य हैं। आखरी बात, सार रूप कि जैसे सूर्य ही जीवन का स्रोत है वैसे ही सत्य सनातन वरेण्यं, प्रजापति भी हमारे दिलोजान से स्तुति के योग्य ध्येय हैं। अतः पास-पास में टिके आस पास के सुलक्षित जोड़ीदार हमारे सौभाग्य के शुभ संकल्प करार होते हैं।

अलख निरंजन दुख भंजन भिक्षामदेही

भेंट १५ (ग)

धीमहि से धी की आबादी

यजुर्वेद के निर्मल मन्त्र को लक्ष में रखकर जिज्ञासु जिस बुद्धि सुमति का ग्राहक बनता है वह एक व्रत, व्रतों के पति से समिध होना अभीष्ट है, हे परम ,प्राचार्य "अभ्यादधामि समिधं अग्नेव्रतपते त्वयि व्रतं च श्रद्धां चोपैमि ईन्धेत्वादीक्षितो अहम्" इस मंत्र का विनिय इस प्रकार बताया गया है, वेदान्जली के अनुसार 'आचार्य अग्ने तुम स्वयं व्रतो का ठीक-२ पालन करने वाले हो अतः मुझे भी व्रतों के पालन करवा सकने वाले हो— इसलिए हे व्रतपते तुम अग्नि में मैं अपने आप को समिधा बना कर प्रदीप्त करता हूं। इस तरह मैं व्रत और श्रद्धा को प्राप्त होता हूं, सत्यपालन आदि शिष्य के व्रत को, तथा सत्य की धारणा रूप सत्य धारण कराने के लिए, तुममें दृढ़ विश्वास रूपश्रद्धा को प्रस्तुत होता हूं, सत्य व्यवहार आदि व्रतों को पालन करने का दृढ़ संकल्प, तथा सत्य में अविचलश्रद्धा, रखकर तुम्हें अपने आपको समर्पित करता हूं, इस तरह तुम में दीक्षित होकर तुम्हारा ब्रह्मचारी बनकर, हे ज्ञानमय अग्ने मैं तुझ में प्रदीप्त होता हूं, निस्सन्देह जहां मैं तुम पवित्र अग्नि में अपने आप को जलाकर प्रदीप्त होता हूं, वहां मुझ जलती हुई समिधा को प्राप्त करके, हे अग्ने तुम भी अवश्य प्रदीप्त होते हो, अथवा जगत में

प्रकाशित होते हो।' सचमुच मन्त्र की व्याख्या स्वयं में सुशोभित होकर भक्त को आशीर्वाद तथा प्रसाद दे रही है। गुरु से शिष्य का यह सम्बन्ध साक्षात, पवित्र बन्धन, बहुत ही लुभायमान है। निर्णयात्मक भाषा में सम्बन्धित, अटल विश्वास की धारा, वास्तविक प्राप्ति का पुण्य वरदान, एक नया मार्ग प्रस्तुत करती है। यह है ढंग धीमहि से सत्कृत होने, धी ग्रहण करने, रिश्ता नाता जोड़ने का कार्यक्रम परन्तु हम सब गायत्री जाप तो कर लेते हैं, प्रायः धीमहि की टैंकी भरती नहीं, प्रभुवर के गुणों की गोष्ठी बनाते नहीं, अतः प्रचो दयात् का वर मांगना व्यर्थ की व्यन्जना है। प्रत्येक गृहस्थ का निजी अनुभव है कि टयूबवैल भरने के पश्चाता टूंटी खोल, जल मिलता है, पर यहां हम यह साधारण सा प्रयोग भी भूल जाते हैं, धीमहि से मालामाल होने के पश्चात् ही, अपने हिस्से की धी की आशा होनीयोग्य है। इस महामंत्र के ९ शब्दों में नवधा भक्ति के, ब्राह्मण के परम पुनीत नौ गुणों के प्रेरक तत्व छिप रहे हैं। इस महामंत्र के तीन चरण और एक शीर्ष, चार भाग, चार वेदों के विस्तार ताक बताए जाते हैं। इस मंत्र के दो परक, ज्ञान और विज्ञान, ब्रह्म विद्या तथा ब्रह्म भक्ति के प्रतिपादक हैं, एक ओर सिद्धांत दूसरी ओर व्यवहार ही दो सूत्र हैं। आतम कल्याण की गंगा, भौतिक समृद्धि की यमुना उदगम् बनाते हैं। मन की प्रार्थना, कि हे तेजस्वी परमात्मा, हम आपके श्रेष्ठ प्रकाश को अपने में धारण करते हैं, बड़ी करामात की अवस्था है। भला भगवान कोई चुल्लू भर थोड़ा जल है, वह एक महान अनन्त सत्ता को छोटे से सिर में स्थान दे लेना, प्रकाश को बिन्दु में भर लेना है, जो हमें सन्मार्ग दे, अर्थात् श्रेष्ठ प्रकाश भी एक ऐसा उछलता छलकता सागर है, जो हमारे मस्तिष्क में समा जाए, यह एक विलक्षण

वास्तविकता है। सदबुद्धि ही व्यक्तित्व उभारती है। यह तो रहा प्रयोगशाला का एक पहलू पर दूसरा पहलू भी भुलाया नहीं जा सकता ! दो प्रयासों के परिणामतः, एक ऋषिवन निकलता है, दूसरा चोर, उनका, धीमहि के किनारे घी को डालकर, कोई क्या से क्या बन पड़ता है, आस्था-श्रद्धा निष्ठा प्रज्ञा अन्तःकरण का नाम लेते हैं, यही अन्तःकरण ही स्थान है, जहां से दिशा मिलती है, हमने केवल यहां गुणी भगवान के सत्य स्वरूप को धारण करना है, जिसे हम अपने प्रयोग में ला सकें, अर्थात परम गुणी से लाभन्वित हो सकें, उसके गुणों के भागीदार हो सकें, ऋतम्भरा का स्थान भी यही है प्रज्ञा का भी, हम केवल पहले सत्कृत हों, धीमहि के वरदान से, उसकी असीम दया से, उसके विचित्र तारतम्य से, उसके अनुग्रह से, उसकी दया दृष्टि से, उसकी उपकार वृति से, उसकी अनन्त लीला से, उसकी प्रचण्ड अग्नि से, उसके वर्ण वदल सकने की सामर्थ्य के, उसके संशोधन यन्त्र तन्त्र से, उसकी विवेकशीलता से, अनन्त के अनन्त स्वरूपों से, अनन्त लोला के अनन्त साधनों से अर्थात अनन्त में अनन्त अनुभव से, फिर अपनी समिधा समर्पित करने से, सौभाग्य से, समिध हो सकने की प्रक्रिया से, विधि विधान से, फिर देखें कि हम समिधा रूप, अग्निकुण्ड में समर्पित हो गए हैं कि नहीं, बस फिर क्षण होगा यह देखने का कि हम जल रहे हैं, इस शान्तिमय सर्वशक्तिमान की पावनी गोद में तथा प्रगति की दिशा में अपने को संस्कृत होते होते ! यही है रीति नीति धीमहि से धी प्राप्ति की। जहां हम भगवान का मानव शरीर की प्राप्ति पर गद्‌गद् होते हैं, वहां हम मानवी बुद्धि की मांग करके मानवता का यज्ञ पूरा करते हैं। साधक का लक्ष वस्तुतः बड़ा महान है कि वह धीमहि

की भट्टी में, अपने को डाल सकने का सौभाग्य लेता है। अपने को धीमहि का स्वरूप देकर सौभाग्यशाली होता है। एवं गुंजाएशभी है, क्षमता भी है प्रयोग भी है, यह गायत्री यज्ञ की पूर्ण आहुति भी है।

एक विचित्र जोड़ भी है, धीमहि से घुलमिल जाने का अनुभव भी है, जरा कल्पना के तराजू में तुल सकते का संगम भी है, कि सर्वव्यापक की सद्बुद्धि, सदप्रेरणा में स्थान लेने की प्रक्रिया बड़ा साहस है, बड़ा सौभाग्य है, बहुत बड़ा महोत्सव भी है, यज्ञ भी है, धीमहि से, जो महातत्व कही गई सृष्टि भर जिसके राग गाती है, उस धीमहि में, हम अपने धी को समाहित कर सकें, सृष्टि की कितनी महान लीला तथा समष्टि रूपा आहुति है, उस महामंत्र की शोभा है, इस महामंत्र के आभूषण हैं, पुन: जीवन है, धीमहि से धी का संस्कृत हो जाना, सध जाना, फिटिंग ले पाना, एक बड़ा आविष्कार है, जो हर व्यक्ति प्राप्त कर सकता है, जो हर एक के भाग्य में समय ले आता है, पुण्य पुनीत, अद्वितीय ज्योति का रथ तो मौजूद है, पर रथ को जोतने वाली धी गायब है। बाल्टी पानी की भरी रखी है, पर लौटा भर धी नहीं, जो आनन्दपूर्वक स्नान दे सके, हमारे चारों ओर पुण्य प्रताप का कुण्ड प्रदीप्त हो रहा है, पर व्यक्ति वंचित है, उससे अंलकृत होने से, सत्कृत होने से, लाभन्वित होने से, इसी कमी को पूरा करने की रीति नीति इस भाग का सार है कि धीमहि से धी निखरे कैसे प्रत्यक्ष साक्षात यह, कि भरा बर्तन सामने है, भरा हुआ विराट के विराट स्वरूप का अपने अणु होने का आभास, अपने क्षुद्र मन से महान होने का रंग ढंग, धीमहि से धी को जोड़ने का विषय करार पाया है।

जिसके आगे शीष झुकाते, ज्ञान और विज्ञान।
गायत्री वेदों की जननी करती जग कल्याण ।।

इस अनुभव को रूप रेखा देना मन्त्र का जाप है। आलौकिक शक्तियां पुकार से मानव को प्रकाश दान देकर, योग्य दान दे रही है। दीपक का स्नेह (तेल) समाप्त हो गया, रूई की बत्ती चारों और धीमा धीमा प्रकाश छोड़ रही थी, अन्तिम लौ तीव्रता से चमकी और शून्य में विलीन हो गई। बुझते दीपक के सम्मुख एक प्रश्न था, बन्धु अभी तक तो तुम मन्द-मन्द जल रहे थी, अब एक साथ तीव्रतम लौ से वातावरण को आलौकिक कर बुझ क्यों गई? दीपक ने वक्ररेखा बनाते हुए कहा "अन्तिम समय भी मेरा यह प्रयास था कि सम्पूर्ण शक्ति लगाकर, इतना प्रकाश फैला दूँ कि यदि अन्धकार से कोई जीव भटक रहा हो तो उसे भी राह नजर आ जाए।" अजब हालत है हमारी, घर में नहीं दाने, अम्मां चली भुनाने, भट्टी क्या करेगी यदि भुट्टा न होगा। शक्ति करेगी क्या यदि निर्बल को निर्बलता का ज्ञान नहीं, औषधालय करेगा क्या यदि रोगी उपचार कराना नहीं चाहता, वास्तविकता भिन्न है, कमी है हमारी प्राप्ति की। एक सन्त धर्मशास्त्रों के गहन अध्ययन में निरन्तर लगे रहते। रात हो या दिन, वे निरन्तर अपनी साधना में तन्मय रहते। एक बार आधी रात में उनके दीपक का प्रकाश धुंधला पड़ गया। कई दिनों के निरंतर अध्ययन मनन से सन्त भी थके हुए थे। उन्होंने ग्रन्थ बन्द किया और लेट गए। स्वप्न में उन्होंने देखा, विद्या की देवी सरस्वती कह रही है, "वत्स मैं तेरी साधना से बहुत प्रसन्न हूं अब तुझे कठोर परिश्रम नहीं करना होगा, मैं तुझे सभी विद्याओं का दान देने आयी हूं। सन्त ने सिर झुकाया और कहा-मां धृष्टता क्षमा करें, अभी मुझमें समस्त विद्याओं के पाने की

पात्रता नहीं आयी है, निरन्तर अध्ययन मनन से ही यह पात्रता सम्भव है, इसके लिए परिश्रम और तपस्या चाहिए, अपात्र के पास विद्या कभी सफल नहीं हुआ करती। सन्त का उत्तर सुनकर देवी प्रसन्न होकर बोली मैं तेरी परीक्षा ले रही थी उस में तू खरा उतरा, तू वास्तव में विद्या का सच्चा अधिकारी है तुझसे मैं बहुत प्रसन्न हूं जो इच्छा है सो मांग। सन्त ने उत्तर दिया, देवी, आप इतना ही वरदान दीजिए कि मेरा दीपक सदैव तैल से भरा रहे। उसके प्रकाश में मैं निरन्तर अध्ययन करता रहूं, ज्ञान प्राप्ति के मार्ग में आने वाले कष्टों से मैं विचलित न होऊं, मैं निरन्तर ज्ञानार्जन की साधना में लगा रहूं, तभी विद्या अधिकारी बनूंगा। यही सानिध्य ही स्वयं भी प्राप्ति है, यही वास्तविकता हमारी धीमहि की बन जाए तो सौभाग्य जाग पड़े, हमारी धीमहि की अवस्था तो होती नहीं, पर जाप जरूर कर लेते हैं, जो क्रमानुकूल न होने के कारण लाभदायक नहीं बनता। यह तथ्य मेरे अपने अनुभव का है भरा जाना, भर लेना, फिर मांग का मजा भी है, योग्यता भी, सत्पात्रता भी। तमाम धर्म यही बोल रहे हैं कि भगवान पाठ देने बैठ रहे हैं पर जिज्ञासु हाजिर नहीं हो रहे। बाइबल भी तो यही कहती है कि खट-खटाओ दरवाजा तुम्हें खोल दिया जाएगा। सूफी मत वाले इस तथ्य को एक ढंग से यूं समझा रहे हैं, कि एक सूफी गुरु शिष्यों सहित सो रहे थे, रात को गुरु देव की जाग खुली, आवाज़ दी, कोई जागता है ? एक शिष्य हफीज जो जाग रहा था उपस्थित हो गया, गुरुदेव के विचार में आया एक पहलू शिष्य को समझा दिया, जो भगवत प्राप्ति का एक निखरा साधन था। तत्पश्चात गुरुदेव सो गए, फिर वो तीन घण्टों पश्चात नींद टूटी, फिर आवाज दी फिर भी वही

हफीज जाग रहे थे, उठकर उपस्थित हो गया। फिर जागते रहने का उपहार साधना सफलता हेतु प्राप्त हुआ। गुरुवर फिर निद्रा में चले गए। प्रातः काल हफीज लिखते हैं कि सहज जागते रहने से उन्हें सिद्धि का ज्ञान बांट दिया गया, जो उनके जीवन का रास्ता करार पाया। धीमहि के दाता, धीमहि से ओत प्रोत गुरुदेव हमारे ही मन्दिर में आकर विराजमान हैं; दोष है तो हमारा कि अपनी बैट्री चार्ज करने के लिए हम अपना स्विच महातत्व से जोड़ते नहीं। धीमहि से धीका संचा-लन संयोग भी है, कला भी है, योग्य भी है, केवल प्रस्तुत होने की कमी है। छत्ता मधु का लग रहा है, मधु उतारी नहीं जाती। मार्ग दृष्टा सब्ज सिग्नल दे रहा है, दिशा दिखाई नहीं देती यही चूक जीवन की चूक भार रूप बन रही है। धीमहि से धी का उत्पादन बड़े पड़ोस की बात है। सच तो यह है और है भी उपहासस्पद कि एक ओर भुखमरी का डायकासोर निगलने दौड़ रहा है और दूसरी ओर मनुष्य जाति शुतुमुर्ग की तरह रेत में मुंह छिपा कर संकट के टल जाने की कल्पना कर रही है। मानव केवल भूला बैठा है—कहते हैं ब्रह्मा जी ने पृथ्वी बनाई तो वह हिल रही थी उन्होंने धरती पर विशाल पहाड़ खड़े कर दिए, जिससे धरती का हिलना बन्द हो गया। इनकी विशालता देख देवता लोग चकराए प्रश्न कर दिया कि पहाड़ों से भी बड़ा कुछ है, उत्तर मिला लोहा जो पहाड़ भी तोड़ देता है। इस सन्दर्भ में फिर प्रश्न हुआ कि लोहे से बड़ा क्या है उत्तर मिला आग जो लोहे को भी गला देती है। प्रश्न एक के बाद एक बढ़ता गया। जिज्ञासु, को उत्तर पर उत्तर मिलता गया कहा आग से बड़ा पानी, पानी से पवन अन्ततः पवन से बड़ा इन्सान और कहा कि साधारण स्थिति में तो उसका रूप जो

भी है पर वह अपने साधनों को बांट कर खाता है तब उसकी शक्ति असीम हो जाती है। यही है वह मानव जिसे बगल में दबी धीमहि प्राप्त हे जो किसी के भाग्य में नहीं आई, पर उसका असत्संग उसे उधेड़ रहा है, धीमहि से धी का आविष्कार, बड़ी कुशलपूर्वक कौशलपूर्वक सारी सृष्टि का वरदाता बनकर मानव की प्रगति का स्तम्भ-महान चुम्बक बड़ा गौरवपूर्ण तथा वरदान हैं, पद समीपता ही आंख को ओझल कर लने की सामर्थ्य बन रही है। धर्म अग्नि है जिसका उदगम आत्मा है, आत्मा के अन्तराल में जो ज्योति प्रस्फुटित होती है आतम बोध कहलाती है—यह सत्प्रेरना अग्नि है जो आदर्शों में तत्परता प्रदान करते रहने से श्रद्धा कहलाती है : इसका तुला मिला प्रयोग, विश्वास कहलाता है, श्रद्धा को भिवानी की, विश्वास को शंका की उपमा दी गई है, इन्हीं दोनों की सहायता से अन्तरात्मा में ओत प्रोत परमात्मा का दिव्य दर्शन होता है। साहसी शूरवीर भावनाओं की बलि चढ़ा कर धर्मात्मा बनते हैं, तथा परमपिता का प्रसाद-धीमहि से धी, का चमत्कार प्राप्त करते हैं। परमात्मा परम रस है 'रसो वैसः उस रस का पान करने से आनन्द मिलता है। संत एमर्सन के शब्दों ने 'एसन्स आफ गाडइज़ लव, परमात्मा का सार तत्व प्रेम है सारी कल्पना का मूल रूप, यही अनुभव कि धीमहि होकर वह हमारे हां विराजमान है, चक्रवर्ती राज्य की भावना है, सृष्टि भर को व्यक्ति में देख लेने का गौरब है, यह मन्त्र बड़ा उपकारी है, उत्साह वर्धक तथा सौभाग्यशाली है, जो प्रगति का एक मात्र उपाय है तथा परम पुनीत लक्ष का प्रकाश पुन्ज है—ऐ पुण्यात्मा एक दृष्टि उस सर्व नियन्ता की ओर देख तथा सन्तुलन व सौभाग्य से विवेक कर।

अलख निरंजन दुख भंजन भिक्षामदेहि।

धीमहि प्रचोदयात

महामन्त्र के ऋषि ने सचमुच शब्द परोसने में कमाल कर दिया है, धीमहि शब्द बहुत छोटा है पर यह प्रतिज्ञा-धारण आवाहन, पुकार, ललकार, आमन्त्रण, हौसला, मांग, धैर्य, क्षमता चैलेंज, बुलावा, अज्म, विचार, न्यौता, निमन्त्रण, अपने दूसरे की महमात्रवाजी, ग्राजगो, टिकाउ, विठाऊफैलाव, सम्भाल विनय, पोजीशन तैयारी, होशयारी, समाना, जमाना, आजमाना, मस्ती, बहादुरी न्यौता, जर्रानबाज़ी, महतोमहास्तेन गृहणामि, नया जगत, नया फलक, नई झलक, नई उपलब्धि, कदम बढ़ावा, बुलावा, मनावा, घेराव, धरना, वरना, झरना, उठाना, नम्बर लगवाना, हाथ बढ़ाना, शहनशाह-ए आलम को सत्कार, अपने मन का उदगार, एक सृष्टि, एक दृष्टि, एक वृष्टि, साक्षात्कार, मलहार, बलिहार, मिलाप, आदाब, हाजिर जनाव, तरगीव, तरकीव, तजबीज, आऊभगत, प्रेमभक्ति, शक्ति, मिलाप, मानशान, आदान, प्रदान क्या क्या नाम, क्या क्या मान इस छोटे से शब्द से मुझे उदबुद्ध होता है कवि लोग भी हद कर लेते है भावुकता में भरे विचारों की दुनिया में हरे से हरे एवं

रुतवा तेरे दर को मेरे सर से मिला है,
आगाह यही मुझे तेरे दर से मिला है।
जुर्अत की भी अन्तहा, कि छोटा सा

मानव, भगवान जो के संसार भर का प्रजापति संचालक, संरक्षक, एक मात्र सत्ता, मेरे हां आ सकती है, विचार का विषय है। कहां मैं क्षण क्षण में पतित हो सकने वाला, बुलाने पहुंच जाए, इतनी असीम शक्ति का, कुछ सन्तुलन बैठ नहीं रहा, विचार जम नहीं रहा, हाथ उठ नहीं रहा, हाथ पहुंच नहीं रहा, पर धीमहि गाया गया मंत्र में बिठाया नहीं जाता

मैं—होता तो खुदाई के भर्म खुल जाते, तेरी हस्ती का पता है मेरा इन्सां होना :

इसे भी नहीं ठुकराया जा सकता, नहीं भुलाया जा सकता, नहीं मिटाया जा सकता, नहीं दुराया जा सकता।

मन्त्र रचा गया, यद्यपि मंत्र थोड़े से चरण, छोटे से अक्षरों का है, पर धीमहि शब्द बीच में घिर करके, ऋषि ने एक बड़ा कदम उठा लिया, केवल साहस भरने से, नेत्रों में जल भरने से, आश्वासन द्वारा तरने से, हो न हो देर लगे, पर धीमहि जाएगा कहां, निमन्त्रण तो कायम है हमारे कार्ड पर यह शब्द छपे न छपे, पर न्योता की रीत प्रीत रगं ढंग जाए कहां।

कपिल वस्तु के राजकुमर घर छोड़ चुके थे। बोध की खोज में बहुत भटक चुके थे उनकी हिम्मत टूट रही थी, शरीर जवाब दे रहा था, घर लौट चलने की धारा बन रही थी, चुनांचि कपिल वस्तु की ओर चल भी पड़े। रास्ते में एक झील पड़ती थी, उसके कनारे रुके तो एक गलहरी को बार बार पानी के करीब जाते देखा चूंच से पानी भरते देखा उस पानी की चन्द बूदों को रेत पर छिड़कते देखा, आश्चर्य में

अपने को बढ़ते देखा-रहा न गया, गल्हरी से प्रश्न भी कर डाला, कि वह यह क्या कर रहा है, उत्तर मिला कि वह झोल को सुखा देना चाह रही है, सोच आई फिर कह भी डाला कि यह काम तो, वह हजार वर्ष भी न कर पाएगी, पर उत्तर मिला, कि वह अपना काम तो करती रहेगी। सिद्धार्थ को प्रसाद मिला, हौसला बंधा, गलहरी की हिम्मत, अज्म, इरादा सकंल्प, तरीका, सलीका मन भाया, फिर जंगल को लौट पड़े फिर तपस्या में लग गए, ख्यालात बदले हवा ने भी रुख बदला, भगवान ने भी उनके भाग्य बदले, आखिर वह धीमहि में सफल हुए। हमारे पुनः बसाऊ का महकमा बनता है, उनका लग जाना, भगवान के सिद्धार्थ के हां पसर जाना, होके रहा मैंने पढ़ा, आपने पढ़ा, समय ने गवाही दी, भटकता शहजादा सत्कृत हुआ, नाचीज मानव में भगवान का समावेश हुआ। सिद्धार्थ गौतम बुद्ध हुए अर्थात् उदबद्ध के अवतार हुए, स्वयं भगवान हुए, संसार के महमान हुए, सच्चे इन्सान हुए।

फिर मैं क्यों न कहूँ कि धीमहि शब्द परोया नहीं गया पर वास्तविकता को यकीन दिहानी, सत्य की निशानी, परमपिता की कुर्बानी, मानव की मेहरबानी सिद्ध हुई। हम भूल कर रहे हैं, महात्मा गांधी से किसीने पूछा कि आश्रम क्या है उत्तर दिया कि प्रार्थना पर विश्वास रखने वालों का समूह ही आश्रम है। यह अनुवाद यह उदगार महामना लोगों के छिपाए कहां जांए इसलिए किसी ने कहा था कि जिन्दगी सम्भाल कर रखना यह मौत की अमानत है। सत्य तो यह भी है।

यह इन्सां खाक का पुतला है- पर भगवान भी इससे मिलता है।

गर इस रूप से गफलत करे, तो शैतान भी इससे मिलता है। धीमहि का आदेश देकर मानवता पर बड़ा एहसान कर दिया। जितने महान आत्माओं के काम हम देखते है, उनमें स्वयं भगवान के दर्शन देखते हैं, इसलिए इस भेंट के, पहले पहले शब्द लड़ी परोस रहे हैं, कि धीमहि क्या है एक नई दुनिया है, कार्यक्रम है यद्यपि झील को सुखाने की मानंद गलहरी के काम की तुलना है, मानव भी इतना महान बन सकता है कि भू० भुव स्व वाला भगवान सविता स्वरूप वरेण्यं भर्गः भी इसकी लपेट में आ सकता है, तथा धीमहि का व्रत पूरा कर सकता है। इसलिए वेद के एक मन्त्र में कहा है कि महतों महास्तेन गृहणामि, मैं महान होकर उस महान को धारण कर सकता हूँ, एक सृष्टि बना सकता हूं, जिनके उदाहरण मंत्रों में हमने देख लिए है।

अब एक और रूख भी विचार लें, जो किसे धारण करता है, धारण करने वाला महान, धारा जाने वाला छोटा, संसार की भाषा में कहा जाता है। अकल भी यही मानती है दुनियां भी यही जानती है-क्षमा करें भगवान-यह शब्द लिखकर मैं भगवान की मानहानि नहीं कर रहा, धीमहि की व्याख्या देकर, शब्द का सही अर्थ प्रस्तुत कर रहा हूं धीमहि बनेगा तो तब, जब हम उसे अपने हां समालेंगे, बसा लेंगे, यद्यपि यह एक सत्पात्रता की पराकाष्ठा है, वास्तविकता की पराकाष्ठा है, सत्य कथन है, आशा है, यकीन दहानी है, ऋषि की जबानी है, हमारी जिन्दगानी है, और सफलता की निशानी है Every saint has a past, every sinner has a future जुट जाना भी एक लगन है, भजन है, धीमहि शब्द चला आया बड़े दूर के काल से, मन्त्र में ऋषि ने शब्द क्या जोड़ दिया,

एक पर लगा दिया, एक स्वर बना दिया, एक हार वना दिया, एक राह बता दी, एक दिशा दिखादी, आत्म सकंल्प बड़ी शक्ति है।

हर दर पर जो झुक जाए, उसे सर नहीं कहते

दर एक है, गायत्री माता के वरदान से साफ सुथरा शोभायमान रास्ता भी एक है, प्रज्ञा भी, ऋतम्भरा भी, बुद्धि भी, विवेक भी, टेक भी, सेंक भी, धीमहि शब्द क्या है फूलों की वर्षा, जव ऋषि ने पुट देकर धीमहि को सत्कृत कर दिया है यह भी बड़े महत्व की बात है।

प्राय: लोग शिकायत करते हैं कि गायत्री जाप किया, वहुत किया, पर प्राप्ति नहीं हुई उसमें एक कमी जो इस मन्त्र के जाप से रह जाती है, वह है, उस परमपिता को धारण न करने को, उसे आसन न देने को, उसे सम्मानित न करने की, उसको सत्कृत न करने की, उसको न बिठाने की, न समाने की, मन्त्र की इस शब्द पर ब्रेक न लगाने की, फिर शिकायत क्यों प्रचोदयात करेगा कौन-वह बैठे तो आर्शावीद दे, वह सम्भलें तो हम सम्भलें, वह आए तो जलवा बनाए, वह अवतरित हों तो सुरक्षित करें, वह तकलीफ करें, तो हम तकलीफ दें, वह आते नहीं और हमारी धी हमारी ही रह कर, हमारा ही चक्कर बनाती है, व्यर्थ की टक्कर बनाती है सुखाती है, जलाती है, गंवाती है, चूक हो गई, इस शब्द पर विराम न लेने की, धीमहि हो, तो प्रचोदयात की महफल बने। इसलिए हमारा प्रयास व्यर्थ जाता नजर आता है। हमने बाजार देखी है, गृहस्थी चलाई है, नौकरी की है, व्यापार किया है, बहुत कुछ किया है, क्या क्या नहीं किया, इतने अनुभवी होने पर

भी, हम यह नहीं देख पाए, कि वह हमारे हां आके बैठे ही नहीं और हमने व्यर्थ में जाप का शोर मचा के शोर शोर कर डाला, पर सलिप्त यह इसे न बिठा पाने की, विचार में नहीं आ रही जब तक वह विराजमान न होगें दर्शन देंगे कैसे, मानेंगे कैसे हमें तिलक लगाएंगे कैसे, सिलसिला बनेगा कैसे, हम चाहते हैं, जैसे कैसे, पर नियम नियम हैं। हम अपने घर बार में जिससे कुछ मनवाना हो, उसे बुला लाते हैं, उसको सेवाशुश्रषा करते है, जब उससे सवाल करते है; मांगते है, रीति भी यही हैं, रिवाज भी, पर भगवान के प्रति यह नुसखा भूल जाता है, इसलिए धीमहि व प्रचोंदयात की रंग रलियां, युग्मों की दौड़ धूप, unfit misfit की भाषा बनती जा रही है। गायत्री की उपासना सही और सही, मजाल कि शक्ति न मिले, वरदान न मिले, पर सीढ़ी से सीढ़ी चढ़ती है, हमारे मकान यही बोल रहे हैं, हमारे दफ्तर यही कह रहे है, मीनार यहो गवाही दे रहे हैं, पर गायत्री मां का वरदान लेना हो तो भूल क्यों, चूक क्यों, अतः धीमहि की भट्टी जलाओ, पिता को बुलाओ, बैठाओ फिर देखो वह पधार कर क्या नहीं करता, वह तो फिर यह कह देता है, हे वत्स तो अब अपने को भूलजा, में जानूं मेरा काम जाने और पीछे के आयाम मेरे ही अनुदान थे अब यही जान कि मैं तेरे धीमान हो गया, शर्त पूरी हो जाती है, मां बोल पाती है, बात बात में जलवा दिखा पाती है, फिर उसका प्रचोदयात क्या-वह सारा कार्यक्रम ही अपने ढंग से किया पाती है, माता है, आखिर पालना उसकी शोभा है, कमी व बेशी, उसकी मर्जी तब भक्त को देखो वह तो हमें पगलाया सा लगता है, अपने में खोया सा, अपने से अपने में पिरोया हुआ, सुई भी वही, धागा भी वही, और कहते कहते, भक्त सो भी जाता है।

सुर की गति में क्या जानू एक भजन करना जानू।

उदहारण क्या है; नए खेल तमाशे है, एक वार, स्वः रामकृष्ण परमहंस, जिनकी ख्याति एक मन्दिर के पुजारी की हवा ले चुकी थी। मशहूरी सुन के मन्दिर की रानी जिसने इमारत वनवाई, रामकृष्ण को पूजा पाठ कर लगाया जलवा करा दिया स्वयं भक्तों को आरती, पुजारी की भक्ति तल्लीनता देखने चली आई उनके साथ उनके महान व्यवस्थापक प्रवन्धक भी चले आए आरती प्रारम्भ हुई भक्ति प्रवाह में भगत जन झूमते गए पुजारी के तो कहना क्या वह तो भजन में स्वयं एक समारोह बन रहे थे उनके पास में रानी बैठे-२ हैरान परेशान, खुशी व आनन्द मना रही थी बैठी तो वह थों रामकृष्ण परमहंस के पहलू में ताकि वह उस दिब्यता पूर्ण प्रसाद का भाग बांट खाए एक वार, इस झूम झाम में पुजारी अर्थात् रामकृष्ण परमहंस ने इस महान् अतिथि के चांटा दे मारा- यह जटिल घटना बन गई —जिसका मन्दिर जिसकी शोभा, जिसका नाम जलवा- उसका यह परिणाम तथा प्रसाद मुख्य व्यवस्थापक भी तलमला उठा—मन्दिर में सन्नाटा, आश्चर्यमय वातावरण, डर था, कि परमहंस को भार परे क्यों न कर दिया जाता आनन फानन बिजली दौड़ी, लोगों की नजरो में, रानी की आंखों में, व्यवस्थापक की निगाहों में, शान्ति शान्ति की पुकार, पुजारी वोल पड़े रानी, आती तो भजन करने, दिमाग लग रहा, मुकद्दमों में, रानी सम्भली, अपना दोष स्वीकार किया, रुख बदला, भगवत भजन में रत हो गई, रामकृष्ण हरमहंस धीमहि के स्वामी, निर्भय, निर्दोष, स्थिति, ऊंची व शोभायमान रह गई, कोई विधान का पाया यह है धीमहि का सत्कार जो सत्य-सन्कार करे, वही सत्कृत दो, सुप्रेरित हो, प्रसाद से गद गद हो, ने देने का हाल हवाल सच है।

तेरा मन दर्पण कहलाए।
बुरे भले सारे कर्मों को देखे और दिखाए।।

यह तो ठहरा एक दृष्टान्त अब उठाए इतिहास, पन्ने पलटें, देखे कि धीमहि के उदाहरण जहां विवेक सदबुद्धि पहुचेगा परमपिता के चरणों समेत वहां शोभा पर शोभा पनपती गई। इक्षवाकु से राजा हरिश्चन्द्र, रामचन्द्र जी जो हमारी ६४ कलाओं में से केवल १२ के स्वामी थे पर धीमहि ने उसके जीवन में वह स्थान लिया जिसके कारण हजार वर्ष बीत जाने पर उनकी स्मृति भूल नहीं पाती, अब भी दरिद्र देश का भी लाखों रुपया प्रति वर्ष उनकी पुण्य स्मृति में बरबाद होता है यही हाल रहा कृष्ण महाराजका, जो केवल १६ कला के स्वामी थे पर नगर-नगर में उनके नाम के मन्दिर, उनकी रासलीला उनकी आरती, प्रतिदिन हजारों रुपयों की छवि लेती है। भगवान बुद्ध का यही हाल रहा महर्षि दयानन्द स्व० श्रद्धानन्द धीमहि के स्वामी अपने कर्त्तव्य से न हट पाए अपितु, स्वाह हो गए क्या शहीदे आजिम भगत-सिंह, रामप्रसाद विस्मल, नेता सुभाषचन्द्र बोस, कागज समाप्त हो जाएगा कलम थक जाएगी, पर धीमहि के उपासक, एक से एक बढ़कर, अपना देश का, विदेश भी, अरस्तु, सुकरात ईमामसीह, मुहम्मद साहिब सब का एक समान व्यवहार रहा क्योंकि उनके हां धीमहि विराजमान होती गई और वह फांसी क्या, कष्ट क्या कुछ भी न थे उनके लिए फूल थे-वह फूल चुनते गए सत्य तथा निष्ठा के गृह बनते गए, अमर हो गए' कितनों का उपकार कर दिया, यह सब कारनामें हैं धीमहि की शोभा के-जो हमारी भेंट की एक ही रूप रेखा है,—धीमहि हो जाना आसमान से सितारे उतारना क्या-सितारों के सरताज को अपने हां आबाद कर लेना, संसार भर की बड़ी योग्यता उपाधि, वर्णन, तथा संस्कृत हो जाने की बड़ी कड़ी महिमा है जिसे देखते ही नहीं बनता, एक से एक बड़कर मित्र चरित,

कला कौशल, विशाल विलक्षण उल्लास, भर उद्योग, तथा धन्धा है, जिसकी कोई उपमा नहीं, अब इसके साथ प्रचोदयात को जोड़ना तो अन्य विशेषता है, जब आप ही स्वयं पधारे, तब सब के सब कदमों पर डारे-जिससे इन्कार नहीं, संसार भर की यात्रा है ही सब विचार, सत्य कार्य तथा सत्य प्रकाश व सद प्रताप बहुत साधारण बाते है जिसकी अक्ल साफ उसका सब कुछ शफाफ इसकी अधिक कोई परिभाषा नहीं व्याख्या नहीं, दृष्टा नहीं, खरा खरा सोना, जलवा फिशां होना, बड़ा गौरव पूर्ण सिद्धि। सुमति को क्या सूचि दें, हर एक को जीवन यात्रा की अपनी-२ नाव अपना पड़ाव, अपनी चाल अपनी ढाल, भगवान के रंग निराले न किसी ने देखे न भाले, जो बर्तता जाए लेता जाए, सत्कृत होता जाए, यही सत्कृत होना ही प्रचोदयात है। अतः पहली लिखी बात को धीमहि एक प्रतिज्ञा भी है धारणा भी, आवाहन भी, पुकार भी, ललकार भी, निमंत्रण भी, हौसला भी, मांग भी, धैर्य भी, क्षमता भी, चैलेंज भी, बुलावा भी, अज्म भी, विचार न्योता निमन्त्रण अपने व दूसरें को महमानवाजी, आजजी, टिकाऊ, बिठाऊ, फैलाव, सम्भाल, विनय, प्रजापा तैयारी, होशीयारी, समाना, जमाना, मस्ती, बहादुरी, न्योता, जर्रानवाजी, महतोमहां-स्तेन बृहणमि, नया जगत, नयाफलक, नई झलक, नई उपलब्धि कदम बढ़ाना, बुलावा, मनावा, घैराव, घरान, वरना झरना हाथ उठाना, नम्बर लगवाना, हाथ बढ़ाना, शहनशाह-ए-आलम का सत्कार अपने मन का उदगार एक सृष्टि, एक वृष्टि, साक्षात्कार मल्हार, बलिहार, मिलाप, आदाब, हाजिर जनाब, तरगीब, तरकीब, तजबीज, आऊ, भगत, प्रेम, भक्ति, शक्ति, मिलाप, मान, शान आदान, प्रदान क्या क्या मान, एक गोटा इस छोटे से शब्द में एक नया प्रकाश उदबुद्ध किया है।

अलख निरंजन दुख भंजन भिक्षामदेही।

भेंट १६

गायत्री एक अनुपम त्रिपाई

त्रिपाई प्रत्येक घर में देखी जाती है। इस महामन्त्र को त्रिपदा भी कहते हैं। अर्थात इसके विभिन्न तीन पाद है, तीन सहारे है, तीन मुख्य लक्ष है, तीन प्रकार के विस्तार, तथा तीन प्रकार के विकास है। छोटा सा यह मंत्र गुणों से भरपूर तीन ही तीन में सुशोभित होने का गर्व लेता है। महामंत्र का नामकरण ही त्रिपदा है। महिमा इसकी वनी तीन चरणों से, तीन समिधाओं से, तीन स्तरों से, तीन धाराओं से, तीन व्याह्यृतियों से, तीन भागों से, तीन योग विद्या से, यह तीन मौलिक आधार इस त्रिपदा मां का स्वरूप बनके निखर रहे है, दिसम्बर १९७८ के युग शक्ति गायत्री में एक लेख पढ़ा था जिसमें तीन आश्रयों की श्रृखला पढ़कर आनन्द मिला था। मन्त्र के तीन विचरण मन्त्र को यूं शोभायमान करते हैं। शास्त्र पद्धति के अनुसार ग्राठ आठ अक्षरों के तीन चरण ही गायत्री का मूल निर्धारित करते हैं। तत्सवितुर्वरेण्य, भर्गो देवस्य धीमहि, धियो यो न: प्रचोदयात। मोटे तौर पर तीन चरण, तीन लोक बने इन्हें सृष्टि के तीन गुण भी कह सकते हैं, अर्थात सत् चित आनन्द सत रज तम की तीन धाराएं भगवान का सत्यं शिवं सुन्दरम् तीन रूप भी वर्णन करते है। गायत्री ही केन्द्र जिसे हृदय कह लें व्याहृतियों से गायत्री इससे सवित्री, उससे सरस्वती, उससे वेद तथा वेद से लोक बनने का

प्रतिपादन हुआऋतम्भरा की जननी गायत्री-जो श्रेष्ठप्रज्ञा अथवा आत्म शक्ति अथवा ब्रह्म तेजस-दूरदर्शिता, सूक्ष्म बुद्धि सावित्री से उदबुद्ध हुई, कला कौशल सृजन शक्ति शिल्प क्रिया सरस्वती की व्याख्या बनी, इससे अधिक स्थूल रूप प्रकृति के रूप में, गंगा यमुना सरस्वती, तीन धाराएं प्रयोग के शुभ संगम का नाम ले पाई। इसी तरह तीन लोक, तीन देव, तीन अग्नियां, तीन यज्ञ, तीन आहुतियां, हुई। शब्द को ब्रह्म भी कहते हैं, कहा जाता है जब प्रजापति ने सृष्टि रचना की, उस महान शक्ति ने प्रकृति पर जो पहली चोट मारी उस झंकार चोट-प्रहार से ऊं नाम की ध्वनि बनी, जिससे प्रभुवर का मुख्य नाम पहला नाम, ऊं कहलाया, जिसे आदि सृष्टि की शुरूआत का सौभाग्य मिला, ऊंकार में अ. उ. म तीन वर्ग हैं-भूव : स्व : तीन व्याहृति कहलाई-इस महान सर्वप्रथम नाम की उपासना से, आत्मबल, बुद्धि बल, तथा समृधि बल, प्राप्त हुआ। यह तीन तीन की श्रृंखला गायत्री माता का मुख्य रूप करार पाया यह भगवान की त्रिपाई, संसार भर का मूल आधार बना, जो व्यावके व्यापके सृष्टि की व्याख्या बनके निखराइस महाशक्ति के तीन स्तर, लैवल बने, गायत्री सावित्री तथा सरस्वती इसीसे स्तुति, प्रार्थना, उपासना की झलक मिली, जिससे ज्ञान योग भक्ति योग तथा कर्मयोग का वैभव प्राप्त हुआ एक ही मंत्र कितना भरा विज्ञान कितना भरा उल्लास और कितना भरा रस यह अमृतपान न लेखनी का विषय बनता है, न व्याख्या का-जो अनुभव करले उसके लिए तीन दृष्टियां, सकल संसार को खोल के प्रस्तुतकरके. उच्च तीन स्थितियां दीख जाती हैं- व्याहृति शब्द तो हम कहे जा रहे है पर

इस शब्द का अर्थ भी एक सुन्दर व्याख्या बनती है व्याहृति के अर्थ उचारण 'कथन, वर्णन तथा मन्त्र विशेष किया गया है। यह भी कहा गया हैकि जो व्याहृतियों का रहस्य जानता है देवता उसे दिव्य फल प्रदान करते हैं। इस महामन्त्र के तीन चरण, इस प्रकार विस्तृत होते हैं। देव- अग्नि वायु सूर्य, अग्नि, आह्वानीय गर्हिपत्य, दक्षिणाग्नि-वेद ऋक् यजु साम, लोक- भू भुव स्व: काल प्रात : मध्याह्न सांय, गुण-सत रज तम, अवस्था जागृत स्वपन सुषुप्ति, आदित्य, वसु रूद्र, आदित्य,छन्द, गायत्री, त्रिष्टुप, जगता, त्रिदेव, वृह्मा विष्णु महेश, शक्ति इच्छा ज्ञान क्रिया, ब्रह्म विराट स्वार वषट। सव ओर से, सब प्रकार से इस महामन्त्र की महिमा को केन्द्रित किया गया है। जिसने समष्टि रूप से महिमा को भर दिया है। भाग्यशाली शिक्षा तो स्वयं बोल रही है देव के अनुरूप दिव्य जीवन जोने का संकल्प बड़ा प्रभावशाली है। इस प्रकार इस मन्त्र में शक्ति शिक्षा व प्रार्थना का समन्वय करके, इसके पुण्य को अलंकृत किया गया है। जीवन देने वाला, रक्षा करने वाला तथा ऐश्वर्य का दाता उपलब्धि का आश्वासन देकर उपासक को आकर्षित किया गया है। इन तीन नामों भू भुव स्व: को लक्ष में रखकर सुव्यवस्थित व्यक्तित्व का नियोजन करके ऋषि ने बड़ी कला तथा विद्वता का चित्र खींचा है- सफलता ऐसे मानव को न मिले तो किसे मिले इसमें मात्र सन्देह करना पाप करना है। कल्पना की यह बात है कि इन सुन्दर अक्षरों का अर्थ सहित चिन्तन अपने ऊपर बड़ा उपकार करना है इस सारमय रहस्य का बाना भी एक ऊंची पदवी तथा प्रगति है। गायत्री उपासक दिव्य गुणों से भर गए-ऐसे नहीं कह दिया गया था। सच तो यह है कि उस

महामन्त्र की ज्ञान कर्म उपासना की व्यवधान समझा ही नहीं त्रिपदा यह महादेवी सर्वगुण सम्पन्न है। यह महामन्त्र इन्सान, सुलझा हुआ मानव श्रेष्ठ पुरुष बना कर जहां अपने मन्त्र की गरिमा को कायम रखना चाहती है, वहां तुच्छ मानव को सत्कृत करके मानवता का उद्धार करना चाहती है। हम उपासना शब्द का प्राय: प्रयोग कर लेते हैं। प्रभुवर कोई व्यक्ति तो नहीं जिसके समीप बैठने का सौभाग्य लेकर हम कुछ स्थूल रूप में प्राप्त कर सकें, प्रश्न यह है कि परमेश्वर साधक के आन्तरिक स्तर को कैसा चाहते हैं। स्व० रामकृष्ण परमहंस कहते थे ईश्वर का दर्शन तब होता है जब पाच सत्प्रवृतियाँ अन्दर प्रवेश पाने व फूलने लगती है वे पांच सत्प्रवृतियां उत्कृष्टता निर्मलता, सहृदयता. उदारता, आत्मीयता ही परमात्मा के ईश्वरीय सत्ता के ही गुण हैं। जैसे इन गुणों का अनुमान अपने अन्दर बैठने लगता है, समझना चाहिए कि उतना ही ईश्वर की समीपता साधक को प्राप्त हो गई : गायत्री मन्त्र के ऋषि का मन्त्र गूंथन बड़े कमाल का था यूं बुद्धि के लिए अनेक मन्त्र वेदों में भर रहे हैं पर अर्थ को दृष्टि सेवा तो सामान्य कही जा सकती है पर सामर्थ्य को दृष्टि से उसे अद्भुत एवं सर्वोपरि मन्त्र बताया गया है। शब्द गुंथन ही इतना महत्व का रखा गया कि शक्ति सफलता अमृत वर्षा अनायास प्राप्त होते गए। इस त्रिपदा के अनुदान में कहीं से किसी प्रकार कमी रहने ही नहीं दी। एक काबिल पुरुष बना लेने की आकांक्षा से मानव भर के लिए वरदान दर्श दिए गए। जिसके रोम रोम में गायत्री मन्त्र का सार रम जाए वह सुरम्य सोम तथा श्रेष्ठता में ओत प्रोत हो जाता है। यही रहस्य इस त्रिपदा स्वरूप का ध्यान में लाने योग्य है। युग्म के जोड़ों में हमने झूल के देख लिया। दो पहिए का

वाहन गिर भी जाता है, सलिप कर जाता है, पर ट्राई साइकल तो अत्यन्त सुरक्षित है इसलिए बालगोपालों की ट्राईसाईकल ही पकड़ाया जाता है : यह हमारा महामन्त्र भी तो त्रिपदा के कारण अत्यन्त सुरक्षित है । गायत्री मन्त्र तो जगत विख्यात हुआ ही पर व्याख्याकार भी कमाल के रहे, जिन्होंने इस मन्त्र के पुण्य लाभ गिने बड़े यश के भागी बने हैं । गायत्री माता को तीन समिधाएं कह कर शैशव यौवन तथा वृद्धावस्था का रूप पेश किया है व्याहृतियों में भू भुव स्व तीन भाग हैं जीवन देने वाला, रक्षा करने वाला तथा ऐश्वर्य दाता की सूरत में तीन उपलब्धियां बतला दी जो जितनी मात्रा में प्राप्ति करता जाता है उतना ही सिद्ध होता जाता है, गायत्री मन्त्र में भू भुव स्व : का मर्म मौलिक आश्वासन की शक्ल लेकर उत्साह तथा प्रतिज्ञावान होने का आयाम बनता है । गायत्री सत रज तम तीनों गुणों से सम्पन्न है जैसे शरीर वात पित कफ के सन्तुलन से स्वास्थ्य प्राप्त करता है, उसी तरह मन के क्षेत्र में यही तीन यदि सन्तुलित मात्रा में जुड़े रहें तो प्रगति का स्वरूप तैयार होता है । जिज्ञासु वर्ग इस जादू की पिटारी से अनेक जीवन वर्द्धक गुण प्राप्त करके सम्मानित हो पाता है । सार रूप तो यही कि इस महामन्त्र से आत्मबल प्राप्त होता है, यही रहस्य देशदेशान्तार में गूंज गया है । आत्मबल सूर्य तेज व उर्जा से भी श्रेष्ठ सिद्धियों व महानता का वरदाता माना गया है : सो त्रिपदा तीन पायों वाली सुरक्षित आश्रय, वाहन, साथी सब प्रकार से उपकारपूर्ण हमारे लिए वरदायनी है । यही अनुभव श्रद्धा से ओत प्रोत हमारे जीवन की उद्धारक हो यही मंगलमंय कामना हमारा सत्कार करने वाली सिद्ध हो ।

अलख निरंजन दुख भंजन भिक्षामदेहि ।

भेंट १७

पुष्टिवर्धनम्

गायत्री माता के संदर्भ में इतिहास अपने आंचल में अनेक दृष्टान्त छिपाए होगा, जिससे गायत्री उपासक वर्ग सम्मानित हो सका ! पर अपने काल की युग शक्ति गायत्री तथा अखण्ड ज्योति में अनेक उदाहरण सुन्दर व्याख्या व वैज्ञानिक रीति से वर्णन भी सराहना के योग्य है जिन्हें पढ़कर मैं तो अवश्य लाभान्वित हुआ हूं । अपनी भेटों की पुष्टि में यह वास्तविकताएं ध्यान से दूर नहीं की जा सकती ! कहते हैं भारतवर्ष के दक्षिण के महात्मा स्वः विधाख्य की तपस्या गायत्री में निष्ठा महान अनुभव तथा विद्वता भुलाई नहीं जा सकती । बाल्यकाल से ही गायत्री की उपासना द्वारा उन्होंने विद्यार्थी जीवन बिताया, उनके साधनाकाल में दो राज्य पुत्र उनके भक्त आ बने, जिनका राज्य छीन लिया गया था, और वह दर बदर हो रहे थे। स्वामी जी के आशीर्वाद से उन्होंने खोया राज्य भी फिर प्राप्त किया ! स्वामी जी को शिक्षा द्वारा राज्यकार चलाते रहे, इस महामना के आदेश तथा विमर्श से विजयनगर में राज्य स्थापना कर सकें, स्वामी जी की अगाध श्रद्धा तो गायत्री मां में थी ही पर जैसा वह आशा करते थे कि माता के साक्षात दर्शन कर सके, ऐसा प्रत्यक्ष दर्शन का सौभाग्य न मिलने से वह निराश होकर संन्यास में प्रवेश कर गए । आखिर एक

दिन इस संन्यासी को अन्तः प्रेरणा में उपासना के फलस्वरूप ज्ञान हुआ कि उसके पूर्व जन्मों के कर्मों के कारण तथा तपस्या के कारण कामनाओं में लिप्त रहने से. उन्हें निवांछित आनन्द नहीं मिल सकता था, पर अपनी साधना में उनको विश्वास बना ही रहा ।

अपने उपास्य देव में अगाध श्रद्धा से उन्हें सन्तोष तथा उल्लास की भावना आनन्द प्राप्ति हुई । शान्त मन में प्रभुवर से कुछ मांग लेने का विचार भी मिला पर निष्काम भावना से प्राप्ति के बदले में वह कोई अन्य वरदान मांगने को तैयार न हुए ! आखिर एक सत्प्रेरणा प्राप्त हुई, जिसे कुछ भी नाम दिया जाए, वह थी संसार के कल्याण के लिए सदग्रन्थ लिख डालने की आकांक्षा, जो उन्होंने जीवन पर्यन्त अपनी धुन बनाए रहे, तथा ऋगवेद भाष्य, यजुर्वेद भाष्य, सामवेद भाष्य, अथर्ववेद भाष्य, इत्यादि लिखकर संसार का उपकार कर पाएं । यह साक्षात्कार माता का पुण्य प्रताप ऐतिहासिक दृष्टान्त, माता के उपकारों में वरेण्यं है, जो स्मरण रखा जाना है । यह कथानक मुझे युग शक्ति गायत्री पत्रिका दिसम्बर १९७८ से प्राप्त हुई है । इसी तरह उसी अंक में अनेक व्यक्तियों के वैयक्तिक अनुभव कि किस तरह गायत्री मां का आगमन अर्थात प्रगति उनके जीवन में इस महामंत्र से मिली वह भी दृष्टान्त विचार करने योग्य है ।

एक सुशीला अलीगढ़, रामदयाल रोहांसी, शम्भूप्रसाद आदित्य, विजय कुमार सोलंकी करवल (म. प्र.) दुर्गालाल का छोला (राज०) प्रताप शिंदे बिरला ग्राम (नागदा) अशोक कुमार कश्यप गोंदिया (महा०) सत्यनारायण त्रिपाठी, कमलसिंह लखनऊ शिव नारायणसिंह कोरवा (म० प्र०)

राधा कृष्ण व्यास वानप्रस्थी (मन्दसोर) इत्यादि के दृष्टान्त पढ़ने योग्य हैं जिनका सार तथा जानकारी केवल इस बात का समर्थन करती है कि उन्हें गायत्री मन्त्र से क्योंकि जीवन प्राप्त हुआ, शान्ति तथा प्रसन्नता का वरदान मिला। गायत्री उपासना से विराट दर्शन मिले, कठिनाईयों में मां के संरक्षण मिले तथा ध्यान साधना की सुखद अनुभूति मिली, जीवन रक्षा हुई, दुर्गुणों से मुक्ति हुई, गुण कर्म स्वभाव में आमूल परिवर्तन मिला अन्धकार में प्रकाश की किरणें मिलीं, सद्भाव से प्रकाश में प्रगति, यह सारे दृष्टान्त पुष्टि वर्धन का रोल, योग्य प्रकार से अदा करते हुए, गायत्री मन्त्र के अभ्यास जप तथा अनुग्रह की व्याख्या करते हैं ! इसके अतिरिक्त जीवन से सन्ताप से मां की शील छाया नामी लेख में अनेक अधिक उदाहरण भी ब्यान किए गए हैं। श्री देवीदयाल पूछ का कहना है कि उनके अवगुण इस महामंत्र की कृपा से समाप्त हो गए, श्री अवधेश कुमार शर्मा दुर्ग का कहना कि मां पर उनका पूर्ण विश्वास रहा, श्री मदन मोहन सारस्वत जोधपुर का कहना है कि उनका हृदय मां की अनुकम्पा से परिवर्तित हुआ श्री रामलाल वासनिक भटगांव का कहना कि उपासना गायत्री मंत्र की प्रत्यक्ष फलदायनी हुई, कैलाशचन्द वाणी जावट का स्वप्न में मार्गदर्शन, श्री रामेश्वर अग्रवाल हजारी बाग दिल्ली की तपश्चर्या अमोध अस्तु है, रामचन्द राठौड़ का मां की अदृश्य सहायता, सन्तालाल कौशिक सीकर का दुर्व्यसन से छुटकारा, शान्ति सिन्हा दलीराजहारा का कि मां ने पुकार सुनी ज्योति सिंह पलवलपुर का कि मां का असीम अनुग्रह, थानसिंह ठाकरे खैरलोजी का रोग मुक्ति, मोहनलाल त्तवसार का स्वास्थ्य लाभ, भनीलाल टेकाड़ी का असाध्य रोग से मुक्ति दिल हिला देने वाले रुचिकर अनुभव

गुरुमन्त्र की असीम लीला में एक धरोहर पेश करते हैं : यह व्यक्तियों के निजी अनुभव और वह भी उन लोगों के जो हमारी तरफ जीवन यापन में सफलता पा गए, अपने-२ जीवन में क्रान्ति, का सूचक बनकर प्ररेणा दाता, माता वरदाता, के दृष्टान्त देने का केवल एक की मात्र, लक्ष, अपने भटकते भाई बन्धुओं के लिए, एक प्रकाश आलोक की दिशा दिखाकर, अपने जैसे निराशापूर्ण लोगों को उत्साहित करने का, प्रयोजन लेकर, प्रार्थना कर रहा हूं, कि हम असामान्य जन ऊपर उठकर अर्ध्व-गामी बनकर निजजीवन को अनुगृहीत कर सकते हैं, ऋषि लोग तपस्वी वर्ग तो ऊंचे पदवी वाले ठहरे दृष्टान्त कारगर होते हैं अपने जैसों का मुकाबला, अपने-२ जीवन से ताकि दृष्टि में भर सके साहस, आशा तथा प्रगति की पगडण्डी, जो हमारे लिए पथ प्रदर्शन का रोल प्रस्तुत कर सके ! यहीं एक भाग, इच्छा से पुष्टिवर्धनम का ब्यौरा दिखाकर अग्रणी होने का आश्वासन पेश कर रहा हूं। आर्य गजट देहली ने पतित पावन गायत्री नामी क्रमशः लेखों से बड़े सुन्दर ढंग से परिणाम शिक्षादायक, उत्साहवर्धक, सुन्दर विचार, इस पुण्य वरदानी के प्रति श्रद्धा का प्रजयोन बनाकर पाठकों को बहुत लाभन्वित किया है। बात है तो एक कि विचारपूर्वक नतमस्तक, शुभप्रयास के द्वारा, हम भी अपने जीवन में तबदीली ले पाएं। यही सौभाग्य पाने हेतू यह सारा प्रयास किया जा रहा है, ताकि जागृति का प्रोग्राम बन सके। महात्मा कन्फयूशश ने, ठीक ही तो कहा था, कि उचित को जानना और जानते हुए भी उचित पर अमल न करना यह दर्शाता है, कि ऐसे मनुष्यों में साहस का अभाव है। छोटी सी जान, थोड़ी गिनती के थोड़े से अक्षर, सरल शब्द शीघ्रता से समझ में बैठ जाने वाले अर्थ, हजारों सालों से चली

चलाई प्रथा, जन सामान्य का प्रीतिकर अभ्यास, उमड़ता उभरता जाय, सुन्दर ग्रन्थन, पथिक के भटकाव का निवारण, भावपूर्ण सन्मार्गगामी निर्देश, प्रचलित रंग ढंग, एक प्रलोभन, आशवासन, झलक, विश्वास, राह, दिशा, चौराहे पर खड़े, असमजंस के लिए छोटी सी बत्ती, एक स्वर्णमयी आकांक्षा, प्रदान कर रही है, कि यह मां धोखा न देगी, भक्तों को सहारा देगी, उभार लेगी, आश्रितों को रास्ता देगी, जिज्ञासु वर्ग को सान्तवना, तृप्ता को आन्नद, भक्त को भक्ति, मानवता का प्रतीक थके मांदों को ठहराव, शान्ति तथा आशीर्वाद देकर, हमें सम्मानित करेगी। यदि हम मां के लाल, बालगोपाल श्रद्धा में ओत प्रोत तथा लक्ष में सत्कृत जनमानस, आगे बढ़े-पढ़े पर विचार करें। एक ही पैर उठाएं, दूसरे पैर के उठाए जाने का सुअवसर लें, अजमाएं को आजमाएं जीवन प्रवाह में तृप्ति तथा अमृत का सोपान प्राप्त करके गायत्री माता के गुणगान करने का सौभाग्य लें।

जिसने सागर थल अम्बर में अपना ही कौतुक फैलाया-
जाकर जिसकी कृपा लोक यह, सदा देव दुर्लभ कहलाया।

हमने सदा भुलाया फिर भी पाया नित्य स्नेह उसी का,
देता रहा विश्व को जीवन, सिर पर वरदहस्त जननी का।

(डा० हर गोबिण्द सिंह)

हमारी अपनी आंखे देखे, कृपा पात्र होने के नाते महात्मा आनन्द स्वामी जी इन्हीं दिनों में आर्य जगत के जीवन, आर्य समाज के सर्वप्रिय नेता, जाने माने गए हैं । मुझे भी उनके आशीर्वाद का सौभाग्य मिलता रहा वह मां गायत्री के उपासक कहे जाते थे। तपोवन देहरादून में प्रतिवर्ष गायत्री जप की

शिक्षा दिक्षा दिया करते थे। उन्होंने गायत्री पर अनेक पुस्तकें लिखकर बड़े उपकार किए हैं आनन्द गायत्री कथा में उनके विचार जूं के तूं यहाँ लिखकर अनुग्रहीत होना चाहता हूं। बचपन की बात मैं छठी या सांतवी कक्षा में पढ़ता था और बहुत बुद्धु था, कुछ नहीं आता था, इस कमजोरी के कारण अध्यापकगण मुझे घण्टी आरम्भ होते ही बैंच पर खड़ा कर देते थे, तथा यह क्रम लगभग प्रत्येक विषय के घण्टे में चलता रहता था।

स्कूल से घर आने पर पिताजी मारते थे, तथा कहते थे तू सर्वथा अयोग्य है, किसी काम का नहीं है। मैं रो रोकर कहता था। पिताजी मैं बहुत ध्यान पूर्वक पढ़ता हूं, किन्तु क्या करूं जो पढ़ता हूं वह याद नहीं रहता। वे कहते तू पढ़ता ही नहीं। तू सर्वथा निकम्मा है मूर्ख है। इस दैनिक अपमान एवं नित्य के पीटे जाने से, इतना दुखी हुआ, कि इस छोटी सी आयु में आत्महत्या की बात सोचने लगा, जीने की कोई इच्छा न रही सोचा दुःख और अपमान से भरे इस जीवन से तो मर जाना ही अच्छा है। एक दिन बारह बजे स्कूल से छुट्टी हुई तो मैं सीधा उस बरसाती नाले पर गया जो हमारे गांव के साथ बहता था, वर्षा के दिनों में नदी बाढ़ के पानी से भरी हुई थी, तथा पानी तीव्र गति से बह रहा था। मैंने पुल पर खड़े होकर छलांग लगा दी, दृढ़ निश्चय कर लिया था कि मर जाऊँगा परन्तु भगवान को इस शरीर से कुछ काम लेना था, इसलिए यत्न करने पर भी मैं मर नहीं सका, गोता खाताहुआ मूर्छा की अवस्था में, कोई दो मील नीचे किनारे इस्लामगढ़ के पास जा लगा। वहाँ के लोगों ने मुझे पहचानकर घर पर पहुंचा दिया एक दिन आर्यसमाज के स्वामी नित्यानन्द हमारे गाँव जलाल-

पुर में आए। हमारे बाग में ठहरे। पिताजी की आज्ञा हुई "कि इन्हें तू रोटी खिलाने जाया कर"। मैं प्रतिदिन जाता और रोटी खिला आता। एक दिन पिताजी ने कहा "जा भैंस को पानी पिला ला" मैं गाँव के बाहर के तालाब में भैंस को पानी पिलाने ले गया। भैंस पानी पीकर गहरे पानी में चली गई। मैं छोटा था। उसे बाहर निकालूं तो कैसे। बहुत चिल्लाया ढेले मारे तो भैंस तालाब के दूसरे किनारे पर जाकर निकली, तथा बाहर निकलकर जमींदार के खेत में घुस गई। जितनी देर मैं दूसरी ओर पहुंचा, इतनी देर में, उसने खेत में लगी फसल का कितना ही भाग नष्ट कर दिया। इधर से मैं भागा हुआ गया, उधर से जमींदार आ गया, मुझे पकड़ कर इतना मारा कि हड्डियां दूखने लगीं। उस दिन मुझे स्कूल में भी मार पड़ी थी। घर आया तो पिताजी ने कहा इतनी देर लगाकर आया और तब उन्होंने भी पीटा। मैं भगवान से प्रार्थना करने लगा "कि मैं क्या करूं? तभी पिताजी ने कहा जा बाग में स्वामी जी को रोटी दे आ। मैं रोटी लेकर स्वामी जी के पास पहुंचा, उन्हें खाने को कहा और एक ओर निराश एंव उदास सा खड़ा रहा। महात्मा जी मेरी ओर देखत रहे। भोजन कर चुके तो बोले" खुशहालचन्द, क्या बात है, तू आज उदास क्यों है, सहानुभूति की बातें सुनकर, मेरी आँखों में आंसू आ गए। फूट-२ कर रो उठा मैं। स्वामी जी ने प्यार से मुझे अपनी गोद में बिठा लिया और बोले तुझे क्या हुआ? क्यों इतना दुखी है मैंने रोकर सारी कथा उन्हें सुनाई। उन्हें बताया कि यत्न करने पर मुझे कुछ याद नहीं होता। मेरी बुद्धी खोटी है। उन्होंने कहा बैठ जा मेरे पास, इसकी औषधि है मैं बताता हूं। एक कागज लेकर उन्होंने गायत्री मन्त्र लिख दिया, और बोले यह है तेरी

औषधि, जब परिवार के सभी सोए हुए हों, प्रातः दो तीन बजे उठकर स्नान करके इसका जाप किया कर। तब उन्होंने गायत्री मन्त्र के अर्थ भी बताए और जो अर्थ उन्होंने बताए वह आज भी मुझे भूले नहीं हैं।

तभी से मैं प्रातः उठने लगा। जप के लिए बैठने पर नींद आती थी, मेरी चोटी लम्बी थी, मैंने छत में रस्सी बांध दी तथा उसका दूसरा सिरा अपनी चोटी से बांध लेता था जिससे झपकी आते ही नींद खुल जाती थी। इस प्रकार ५-६ माह जप करते हो गए तो मैंने इसका प्रभाव देखना प्रारम्भ किया, पहले परीक्षा होती थी तो मेरे सभी प्रश्न अशुद्ध हुआ करते थे, अब मैं पास होने लगा। अध्यापकों ने कहा तूने अवश्य किसी की नकल की है, तेरी सफलता की आशा तो न थी। मैंने कहा 'नकल नहीं की है" मैंने केवल गायत्री मन्त्र का जप किया है। अध्यापकों को सम्भवतः यह बात समझ में नहीं आई, परन्तु इसके बाद परीक्षा में मैं अच्छे नम्बरों से पास होने लगा। इन्हीं दिनों मैंने एक कविता भी लिखी जिस पर हमारे गुरू अध्यापक ने एक पौण्ड पारितोषिक में मुझे दिया। मैंने घर पर पिताजी को कविता एवं पारितोषिक दिखाया, उन्होंने मुझे एक पौण्ड और इनाम दिया।

इसके कुछ महीने बाद एक और घटना हुई ! आर्य समाज जलालपुर जट्टां का वार्षिक उत्सव था। महात्मा हंसराज जी का एक व्याख्यान इस उत्सव में हुआ। मैंने महात्मा जी के व्याख्यान की रिपोर्ट तैयार करके उन्हें दिखाई। उन्होंने पूछा तू किसका लड़का है, मैंने कहा आर्य समाज के मन्त्री लाला गणेशदास मेरे पिता हैं, उसी समय मेरे पिताजी भी आ गए। महात्मा जी ने मेरे पिताजी से पूछा "इस लड़के से क्या कराते

हैं, पिताजी ने कहा यह पढ़ने में अच्छा नहीं है, इसके लिए जुराबें बुनने का कारखाना लगवा दिया है। महात्मा जी ने यह सुनकर कहा इस काम के लिए यह लड़का ठीक नहीं, मुन्शी जी, इसे मुझको दे दो मैं इसे उस काम पर लगाऊंगा जिसके यह योग्य है, पिताजी ने कहा मैं अस्वीकार कैसे कर सकता हूं, यह आपका बच्चा है, जैसे आप चाहें करें। इसके कई दिनों बाद महात्मा जी का पत्र आया कि खुशहाल चन्द को लाहौर भेज दो। मैं वहां गया। आर्य गजट पर ३० रु० मासिक वेतन पर रख लिया गया। आर्य गजट में कार्य करते हुए मैं इसका सम्पादक बना। इन्हीं दिनों मालाबार में मोपाल विद्रोह हुआ। यवनो ने हजारों हिन्दुओं की गरदनें काट डाली। कितनों को जबरन मुस्लमान बना दिया। हिन्दु मुस्लिम एकता के लिए कुछ ठोस कदम उठाया जाना आवश्यक था। देश के पत्र पत्रिकाएं इस दिशा में निष्क्रिय थे। हिन्दुओं पर हो रहे अत्याचार को कोई छापना नहीं चाहता था। मैंने अनुभव किया इस प्रकार हिन्दू मुस्लिम एकता कभी नहीं स्थापित होगी। इसका विचार करकें हमने हिन्दुओं को संगठित करने एवं परस्पर एकता स्थापित करने के लिए 'मिलाप' पत्र का प्रकाशन आरम्भ किया। इसका उद्देश्य ही था हिन्दू मुस्लिम एकता आचरण को उन्नत करने की, सदाचार को प्रोत्साहन देने की, रक्षा करने की आकांक्षा उत्पन्न की जाए।

मां की कृपा से मिलाप पत्र का प्रकाशन सफल रहा, आरंभ में तो एक लाख रुपए का घाटा हुआ, किन्तु इतने पर भी चलता रहा। भगवान की कृपा होने लगी मोटर, गाडियां, मकान, गाय, भैंस सभी कुछ हो गया। बेटे, बेटियां, लाखों की

सम्पत्ति सब कुछ मिला क्योंकि गायत्री मां ने कहा है कि मैं सब कुछ देती हूं धन, दौलत, बल, कीर्ति सब कुछ। मां की कृपा से सब कुछ मिला। इन्हीं दिनों लाहौर के अन्दर युनिवर्सिटी हाल में पंजाब के गर्वनर पर गोली चली। चार नवयुवक पकड़े गए। इन पर गर्वनर को हत्या करने की साजिष का अभियोग चला मेरा पुत्र रणवीर भी इनमें से एक था। सेशन जज ने फांसी के दण्ड की आज्ञा सुना दी। तभी एक और दुर्घटना हुई मैं जोगिन्द्र नगर आर्य समाज के उत्सव पर गया था। एक पत्थर से पांव फिसल गया मैं पहाड़ से नीचे जा गिरा। रीढ़ की हड्डी टूट गई। घायल होकर लाहौर अस्पताल में पहुँचा। सारा शरीर प्लास्टर में जकड़ दिया गया। लोग रणवीर को फांसी की आज्ञा होने के कारण मेरे पास सहानुभूति के प्रदर्शन के लिए आने लगे। सीढ़ियों पर चढ़ते समय वे रोना सा मुख बना लेते। आंखों में आंसू ले आते, किन्तु वे जब हमारे पास आते तो मैं उन्हें हंसता हुआ मिलता। वे मुझे मुस्कराता हुआ देखते तो अचम्भे में कहते कि तेरी छाती है या पत्थर। बेटे को फांसी की आज्ञा हुई। स्वयं तख्त पर पड़ा है फिर भी हंसता है। तो इस पर मैं विश्वास के साथ कहता हूं सुनिए 'यदि मेरा कल्याण इस बात में है कि मेरा बच्चा मेरे साथ न रहे तो वह कभी नहीं रहेगा। और यदिकल्याण इसमें है कि मेरा बच्चा बच जाए तो संसार की कोई शक्ति इसको मुझसे छीन नहीं सकेगी। लोग रणवीर के लिए रोते थे किन्तु मैं तो नहीं रोया। एक दिन स्वामी सत्य देव जो महाराज जम्मू कश्मीर के गुरु थे, मिलने आए। मेरी तरफ देखकर बोले कि इतनी विपत्ति में भी तू इस प्रकार प्रसन्न चित्त रह सकता है, इस प्रकार हंस सकता है तो तेरे बेटे को कौन छीन सकता है। और उनकी

बात सत्य निकली। रणवीर का बाल बांका नहीं हुआ तथा अभियोग से बरी कर दिया गया। गायत्री मां केवल लोक ही नहीं देती परलोक भी देती है। लोक परलोक दोनों का सुधार कर सकती है, आत्मा को पवित्र करने वाली वह माता आयु, प्राण, प्रजा, पशु, कीर्ति, धन, सम्पत्ति ब्रह्म वर्चस को देकर ब्रह्म लोक को ले जाती है। इसलिए कीर्ति, धन, सम्पत्ति, सन्तान, बेटे, बेटियां, मोटर सम्बन्धी आदि सब कुछ देने के बाद इस प्यारी गायत्री मां ने कहा मार सबको लात, मेरे साथ आ मैं ब्रह्म लोक ले चलूंगी। सब को छोड़ कर मैं गेरूए वस्त्र पहन कर मां के दिखाए हुए मार्ग पर चल पड़ा।

आठ वर्ष की आयु से लेकर अब तक एक भी दिन मुझे ऐसा याद नहीं कि जब मैंने गायत्री मां की गोद में बैठकर अमृत न पिया हो। यह सारी कहानी सुनाने का मात्र एक ही उद्देश्य था कि आजकल कलयुग है अवश्य, किन्तु कलयुग में भी गायत्री को उपासना करने से यह सब कुछ मिलता है, जो भीष्म पितामह ने युधिष्ठिर को बताया था, जो दूसरे ऋषि योगियों और महात्माओं ने बताया था, जो जगत गुरु शकंराचार्य, महर्षि दयानन्द, गांधी टैगोर, तिलक, राम कृष्ण ने बताया यह असत्य नहीं हो सकता। अतः मैंने जोवन में स्वयं अनुभव करके देखा है। मैं कहता हूं वह सत्य है, सत्य है, सत्य है।"

महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज को सर्वप्रियता, हर समय हंसता चेहरा, सन्तोषी जीवन, गदगद कर देने वाला व्यवहार यह साक्षी देता था कि वह किसी सिद्धी को प्राप्त करके महामना बन पाए है। उनके अत्यन्त नजदीक रहने वाले केवल गायत्री महामंत्र की सही उपासना की ही उनके सद-

व्यवहार, उदार हृदय, हर हाल में खुशहाल, खुशलचन्द के नाम को उज्जवल तथा सार्थक करने वाले स्वभाव की साक्षी देते रहे। इससे बढ़कर अपने समय में जीता जागता दृष्टान्त दूसरा नहीं मिल सकेगा।

इसी तरह जिला मुजफढ़गढ़ (पाकिस्तान) के जतोई कस्बा के महात्मा टेकचन्द जी जो बाद में प्रभु आश्रित के नाम से विख्यात हुए गायत्री माता के सही उपासक सिद्ध हुए। उन्होंने पटवारी नौकरी में ईमानदारी का जीवन, गृहस्थ, कुशल व्यवहार, संतुष्ट स्वभाव, परोपकारी अत्यन्त विनीत, तपस्वी जीवन, गायत्री सिद्धि का एक दूसरा साक्षी दृष्टान्त मिलता है उनकी लयबद्ध सुरीली आवाज गायत्री प्रचार, रोटी बनाते भी पकाते भी खिलाते भी एक ऐसे समय को याद दिलाता है, जिसे गायत्री महामन्त्र की महिमा, सार्वभौम संगठित जाप, रसिक वातावरण गायत्री मन्त्र के आशीर्वाद की अमृत वर्ष का एक निराला दृष्टान्त दृष्टिगोचर कराता है, यह कोई दलील का विषय नहीं, परन्तु अनुभव, आनन्द बखेर सकने वाली क्षमता, मंत्र की उत्कृष्टता, मधुर वाणी, अनमोल वचन, प्रफुल्लित कर देने वाले उद्गार, मंत्र के प्रताप, तथा सात्विक प्रभाव का खुले आम माहोल, एक ऐतहासिक स्तर उत्पन्न होने का समर्थन करता है। महात्मा जी की सर्वप्रियता, उत्कृष्टता इस महामंत्र की कुशलता का प्रमाण बन पाया। गायत्री विषयक पुस्तकें लिखकर उन्होंने अपने प्रयोग व अनुभव जन साधारण के लिए उपहार प्रस्तुत कर दिए।

अलख निरंजन दुख भंजन भिक्षामदेहि।

भेंट १८

महामंत्र का वैज्ञानिक रूप

ज्ञान व विज्ञान दो शब्द हैं भेद केवल वि का है अन्यथा शब्द दो अवश्य है पर अर्थ एक ही दिशा का है। ज्ञान से जानना मात्र विज्ञान से विशेष जानना माना जाता है, साधारण से असाधारण, सरल से विशेष, प्रत्यक्ष से अप्रत्यक्ष ही इनके अर्थ भेद हैं। विज्ञान का अर्थ सिद्धान्त के आधार पर गणना व जानकारी में आना है। इस महामंत्र की चर्चा वहुत हो चुकी, हो रही तथा होती रहेगी, पर जिज्ञासु का हित इसमें हैं कि वह विशेष-ज्ञान से मंत्र को समझें, विशेषता से उपयोग करे, चाहे जाप द्वारा व व्यवहार द्वारा तथा अनन्त विशष वरदान का सत्पात्र बने। बुद्धि की मांग सामान्य है अनेक तरह से अन्य मंत्रों द्वारा इसकी इच्छा की गई है पर इस मंत्र की रीति नीति विचित्र तथा एक नवीन पद्धति से ओत प्रोत है यह भी विचारणीय हैं। शब्द व अर्थ, मंत्र व भाव, ध्वनि और मंत्र, मत्र व जप, विचार व प्रेरणा इस महामंत्र के सुयोग्य पहलू है जो अध्यात्मिक होने से रहस्यपूर्ण है। सबसे पहले मंत्र की परिभाषा समझी जाए एवं जिसके मनन से संसार का यथार्थ जाना जा सके जो संसार के बन्धनों से छुटकारा दिला सके तथा जो सफलता के मार्ग पर ला सके, उसे मंत्र होने का सौभाग्य मिलता

है। मंत्र से सृष्टि को यथावत समझा जा सके यही उसकी शक्ति है, मंत्र बोल देने से लाभ तब प्राप्त होता है जब उसकी धुरि, सार, दायरा, परिमाण, परिणाम, विस्तार तथा सफलता का क्षेत्र निर्मित हो, यह भाग ध्यान में समाकर मंत्र का उच्चारण बार-बार कहकर भावों का उदगार, मर्कजी केन्द्र, सेन्ट्रीफ्यूगल सूत्र कायम करके मंत्र का लाभ पैदा किया जा सकता है, मंत्र के केन्द्रीय विचार, सत्प्रेरणा, सद्भाव का संकल्प, मन को उसका प्रतिज्ञाबध्र करना जप का विषय बनता ह, यही इस मंत्र का वैज्ञानिक स्वरूप है। उद्यान व खेत में राखीदार, ध्वनि से, रस्सी में लट्टू, छोटा पत्थर, घुमा-घुमा इधर-उधर पक्षियों को दूर भगाने का काम करता है तथा सुरक्षा का परिणाम प्राप्त करता है। इसी तरह सदविचार का पत्थर, सद्भावना की रस्सी से घुमा-घुमा कर जिज्ञासु दुष्ट भाव हटाता, प्रभु-प्रेरणा की शुभ गति से सफलता की ओर अग्रसर होता है। यही मंत्र का ध्येय बनता है एक दिशा में लगाव निष्ठा चमत्कार को खींच लाती है जैसे वायु की गोलाई में तीव्र गति से कंकर इत्यादि को घुमाकर सुरक्षा ली जाती है वैसे मंत्र का इष्टदेव सामने रख कर बार-बार सन्मुख लाकर प्रभुवर से गति विधि निर्धारित की जा सकती है। यही रूपरेखा मंत्र की जानकारी मौलिक बन सकती है, गुरुत्वाकर्षण, चुम्बकत्व के आधार पर जैसे सृष्टि के भिन्न पदार्थ, आकाश में गृह गुंथे तथा बंधे हैं वैसे ही इस महामंत्र के द्वारा सत्प्रेरणाएं शुभ आकांक्षाएं पारस्परिक सम्बन्ध से गुंथी हुई हैं यहो इस मंत्र की महिमा गौरव तथा वैज्ञानिक विधि विधान है।

मन्त्र शक्ति भी है यह रूपरेखा भी विचारणीय है। मानव दो भागों में बंटा हुआ है एक शारीरिक दूसरा मानसिक, दोनों

का आपस में बहुत गूढ़ गुत्थम् गुत्था है। शरीर कारवाई करता है मन चिन्तन करता है, निरुक्ताकार तो मन से संचारित होने वाली क्रिया को मंत्र कहते हैं। मन के रहस्यमय सम्भाषण को मंत्र कहते हैं पर कहीं भूल न हो जाएं, इस मन से पुण्य उन महर्षियों का मन है जो परम सात्विक तथा निष्ठावान है। किसी ग्रन्थ में उचारी हुई शब्द शृंखला को मंत्र कहा गया हैं। शरीर में गति, खून की, हृदय की, फेफड़ों की ऊर्जा कही जाती है। मस्तिष्क से विचार की तरंगे विद्युत पैदा करती है। विचार अपने भीतर के अन्तरिक्ष में धूमधाम से पक्षियों की तरह रिश्ते नाते जोड़ते हैं भीतर ही भोतर उड़ाने भरकर जहां से चले थे वहां लौट कर यात्रा की तरह पुण्य भ्रमण के भागीदार होते है विचार भ्रमण मानव का स्थल बनता है अच्छा व बुरा अपना-अपना फल समेटता हुआ हमारो सृष्टि का एक हिस्सा करार होते है, जो हमारे आए दिन जोवन का सार बनता है सारी क्रिया शीलता, दौड़ धूप जन्म मरण तक विचारों की फसल तैयार होती है गाए जंगल में चरने जाती है सायं को दूध भर कर अपने स्तनों में लौटती है विचार भी जब उड़ाने लेते है तो अनुभवों का दूध समेटे हुए होते हैं यह विचार सम्पदा हमारी प्राप्ति है। उधर शरीर की गति से ऊर्जा इधर मस्तिष्क की विचारधारा मानव के उतार चढ़ाव का क्रम बनाती है उसी गतिशीलता में बाहिर की शक्तियों अनुभवों को प्रकाश देने हेतू शब्द का उदगम वनता है यहो शब्दों का समुच्चय मंत्र की भूमि बनता है अर्थात् अच्छे फल मत्रवत घड़े जाते है बुरे प्रभाव से बुरा चिन्तन यही अध्यात्मिक पुरुष की व्यवस्था स्तर कायम करती है जो मौलिकता से बिखरते शरीर तथा मन की गति-विधि का नाम प्राप्त करते, बाहिर की वायु अन्तर के स्नायु

संस्थानों से टकरा योग्य शब्द की व्युत्पति बनाता है इन्ही शब्दों विद्युत तथा धारा का प्रवाह अपना जाल बुनते है शब्द शरीर व मन दोनों पर हमला अथवा आघात की शक्ति लेता है शब्दों का यह रूप हमारा जाप पाठ ध्यान प्रगति का रूप बनाता है। यह रेलगाड़ी चली-चली जाती है तथा घाट-घाट बुनना तथा प्रभावित करना क्षेत्र हालात समवन्य का गुन्थन हमारे अन्दर की गति का कारण बनती है जिससे मानव तैयार होता है जब हम चाहते हैं तब इच्छा शक्ति द्वारा नियोजित वे हलचलें क्षेत्र में आकर बाहरी वायु को खींचने भीतर से टकराने से ध्वनि प्रवाह बनता है यूं चल पड़ती है हमारी गाड़ी, क्षण-क्षण में स्पन्दन, कारगुजारी खड़ी होती जाती है शरीर व मन दोनों इन धमाको से प्रभावित होकर हमारी क्रमबद्ध लीला तैयार करते हैं।

अब इसकी लीला को और भी देखिए। वायु में एक और सूक्ष्म तल ईधर बसा माना जाता है शब्द का कम्पन इस ईथर से पैदा होता है जो विस्तार लेकर फैलता जाता अपने आस पास तरंगे भरता जाता है यह गतिशील तत्व तीव्रता से चला जाता है और प्रकाश की तरह अपना प्रभुत्व बढ़ाता जाता है यह ईथर कमाल की तीव्रता का शासक प्रति सैंकडों में बिखराव लेता है जो कान तक की पकड़ से बाहिर होता है मानवी कान तो ३२७७० कम्पन गति अनुभव कर सकते है शेष वायु प्रवाह में बहाव लेकर इधर-उधर फैला रहता है यह गति करोड़ मील प्रति सैकण्ड तक आंकी गई है। इस पकड़ की क्षमता का आधार बोलने वाले के व्यक्तितत्व, विचार तथा संकल्प पर दारोमदार रखती है इसके अतिरिक्त सजातीयता लक्ष तथा सुसम्बध होना

शब्द ध्वनि की शोभा तथा प्रभाव को बढ़ाते है हम यूं ही अन्धकार में चले जाना चाहते हैं जबकि हमारा दायां बांया संसार वैज्ञानिक रीति नीति से जकड़ में आया हमें दिखाता तथा हमारी सत्ता की अनुभूति लेता है। ऐसा विचार प्रवचन, बोल चाल, जादू, मेस्प्रेजम, तथा प्रभावशाली होने का चमत्कार लेता है। महर्षि के ऐसे बोल के शब्द ही तो होते थे जो एक ही बार सुनने वाले जीवन तबदीली में जुट गए, विचारों तथा विचारों के प्रभाव एक नया माहौल खड़ा कर देते जो वींधन करता हुआ मन व मस्तिष्क को पकड़ता जाता है। आज के हमारे अध्यापक वर्ग, उपदेशक वर्ग, यहां तक संन्यासी वर्ग खोखले प्रभाव रहित होते हुए कम्पन्न व स्पन्दन विद्युत न चीर फाड़ न ही चमत्कार करने में सामर्थ्य ले रही है। खला में खला हो कर व्यर्थ का समय व्यर्थ का प्रयास बन रहे है। व्यक्ति विचारों का गुच्छा दे ही नहीं पाता। यदि शिष्य श्रोता गण किसी उद्बुद्ध आत्मा के शब्द उपदेश विचार से हलचल में नहीं आता तो साफ प्रमाण है वक्ता के खोखलेपन का व्यवसायक वृति का तथा प्रभावहीनता का। हर मंत्र का देवता व ऋषि होता है। शब्द को ब्रह्मा भी कहा गया है यथार्थ तो यह है कि शास्त्रों में नाद ,शब्दों का प्रयोग अनेक स्थानों पर आया है। सद्भाव सम्पन्न मनुष्यों का सामान्य वार्तालाप भी शास्त्र स्तर का होता है। उन महामना लोगों के मुख से निकले वाक्य 'प्राप्त वाक्य' कहलाते हैं शब्द ब्रह्म का विवेचन करते हुए बताया गया है कि परावाक उसका मर्मस्थल है परावाक का रहस्योदघाटन करते हुए कहा गया है कि वह हृदय स्पर्शी होते हैं।

अब विचार कीजिए हम सब बोलते हैं पर बोल-बोल में भेद है कोई व्यर्थ शक्ति की हानि करते है तथा कई बोल द्वारा

मान्यता प्राप्त करते है यह है कहानी शब्द की उसके गोपनोय गौरव की तथा प्रतिष्ठा व प्रभाव की व्यवस्था हमारी जानकारी बढ़ा सकती है बारीक जानकारी के आधार पर कहा जा सकता है कि शब्द एक सुसज्जित शक्ति है। शब्द के द्वारा मानव प्रफुंल्लित भी हो उठता है तलमला भी जाता है यह हमारी दिन चर्या साक्षात कर रही है यूं तो शब्द का उच्चारण मुख से होता है पर वास्तव में मुख समूचा यंत्र है पर मुख में जिह्वा, कण्ठ, होठ, तालु, दांत भिन्न अवयव शब्द को प्रगट करने में पार्ट लेते है। शब्द का बड़ा जंजाल है इसके अनेक रूप तार टैलीवीजन सिनेमा, ग्रामोफोन, वायरलैस आज की सभ्यता प्रकाश में ले आई है यहां तक शब्द एक विज्ञान बन गया है जिस की व्याख्या व विस्तार देश देशान्तर में फैल रहा है। चुटकी भर में हमारी ओर से निकला शब्द कहां का कहां पहुंच जाता है यह सामर्थ्य शब्द की विशेषता का द्योतक है अब तो शब्द एक विज्ञान भी हो गया है—यह शब्द ईथर तत्व से मिलकर कहां के कहां पहुंच जाते है। पशु पक्षी तक शब्द लीला में अटक रहे है शब्द हर प्राणी के अपने अपने वर्ग की एक बड़ी जानकारी है—ईथर तत्व में पास आन के माध्यम से शब्दों की व्यापकता मानी जा चुकी है विज्ञान तो भूत अपितु लम्बे अर्से में कहे गए शब्दों की जानकारी लेने पर जुट रहा है शब्द का अन्तरतम में प्रभाव इसी विज्ञान का क्षेत्र बन रहा है। वाद्ययंत्र पर केवल उल्टी सीधी अंगुली आवाज को बनाती है पर क्रमबद्ध और सम्बन्ध ध्वनि, प्राप्त करने के लिए प्रशिक्षित मस्तिष्क और सधे हुए हाथ चला कर अभीष्ट राग उत्पन्न किया जा सकता है इसी दलील की बिना पर मंत्रों से अभीष्ट परिणाम प्राप्त करने के लिए उनका क्रमवद्ध लयवद्ध तथा ताल बद्ध का

विधान आवश्यक है यही असूल हमारे महामंत्र के जाप तथा परिणाम का रहस्य बनेगा मंत्र चमत्कारी क्षमताओं से सम्पन्न होने के कारण विधि विधान का प्रयोग मांगते है तभी इनका आशीर्वाद प्राप्त हो सकता है केवल अंगुली चलाने से न तो दीपक न मलहार राग उद्‌बुद्ध होता है परन्तु विशेष आलाप इन रागों की गूढ़ क्षमता के द्योतक बनते है इसी तरह गायत्री मंत्र के २४ अक्षरों का गुम्फन योग्य अदाएगी से शोभा वर्चस्व तथा रहस्य प्रदान करने वाला होता है इसलिए गायत्री उपासक विधि विधान रहित रहना मात्र न करके सात्विक लाभ प्राप्त करने का सत्पात्र बने इस प्रयोजन के लिए वाणी को वाक के रूप में देखना होगा — वाणी व वाक का भेद हमारी क्षमता को पैदा कर सकता है। वाक शुद्ध वाणी है योग्य साधना से सधो वाक शक्ति (ध्वनि) अपना लक्ष वेंध लेती है। यह मानने की बात है कि हमारी मंत्र विद्या बहुत ऊंचे स्तर की रही इसी मंत्र विद्या से वरदान और शाप भी दिए जाते थे। इतिहास इस तथ्य की साक्षी दे रहा है कि वाक शक्ति जिस पर अच्छा या बुरा आदेश देती थी दूसरे को उसके परिणाम भुगतने पड़ते थे हम अनेक दृष्टान्त पढ़ते है कि अमुक ऋषि ने अमुक को शाप दिया तथा वैसा हो गया यद्यपि हम ऐसी घटनाओं से इन्कार कर देना सुविधापूर्ण मान लेते है पर दृष्टान्त गलत नहीं, सही हैं रोग मुक्ति कष्ट प्राप्ति तथा भरण मोहन किसी युग में तो प्राय: चलते थे इस सबका आधार शक्ति पूर्ण वाक का प्रयोग था यह भी कथा आती है कि महर्षि मैत्रीय ने आचार्य मुदगल से पूछ लिया कि देव मन व वाक (ध्वनि) का क्या सम्बन्ध है जिसका उत्तर यह मिला कि मन सविता है वाक सावित्री है। जहां वाक वहा मन, यह निश्चय किया। संगीत स्वरों से दृष्टि

अन्तराल में क्रांति सम्मोहन करने की एक महान उपलब्धि हमारे शास्त्रकारों ने प्राप्त की थी सिद्ध कर दिखाई थी और काफी समय तक महामनों के उदगार जादू का सा प्रभाव रखते रहे। कहते हैं, इटली की एक युवती ने सामवेद की एक ऋचा पर सितार से अभ्यास किया जिसका साक्षात हजारों दर्शकों ने किया तथा वह मुग्ध हो के हैरान रह गए। फ्रांस की एक देवी ने विभिन्न रागों द्वारा अपने इष्ट देवताओं की स्तुती पूजा से सम्पन्नता को स मानित किया। यह वृतान्त प्रकृति पटल पर सत्य सिद्ध हो चूके है विज्ञान इन्हें स्वीकार चूका है, मंत्र स्वर या शब्द विज्ञान एक ही सत्य वास्तविकता को रूप है। मंत्र शक्ति के भण्डार से मन को एकाग्रता द्वारा शब्द शक्ति का प्रयोग यदि सीख लिया जाए तो मानव महामानव का रूप पेश कर पाता है दूर कहां जाएं...संगीत इस सत्य का जीता जागता संसार है। इसी आधार पर हम अपने इष्टदेव महामंत्र की महिमा को हृदय में बिठा कर पूरी निष्ठा से अलौकिक रचना के भागीदार हो सकते है। हमारे उद्धारक ऋषि लोगों ने तो मंत्र विद्या की खोज द्वारा इतना तक कह दिया कि किस-किस शब्द का किस-किस क्रम से, किस भावना और किस स्थिति में कैसा उक्चारण तीर की तरह वेंध करती हुई अभीष्ट को प्राप्त करती है इसलिए पतित पावनी गायत्री के अक्षरों की उपज प्रयोग जाप न गल्त रही न है और न होगें केवल भेद होगा साधक का प्रयोग कर्त्ता का। इसलिए इस मंत्र की उपासना वैज्ञानिक है सफलता दायनी है तथा लाभपूर्ण है। इसमें कोई संदेह नहीं—यह ठीक है कि हम शक्की मिजाज उबलते व विचारों से सट पटाए फलान्वित होने से पीछे रह रहे है। यही दलील गायत्री उपासकों में बढ़ा पाई उठा पाई तथा साधारण

जीवन से ऊंचा स्तर दें पाई शब्द विज्ञान एक साक्षात युग का वरदान है। हम प्रतिदिन तीन आचमनों से क्रिया शक्ति, भाव शक्ति तथा विचार शक्ति का निर्माण करने वाले है शान्ति शीतलता तथा सात्विकता हमारा लक्ष रहा। जिज्ञासु वर्ग इस शुद्ध प्रयास से सत्कृत होता है यह प्रत्येक के अनुभव की बात है २४ अवतार २४ देवता २४ ऋषि २४ शक्तियां, २४ अक्षरों का ही तत्व ज्ञान प्रदान करती हुई इस महामंत्र को अराधना सफल तथा सराहना के योग्य है। यह बात विशेष तौर पर ध्यान के योग्य है कि व्यक्तित्व को बल देने के लिए वाक की उत्कृष्टता पाई जाए। वाक स्वर साधना ही नहीं परन्तु जीवन साधना के क्षेत्र में होने वाला प्रयोग है इसलिए हवन मंत्रों का उच्चारण यज्ञ की सफलता योग्य स्थान रखता है। मद्य मांस के सेवन करने वाले चटपटी वस्तुओं के आदी भी शुद्ध वाक से वन्चित रहते हैं व्रत से वाक में बल उमड़ता है पवित्रता तथा एकाग्रता के आधार पर आहार की पवित्रता का वाक की शक्ति पर बड़ा प्रभाव है—वाक को काम धेनू भी माना गया है यह परावाक देवों की जननी मानी गई है इसलिए गायत्री मंत्र में वाक तत्व बड़ी महत्ता का है यज्ञ में स्वाहा शब्द का प्रयोग शान्ति भिक्षा का मंत्र विधिपूर्वक वाक देवी द्वारा वैसा ही लाभ व फल प्रदान करने वाला है जैसे उसके बोल हैं। इस महामंत्र के शब्द इस गुन्थन में गुन्थे गए हैं कि योग्य रीति से उच्चारित लय व पारस्परिक सम्बन्ध से यूं जुटते है जैसे सितार के तार बजते है शब्दों की यह प्रणाली बड़े महत्व का विषय है। साधना में प्रवीण व्यक्ति साधु केवल शब्दों की योग्य अदाएगी से कष्ट दूर कर देने का प्रशंसा के पात्र बने हुए है कई ऐसे बुजुर्ग भी देखे हैं जो विधि विशेष से आशीर्वाद के चन्द शब्द ऐसे ढंग से बोल

पाते है जैसे अमृत उतरा जा रहा है। हमारे हां यह प्रथा पुरानी रही है कि बाहिर जाते हुए परिवार के आयुष्मान शुभ भावनाओं से परिपूर्ण महामना लोगों का आशीर्वाद ले के विदा होना एक अत्यन्त आवश्यक भाग होता था। शब्दों की दृष्टि से गायत्री को दो भागो में विभक्त किया जाता है जो भक्ति योग में नवद्या भक्ति के नाम से विख्यात है जिन्हें योगी वर्ग नौ विभूतियां मानते है कर्म काण्ड परम्परा में यज्ञोपवीत के नौ धागे गायत्री माता के नौ सार तत्व, शक्ति सम्प्रदाय में नौ दुर्गाएं का रूप लेती है रत्न राशि भी नौ भागों में विभाजित है सद्‌गुणों का गुच्छा भी नौ की प्रधानता रखता है गायत्री को ब्राह्मण की कामधेनू माना गया है जो ब्रह्मत्व मानवता की शोभा है रामायण में ब्राह्मण के नौ गुण बताए गए है। गायत्री महामंत्र में नौ शब्द का नौ गुणों के रूप में मानव के व्यक्तित्व को आधारित करके उपाधि प्रदान की गई है इनकी धारणा से अंतः क्षेत्र में नौ प्रकार की आस्थाएं नौ प्रकार के व्यवहार नौ प्रकार की प्रगति की प्राप्ति से भावान्वित होने की व्याख्या मिलती है इस तरह यह गुरूमंत्र सर्वप्रकार विभूषित हो रहा है।

अलख निरंजन दुख भंजन – भिक्षामदेहि।

भेंट १६

बलदा माता

शब्द एक है पर व्याख्या, वैज्ञानिक छानबीन अनेक है। कहीं तो गाचेति संवर्गा शक्ति, 'यत्रीतत्र नियंत्रिका' गा अर्थात सर्वव्यापी शक्ति उसे नियन्त्रित करने की विद्या 'यत्री' अर्थात सर्वव्यापी चेतना शक्ति को अभीष्ट प्रयोजन के लिए नियन्त्रित नियोजित करने की कला को गायत्री कहा है ! शतपथ ब्राह्मण में गय कहते है, प्राण को त्री कहते है, त्राण रक्षण करने वाली को—जो प्राण की रक्षा करे उसका नाम गायत्री है। जो गान करने वाले का त्रण करती है वह गायत्री है—गान का अर्थ सम्पूर्ण अन्तश्चेतना में मन का झंकृत हो उठना, उनमें तन्मय हो जाना ही गायत्री का तात्पर्य ठहरा ! यह शब्द गय और त्रण शब्दों से मिलकर प्राण क्षमता का रक्षण करने वाली प्रक्रिया ठहरी ! युग शक्ति गायत्री वालो ने इस मन की विवेचना करके बड़ा उपकार किया है। सविता का वह रूप, जो सबको प्रकाशित करे, जीवन के आधार का मूल आधार ठहरा इस व्याख्या के अनुसार गायत्री दो विद्याएं प्रदान करती है एक सदज्ञान अर्थात ब्रह्मज्ञान दूसरा तेज धारण करने से योग विद्या। इस प्रकार सारांश यह हुआ ब्रह्मा तेज को धारण कराने वाला यह महामंत्र है, एवं ज्ञान व कर्म का प्रतीक, बड़ा उपकारपूर्णं भावनामय सारगर्भित यह पतित पावनी गायत्री

बनी ! बुद्धि भी तुरन्त यही समर्थन करती है, कि श्रेष्ठ ज्ञान को बल प्रदान करके मानव में बसा दे, बड़ा महान अनुदान सिद्ध हुआ। गायत्री उपासना से ऋतम्भरा अर्थात ऋत-सदा सत्य से सम्पूर्ण गायत्री प्रज्ञावान मानी गई। प्राण से सृष्टि की चाल स्थिर है—प्राण शक्ति प्रदान करके सुमति श्रेष्ठ उच्चतम ज्ञान को देने वाली यह माता बड़ी शक्तिशाली मानी गई—यह मंत्र केवल ज्ञान प्रकाश देने वाली नहीं, अपितु प्राण द्वारा घुल मिल जाने का बल भी देकर, इस मंत्र ने जहां अपनी आभा सजाई है, वहां गान करने वाले को भी महान वरदान, प्रचण्ड शक्ति का स्रोत देकर, बड़ा संस्कृत किया है। आत्मिक क्षेत्र में प्राण ही जोवन है—अर्थात् गायत्री सुमति ही जिन्दगी है बड़ी मनोरंजन तथा सुशोभित करने वाली शक्ति की अमृत वर्षा प्राप्त हुई—इसलिए यह कहना कि जो उसका जाप करता है, वह विद्वान, प्राणवान दीर्घजीवी, यशस्वी, सुसम्पन्न, महा-मानव, उदार सात्विक, बनता है। यह व्याख्या जहां प्रिय लगती है, वहां रोचक दिल को भरने वाली, ब्रह्म वर्चस के दर्शन कराने वाली, बड़ो सुन्दरतम परिणाम वाली, कही गई है। यह प्राण रूपी गायत्री जगत की जान रही, आत्मा रही—जिन्दगी देने वाली बनी—प्राणशक्ति से कौन इंकार कर सकता है। प्राण से मानव की सृष्टि चलती है, अर्थात् गायत्री द्वारा रक्षा साधन, बल, व तेज, की प्राप्ति होती है—बड़ी विलक्षण युक्ति युक्त व्याख्या सिद्ध हुई। यह बात मानने के योग्य है, कि यदि केवल इस मन्त्र से सदज्ञान मिला होता—ज्ञान की प्रभुता का वाचक होता, तो रूप और था, पर प्राण जीवन धारण करने वाले होने से सदज्ञान का उपयोग, सार्थकता, सम्पन्नता का होना, सोने पर सुहाग का काम हुआ। भगवान भला करे इन भाष्यकारों का जो इस संस्कृत पुण्य भाषा के अर्थों से सुन्दर

रचना की पुष्टि करते हैं। अतः इस मन्त्र को, इस माता को, बलदा-बल देने वाली मानकर आत्मा गदगद होती है - प्राण जीवन है, गायत्री-उपासना सही जिन्दगी है यह रूप इस मन्त्र के साधक का, जूं कल्पना में आता है, हृदय स्वयं में उत्साह, दिव्यता, सम्पन्नता के भावों से विभोर हो उठता है।

गायत्री माता साधना वाले को बल देकर ऊंचा उठा लेती है, यह वरदान अवर्णनीय, आलौकिक, तथा महामना, कर देती है। गायत्री उपासना में प्राणायाम एक नया अनोखा सारगर्भित पार्ट अदा करता है। यह साक्षी करके गदगद होने की सत्पात्रता प्राप्त करना, बड़ा सौभाग्यशाली बनना है। स्वभाव से ही हम जो त्राण अर्थात रक्षा करे, के प्रति श्रद्धामय हो जाते हैं, इसलिए भी गायत्री मां हमारी रक्षा करती है— बड़ा उत्साहवर्धक भाव लेती है। गुणकारी, दिव्यता दायनी, यह मां हमारे लिए एक नया जन्म देती है, जो सन्तुलित जीवन, सन्तुष्ट वातावरण, हमारे दिलो दिमाग को वेदाग, शान्तमयी, तथा शुद्ध, सरल, विवेकपूर्ण, जीवन का प्रसाद देती है। तपस्या मनुष्य को अग्नि की तरह नखेरती है। इसी तरह प्राण आन्तरिक वातावरण को शफाफ करके प्रयोग में लाने वाला जीवन देते है ऐसा सुरीला जीवन रक्षा करने वाली माता के आशीर्वाद से जिसे मिल जाए, वह बड़ा भाग्यशाली है। इसलिए गायत्री महामन्त्र प्राचीनकाल से महिमायुक्त बनकर अनेक मानव जीवन के कल्याण का हेतू बन पाया। बात से बात बनती है, प्रताप से प्रताप, प्रकाश से प्रकाश, शोभा से शोभा, आभा से आभा, प्राप्त करके गायत्री उपासक निखरता है। मैदान में आता है। तथा आदरणीय करार होता है। गायत्री शब्द के जोड़ शब्दों के व्रत वरदान तथा लाभ सामने रखकर मानव को

मानना पड़ता है, कि चमत्कार प्रगति, तथा दिव्यता इस मन्त्र की क्षमता का प्रमाण है। यह तो पहले कहा जा चुका है कि वास्तविक लाभ तो पाप को छोड़ना तथा सदगुण को स्थान देना ही हमारा लक्ष है। गन्दगी को बाहिर करने का माध्यम प्राण एक माना हुआ अस्त्रशस्त्र है। इसलिए भी प्राण प्रक्रिया आवश्यक है। अध्यात्मवादी यह मानते हैं कि ब्रह्माण्ड भर में प्राण शक्ति व्याप्त है। हम एक वेदमंत्र द्वारा प्रतिक्षण अन्दर के दूषित वातावरण प्राण के माध्यम से बाहिर निकालने तथा शुद्ध वायु के साथ अच्छे विचार व भाव भीतर बसाते है, साधना करने वाले इसी चक्की से अपना बाहिर शोधते जाते हैं, इसलिए बल प्रदान करने वाले, प्राण का हमारे भीतर को शुद्ध करना, सम्मानिता करना, उज्जवल बनाना अत्यन्ता आवश्यक है। इस प्रकार, प्राण दुहरे काम आता है। एक ओर बल संयम मात्र से फोर्स उत्पन्न करना, दूसरा सफाई करना, युक्ति युक्ता बनता है।

विज्ञान यह मानता है, कि लेटेन्ट हीट अर्थात ब्रह्म उषा सृष्टि भर की हलचलें तथा गतिविधि के लिए जिम्मेदार है। गायत्री का सविता देवता प्राण का प्रचण्ड पुज्य इस प्रक्रिया में सिद्ध प्रमाणित होता है। जहां प्राणायाम शरीर को स्वस्थ रखने में साधन है, उसी तरह अन्तःकरण में स्वस्थ प्राण द्वारा अर्थात् गायत्री के पुण्य प्रताप, अर्थात गन्दगी निकालो, सुमति भरो, अर्थात् दुर्मति का हटना, सुमति का आना, गिव एण्ड टेक, के नियमानुसार महान उपकार होता है। इसलिए यह विचार कि हम केवल सद्प्रेरणा मांगते हैं, को बजाए यह धारणा अधिक राम बाण बनती है, कि भगवान के गुणों, उपकारों वरेण्य स्वरूप के बलबोते, सदभावों की स्थापना

करना, गद्दी नशीन करना ही गायत्री माता, विधाता, निर्माण, तथा त्राता का जाप, की उपासना, अधिक लाभपूर्ण बनती है। इस पर जो शब्द स्वरूप वरदान ही त्राण को लेकर आया उसका सदोपयोग भी यही है, कि बलवान होकर दुर्वासनाओं को मिटाते जाना, बड़ा स्वास्थ्यकर है। केवल मांग-मांग नहीं भरती, जब तक मांग से सिन्दूर की लड़ी न पिरोई जाए। अर्थात कर्ण द्वारा लालिमा तथा सुन्दरता, क्षमता, तथा लावण्य को न भरा जाए, इसलिए भी गायत्री शब्दों के आधार पर सत्य सन्मार्गमय प्रयोजन से अपना जादू पूरा करती हैं। 'अग्नि-अग्नि समिध्यते' अग्नि से अग्नि बढ़ती है। प्राण शक्ति से, प्राण के नियम से, रेचक पूरक आयाम, से पापों का निकलना, सदबुद्धि का प्रवेश लेना, महामंत्र की पूजा, आराधना, तथा प्रक्रिया का तारतम्य करार है। बिना फोर्स के सदविचार का आगमन, न तो युक्ति संगत है तथा न ही लाभदायक, न ही पुनर्वास न न ही फिर बसाऊ, न ही टिकाऊ, फैलाऊ, जमाऊ तथा सत्कार व अधिकृत होने का रूप लेता है। इस तरह केवल बुद्धि मांगना बिना बल के जिसके द्वारा स्थान अन्तकरण सुशोभित न हो सके, सही आयाम नहीं बनता इसी तरह प्राणायाम को एक आवश्यक धर्म, कृत्य के रूप में, शामिल किया गया है। प्राणायाम बड़ी महिमा शाली गतिविधि है, इसके ८४ प्रकार है, इस रीति नीति से मानव अन्दर बाहिर शोधा जाकर, बल प्राप्त करना, फोर्स पैदा करना शक्ति सम्पन्न होना, बाहिर निकलो अन्दर चलो, की ऐक्सरसाइज से सदा चलायमान होकर एक बड़ी मिल का काम करता है। हमारे शरीर व आत्मा का सम्मिलित होना, प्राणायाम का मुख्य धन्धा बनता है। अनन्त विश्व ब्रह्माण्ड में, समुद्र में, धरती के भीतर, अन्तरिक्ष में,

विलोड़ने का कार्यक्रम हो रहा है। फिर हम जीवधारी इस मशीनरी से क्यों वंचित रह सकते है हम भी शामिल-ए-हाल हो कर, बुरापन छोड़ो अच्छापन लाओ, दुष्कर्म निकालो, सत्कर्म करो, अशुभ विचारों पर शुभ विचार खड़े करो, दुर्मति को त्यागो, सुमति को लाओ, के प्रोग्राम से क्यों पीछे रहें, यह दूर करना, करीब लाना, केवल मात्र होता है, सुदृढ़ संकल्प से, एक नियमपूर्ण वातावरण से, जिस की कुन्जी भर दी गायत्री मंत्र में। जैसे खिलौना चाबी लेता है, चक्कर काटता है, शिशु को लालायित करता है उसी तरह हमारा प्राण सामने रखा आयाम एक सुनिश्चित प्रोग्राम का परिणाम है। इसलिए शतपथ ब्राह्मण का उपदेश "सा हैषा गयांस्तत्र: प्राणा वै गयास्तत प्राणास्त्रे तद गयास्तोत्र तस्माद गायत्री नाम" अत्यन्त सही सत्य तथा सुनिश्चित है अर्थात उसने गयो की रक्षा की प्राण ही गय है, उन प्राणों अर्थात गयो का त्राण करने वाली का नाम गायत्री है। यह महिमाशाली शब्द वरदान भी तो है, इससे बढ़ कर इसका क्या अर्थ किया जाए कि जो हमारी रक्षा कर दे, सुरक्षित होने के ही रंग ढंग मानव, दिन रात सोचता है भय से, कष्ट से, संकट से, लोक से, देवी देवताओं से, सरकार से, हर बार से, हरबार रक्षण-रक्षण की उमंग सताए जा रही है, वह कितनी भाग्यपूर्ण मां होगी जो भक्त वत्सल को रक्षा का आशीर्वाद दे, छत्र छाया दे दे, इसलिए भी गायत्री उपासना बड़ी लाभदायक महत्वपूर्ण जीवन की सार्थकता जीवन के साथ है। जीवनी चलती, जीवित होने से है। इसलिए गायत्री माता को अपनी जन्म भर में गति देकर हम अपने से, प्राणीमात्र से, मानवता के साथ, भगवान के प्रति बड़ा उपकार करते तथा सृष्टि क्रम में एक महान कार्य सम्पन्न करते है, यही महिमा

मुझे बड़ी प्रिय लगती है, तथा सुशोभित करती है काश मैं इसका सत्पात्र हो सकूं मैं अपनी रक्षा करूं, दूसरों की रक्षा करूं, स्वयं सुरक्षित दूसरों को सुरक्षित होने का मान दे सकू, स्वयं सम्मानित हूं, दूसरों का सम्मान कर सकूं, यह सारा कार्यक्रम, कितना सुन्दर, सुचारू, सरल, सारगर्भिति, युक्तियुक्त हो सकता है, पर उससे जो गायत्री उपासक हैं गायत्री ब्रह्म तेज देती है, यह कैसा सुन्दर रोचक सन्देश है, गायत्री द्वारा ब्रह्म वर्चस हो जाना ब्रह्म तेज से अधिकृत हो जाना, दिव्यता से भर जाना, बुरे के स्थान पर अच्छा हो जाना, सम्पन्न हो जाना, सत्कृत हो जाना, बढ़ जाना, फल पाना, उज्जवल हो जाना, चमत्कृत हो जाना, सार्थक हो जाना, भगवत लीला का एक पुर्जा हो जाना, स्थान पा जाना, महान पिता का सुपुत्र हो जाना, कितना गौरवपूर्ण है, अविज्ञात के गर्भ में एक सम्भावना हो जाना, सुशोभित हो जाना, अनोखापन है, दिव्यता है, इसलिए गायत्री मां की पुण्य स्मृति से अलंकृत होकर हम लाभाविन्त हो सकते है।

अलख निरंजन दुख भंजन भिक्षामदेही

भेंट २०

सौभाग्यशाली गायत्री

स्तुता मया वरदा वेदमाता: प्रचोदयन्ता पावनामी द्विजानाम्
आयु प्राणं प्रजां पशु कीर्ति द्रविणं ब्रह्मवर्चसम् महां दत्वा व्रजत ब्रह्मलोकम्

अथर्ववेद के इस मंत्र में वेदमाता समस्त सुखों को देने वाली है, यह आश्वासन सृष्टि भर को बड़ा वरदान है—सारे देश, सारी भाषाएं, सारी सभ्यताएं, सुमति, सद्बुद्धि, की प्रशंसा करती हैं। किसी ने इसके विपरीत नहीं कहा। स्वर्ण युग में तो था ही, मध्ययुग भी यही हामी भरता है, तथा वर्तमान चाहे हम कितना पतित क्यों न कहें, सदभावना, सदविचार, की भूरि-भूरि प्रशंसा करता है : महर्षि दयानन्द गुरुवर विरजानन्द तो इस महामंत्र के उपासक थे ही। महाराज तिलक कहा करते थे जिस वहुमुखी दासता के बन्धनों से भारतीय प्रजा जकड़ी पड़ी है, उसका अन्त, राजनैतिक संघर्ष मात्र से न हो जाएगा, उसके लिए आत्मा के अन्दर प्रकाश उत्पन्न होना चाहिए, जिससे सत और असत का विवेक हो, कुमार्ग को छोड़कर श्रेष्ठ मार्ग पर चलने की प्रेरणा मिले, जो गायत्री मंत्र का एक मात्र ध्येय है।

महात्मा गांधी भी तो कहते थे गायत्री मंत्र का निरन्तर जप, रोगियों को अच्छा करने और आत्मिक उन्नति के लिए

उपयोगी है। गायत्री का, स्थिर चित, और शांत हृदय, से किया हुआ जप, आपत्ति काल के संकट को दूर करने का प्रभाव रखता है। महामना मदनमोहन मालवीय, कविन्द्र रवीन्द्रनाथ टैगोर योगी अरविन्द, महर्षि रमण, स्वामी राम कृष्ण परम हंस, स्व: विवेकानन्द, स्व: रामतीर्थ अपने-२ युग हिला वही सके, केवल इस महामंत्र की स्तुति प्रार्थना के बल बोते पर। बात केवल लक्ष में ले आने की है। सही तो यह है कि मनुष्य का व्यक्तित्व भी अपने आप में एक विश्व है, यद्यपि यह विश्व छोटा मात्र है, पर उसकी भीतरी तथा बाहरी वस्तु, स्थिति इतनी गम्भीर तथा विशाल है, जिसके जरा उभर पड़ने से आज का गलता सड़ता मानव भी चका चौंध हो सकता है। पर यह विज्ञान, इतना सरल, और गूढ है, कि राह देखते बनती है। इसकी साधना पर निकल पड़ने पर चमत्कार तथा उत्साह भी प्रभु की देन हुआ करती है, जो उसे सहारा देती तथा बल प्रदान करती है।

जहां वेदमाता गुणकारी है, वहां इसका समष्टिगत प्रभाव भी एक अनूठा वरदान है। इसलिए जाप अपितु पारिवारिक सामूहिक रोति नीति से इस महामन्त्र का सौभाग्य प्राप्त होता है। यह एक और विशेषता है। मन्त्र में हमारी बुद्धियों को सत्प्रेरणा दोजिए, ऐसी सदभावना एक नई अनोखी प्रकार की उपलब्धि है। व्यक्ति एक है, इकलापन अपने में गौरव भी है, पर अनेकों से जुड़ कर यह कड़ी बनाता है, अथवा आश्चर्यमय रूपरेखा लेता है। मानव कड़े कड़े भारी उद्योगीय कार्य जब स्वर से प्रारम्भ करते है तो आसमान भी हिला देते हैं। हम लोग डेरा गाजीखां जाते हुए सिन्धु नदी नाव व जहाज द्वारा पार करते थे, तो जहाज व नावों के बादवान चढ़ाते समय कर्मचारी ऐयशा, शब्द द्वारा, एक साथ, एक हाथ, एक स्वरः एक

लक्ष के द्वारा, बल संगठित करते तथा जोर लगाते थे, उसका मर्म भी शक्तिमान का आवाहन, उससे फल की प्राप्ति, एक ध्येय हुआ करती था, इसी तरह बांध बांधना, पहाड़ काटना, मकानों पर बड़े-२ शहतीर चढ़ाना, ऐयिशा की पुकार द्वारा होता था। प्राचीनकाल में यज्ञों पर मन्त्रोचारण वन की जड़ी बूटियों भर को हिला देते थे। एक सन्त ने लिखा है जब तुम अकेले गाओगे तो तुम्हारी आवाज थोड़ी दूर जाकर नष्ट हो जाएगी पर यदि मिलकर गाओगे, तो तुम्हारा नाद प्रत्येक दिशा में व्याप्त हो जाएगा, इसी आधार पर नगर कीर्तन, स्ट्राइक, उत्पात, शोर, शराबा, कारगर होता, दृष्टिगोचर होता है। मेरी अपनी देखी बात है जब प्रभु आश्रित जी गायत्री यज्ञ रचा करते थे, सम्मलित जाप स्वरमय घुन तथा यज्ञीयलय वातावरण को ऐसी गुंजाती थी, कि वहां बैठे बाहिर से गुजरता जन-साधारण मुग्ध होकर चमत्कृत हो उठते थे। सामूहिकता का गायत्री, आलाप, शक्तिशाली होकर अन्तःकरण को फलश करने में सफलता लेता था। इसी आधार पर पुराने वक्त सत्संग, सन्धयोपसना, जुम्मा नमाज, ईश्वर भजन, सफलता प्रदान करते थे। मानव समाज एक दूसरे से बहुत जुड़ी है, इसलिए समुदाय में गायत्री पाठ विलक्षण परिणामों से सुशोभित होती है। प्रार्थना मनुष्य जीवन का प्रकाश है, जब प्रार्थना समुदाय की हो जाती है तो एक गृह के प्रकाश की तरह ज्वाला फैलाती है। सेना जब पुलों को पार करती है पुल पर गुजरते समय लेफ्ट राइट का कदम आवाज से मिलाकर कदम व कदम बढ़ाना बन्द कर दिया जाता है। शब्द शक्ति बड़ी विशाल है इस विशालता के प्रमाण में वाईकाट, सरकारों को अपनी हाहाकार पहुंचाने के रंग ढंग, प्रमाण दे रहे है कि

समारोह का कितना प्रभाव है। महामना लोग जो किसी शुभ लक्ष के लिए जनता को अपील करते हैं, हम एक है की पुकार सोते हुए हृदयों को हिला देती है। बड़े-२ युद्ध संग्राम, हमले, बढ़े चलो, मारो काटो की ललकार से विजय प्राप्ति के दृष्टान्त है। इस महामन्त्र में सबको सुमति दान की प्रार्थना भी अपना जादू रखती है। प्रार्थना काल की सूक्ष्म त्राण क्रिया, व्याप्त वायु जाल को गर्म करके दूसरों के मनों में ओत प्रोत कर देती है। गायन के साथ वादन, चिमटा, खड़ताल, ताली वादन, लय स्वर, के समवन्य से वायुमण्डल को आलोकित कर देना हमारा आए रोज का अनुभव है। सिक्ख भाइयों के प्रात: कालीन पाठ, जो बोले सो निहाल, सत श्री अकाल शब्द हृदय बोध देते है। जब इन ललकारों की पुट पर शुद्ध पवित्र दिव्य शब्दों का गुन्थन हो तथा आत्म संकल्प, दृढ़ विश्वास हो महान शक्ति का आवाहन हो, तो कोई कारण नहीं कि आलौकिक प्रभाव तथा वर प्राप्त न हो यह रूप गायत्री मां को बड़ा सौभाग्यशाली बनाता है। देवता लोग हितकारी सब के कल्याण के इच्छुक है मानव भी यदि सब का कल्याण सबके मध्य सबके साथ मिलकर मांगे, बुलाए तो परिणाम दूर नहीं हो सकते। शब्द विज्ञान-ध्वनि की व्यापकता एक मन, एक स्वर, आवाज, एक मति, एक सदगति एक ही प्रकार का सदव्यवहार महान, एक को भीतर से बाहिर निकाल लाने साक्षात करने, प्रगट होने, प्रकाशित होने, का समर्थन मात्र है। सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु 'निरामया'

सबका भला करो भगवान।
सब पर दया करो भगवान॥

का आर्शीवाद भी तो इसी आधर पर नियत हुआ है। चन्द वर्ष पूर्व १९६५ की भारत पाक युद्ध में हमने स्वयं देखा कि भारतीय सेना-हर हर महादेव की जय जयकार बोलती गई, पाक क्षेत्र में बढ़ती गई। यह सब मनोवैज्ञानिक कौतूहलपूर्ण खेल तमाशे हैं, जिनसे इन्कार नहीं हो सकता, इसी तरह आध्यात्मिक क्षेत्र के साधक भी गायत्री प्रताप का अनुभव करने में सफल हुए है। सदबुद्धि मांग तो यूं की जाती है जैसे सामने विद्यमान हो। प्राप्ति की पूरी आशा, किसी पवित्र तथा शुभ कार्यों से लाभान्वित होने की क्षमता से चूकना पड़ता ही नहीं, श्रद्धा अपना वर देती हैं, गायत्री का ज्ञान स्वयं ज्ञान देता है, साधना राह लेती है, शुभ सकंल्पों की भीड़ उमड़ा करती है, उपासक कृत्कृत्य हो जाता है, उत्साह सफलता एक दूसरे से आकर्षित होते है, । शुभ भावनाओं की होड़ उभरती हैं, मानव शान्ति आनन्द से अधिकृत होता है तथा पवित्र पतित तारनी अपना जल्वा दिखाकर कल्याण मार्ग के पथिक को सत्कृत करती है।

अलख निरंजन दुख भजंन-भिक्षामदेहि।

भेंट २१

विशाल त्रिवेदी

चोदयित्री सुन्ततानां चेतन्ती सुमतीनाम-यज्ञं दधे सरस्वती !

ऋक :

सच्ची और प्यारी वाणी को प्रेरित करती हुई और अच्छी बुद्धियों को चेताती हुई सरस्वती यज्ञ को धारण किए हुए है । गायत्री सावित्री सरस्वती को त्रिवेणी का संगम हमने विचार में लाया था । अब जरा सरस्वती देवी को भी नमस्कार कर लें । जिन्होंने अपने जीवन को यज्ञ बनाया है, वह जानते हैं, कि इस जीवन यज्ञ को जहां अन्य देवो ने धारण कर रखा है, वहां सरस्वती देवी ने भी इसे धारण किया हुआ है । यह देवी दो कार्य कर रही है—यह एक तो सुन्तता वाणी को प्रेरित करती है, और दूसरी सुमतियों को जगाती रहती है—सुन्तता उस वाणी का नाम है जो सच्ची और प्यारी होती है । केवल प्रिय वाणी तो किसी काम की नहीं, किन्तु सच्ची वाणी बोलना भी अधूरा है—सत्य के साथ वाणी में अहिंसा भी रहे तभी वाणी पूरी होती है । तब ही वाणी में प्रेम भी भर जाता है । सरस्वती देवी हम लोगों में ऐसे सत्यमयी और मधुर वाणी को प्रेरित करती है । इस कारण हमारा जीवन यज्ञ मय चलता है, और इसके अतिरिक्त यह सरस्वती देवी इस मूल के एक

ऐसे गहरे और सूक्ष्म अंग को निवाहती है, जबकि हममें यह निरन्तर श्रेष्ठ सुन्दर कल्याणकर बुद्धि को जगाती है, जब जीवन यज्ञ ठीक चल रहा है, तो भीतर-२ सरस्वती देवी हममें शुभ सबकी कल्याणकारी, हितकारी, बुद्धियों, को उत्पन्न करके हमारी वाणी से सच्चे और प्रेममय वचनों का प्रवाह वहाती होती हैं। अतः जब कभी हमारे मन में कोई दुर्मति उत्पन्न होवे, हमारा मन किसी के लिए अहित व अनिष्ट चिन्तन करे, तो जानिये कि सरस्वती देवी ने हमें त्याग दिया है। जब कभी हम अन्तत या कठोर शब्द बोलें, तो समझ लो कि सरस्वती देवी हमारी यज्ञशाला से उठ गई है। मधुर सत्यमय वचनों की अमृत झरना सरस्वती मां की विद्यमानता का एक प्रमाण है यह वरदान इस माता का जो एक ही परिवार की सदस्यता है हमारे लिए नया संदेश तथा आदेश देता है। सत्यं ब्रूयात, प्रियं ब्रूयात, हम वहुत दिनों से कहते सुनते रहे, पर संगम में स्नान पूरे लाभ का तव है जो स्नानगर में पूरी तरह संसकृत हो सके।

सरस्वती देवी के आशीर्वाद निस्सन्देह श्रेष्ठ है पर काल वदल गया है अव तो गलत फहमियां ही इतनी बढ़ रही है, साफ बात न सुनने को तैयार न मानने को। शराफत से बात कहो, तो कोई उसका दाम नही डालता, पर काल होता रहे-नेकी-महान व्यक्तियों के सदव्यवहार न भुलाएं जा सकते हैं, नही दर गुजर। एक-एक दृष्टान्त से लाभन्वित होने की विचारधारा बनाएं तो अच्छा रहेगा।

रेलगाड़ी तेज रफ्तार से जा रही थी। तृतीय श्रेणी के छोटे से कम्पार्टमेन्ट में खद्दर का कुरता और खद्दर की ही

धोती पहने, एक सज्जन बड़ी तन्मयता से अखबार पढ़ रहे थे, उनके सामने की सीट पर एक मुल्ला जी बैठे थे। उन्हें जोर की खांसी आई, खटवार कर बाहर थूकने की तकलीफ न कर, अन्दर के फर्श को ही गन्दा कर दिया होता, यदि आपने वाहर थूका तो कितना अच्छा रहता कोई यात्री यहां आकर बैठेगा तो उसका पैर बिना सने नहीं रह सकता जब हम देश को स्वतन्त्रता दिलाने के लिए जान से प्रयत्न कर रहे हैं तो कम से कम साधारण से श्रेष्ठाचार के नियमों का पालन तो करना ही चाहिये"। उस भद्र पुरुष ने अखबार पर से अपनी दृष्टी हटाकर बड़े विनम्र शब्दों में समझाते हुए कहा। मुल्ला जी किसी का उपदेश सुनने की स्थिति में कहा थे, उन्होंने, चुनौती को भाषा से सामने बैठे व्यक्ति की ओर देखा उनकी आंखों से झलक रहा था—'तुम्हारो ऐसी जुर्रत, तुम मेरा बिगाड़ ही क्या लोगे। वह भद्र पुरुष उठा। उसने अपने अखबार का एक कौना फाड़ा और मौलाना का थूक पोंछकर खिड़की से बाहर फैंक दिया। मौलाना जो मन ही मन तिलमिलाए उन्हें लगा यह कांग्रेसी मेरी तौहीन कर रहा है। उनकी नफरत फिर भीतर से बाहर प्रकट हुई, उनको फिर खांसी आई, और जान बूझकर उन्होंने दो तीन बार फर्श पर ही थूक दिया। उस सज्जन ने सोचा जब व्यक्ति एक बार समझाने पर समझने का प्रयास नहीं करता, तो दोबारा कुछ कहने से लाभ ही क्या है। वे फिर उठे, उन्होंने थूक पोंछकर बाहर फैंका, जितनी बार मौलाना ने अपनी हटधर्मी दिखाई, उतनी ही बार उस सज्जन ने उसे साफ करके बाहर फैंका, जब दुष्ट अपनी दुष्टता छोड़ने को तैयार नहीं फिर सज्जन ही उसे क्यों छोड़े ?

निश्चित स्टेशन आ गया, प्लेट फार्म सैकड़ों स्वयं सेवकों,

कार्य कर्त्ताओं, और दर्शकों से खचाखच भरा हुआ था। महात्मा गांधी जय और भारत माता की जय से आकाश गूंज उठा कार्यकर्त्ता हाथों में तारंगा ध्वजा लिए उनके स्वागत को दौड़ पड़े। गाड़ी रुकी। लोग अपने प्रिय नेता को उसी डिब्बे में देख घेरकर खड़े हो गए। मौलाना को भी यहीं उतरना था। अब उन्हें समझते देर नहीं लगी कि यह कोई साधारण व्यक्ति नहीं वरन विश्वबन्धु बापू है।

नि० लि० दृष्टान्त भी पढ़ने योग्य है जो अदाएगी की पुट में पाठ यह पढ़ा रहे हैं कि कटुता को सात्विकता के जादू से कैसा बदला जा सकता है, दृष्टान्तों से सरस्वती देवी के उपकारों की प्रतिमा प्राप्त होती है।

आचार्य रामानुज मन्दिर की परिक्रमा कर रहे थे। अभी पहली परिक्रमा ही पूरी नहीं हो गई थी, मार्ग में एक शूद्र आ गया। आचार्य का क्रम टूट गया और वे उत्तेजित हो उठे। कठोर शब्दों में कहा—हट जा चण्डाल, तूने मेरी परिक्रमा खण्डित कर दी। 'किधर जाऊँ आचार्य प्रवर'—शूद्र ने विनम्र वाणी से पूछा 'मेरे चारों ओर ही पवित्रता, किधर जाऊं?" जो ज्ञान वेद शास्त्र नहीं दे सके थे, एक शूद्र ने दे डाला— आचार्य बोले "तात तुमने मेरा अद्वैत दर्शन साकार कर दिया। तुमने मेरी आंखे खोल दी", कहकर उन्होंने उसे प्रणाम किया और पूर्ववत परिक्रमा में तल्लीन हो गए।

एक जमींदार ने विधवा बुढ़िया का खेत बलपूर्वक छीन लिया। बुढ़िया ने गांव के सभी लोगों के पास इस अत्याचार से बचाने की पुकार की, पर किसी की हिम्मत जमींदार के सामने मुंह खोलने की न हुई, दुःखी बुढ़िया ने स्वयं ही साहस

समेटा और जमींदार के पास यह कहने पहुँची कि खेत नहीं लौटाते हो उसमें से एक टोकरी मिटटी खोद लेने दे, ताकि कुछ तो मिलने का संतोष हो जाए। जमींदार रजामंद हो गया और बुढ़िया को साथ लेकर खेत पर पहुंचा। उसने रोते धोते एक बड़ी टोकरी मिटटी से भरली और कहा उसे उठवाकर मेरे सिर पर रखवाएं। टोकरी बहुत भारी हो गई थी, जमींदार ने अकड़कर कहा बुढ़िया इतनी सारी मिट्टी सिर पर रखेगी तो दबकर मर जाएगी। बुढ़िया ने उलट कर पूछा यदि इतनी सी मिट्टी से मैं दबकर मर जाऊंगी, तो तू पूरे खेत की मिट्टी लेकर, जीवित कैसे रहेगा ? जमींदार ने कुछ सोचा, उसका सिर लज्जा से झुक गया और उसने बुढ़िया का खेत लौटा दिया।

एक महात्मा पहाड़ी पर चढ़ रहे थे, उसी समय एक दस वर्षीय लड़की अपने दो वर्ष के भाई को गोद में लिए चढ़ रही थी, महात्मा ने कहा बच्ची तू इस भारी बच्चे को गोद में लिए कैसे चढ़ पाएगी। लड़की ने तुरन्त कहा "बाबा यह भारी नहीं है भाई है।' महात्मा गदगद हो गए। जहां प्रेम व भावना होती है वहां कोई काम भारी व कष्टमय नहीं होता अन्यथा भावना न हो तो जीवन ही भारी लगने लगे।

अरब निवासी एक सज्जन श्री नोहेर के पास एक अच्छा सा अश्व था एक अन्य दोहर नामक व्यक्ति को वह अश्व पसन्द आया व उसने अश्व बेच देने का प्रस्ताव नोहेट के समक्ष रखा नोहेर अपने अश्व को अत्याधिक चाहते थे, अतः उन्होंने मना कर दिया। श्री दोहर ने एक षडयन्त्र रचा, वह एक फकीर का वेष बनाकर उस मार्ग पर बैठ गया, जहां से श्री नोहेर गुजरने वाले थे, जब श्री नोहेर पास आए तो दोहर

ने उनसे याचना कि वह उसे अगले गांव तक घोड़े पर बिठाकर ले जाएं। नोहेर को फकीर की हालत पर तरस आया व उन्होंने दोहेर को घोड़ा दे दिया। दोहेर घोड़े पर चढ़कर चले व नोहेर पैदल। थोड़ी देर बाद दोहेर ने घोड़े को दौड़ाना प्रारम्भ किया व श्री नाहेर से कहा देखो—तुमने सीधे रास्ते से अश्व नहीं दिया तो मैंने किसी तरकीव से पा लिया। श्री नोहेर ने शान्त चित से दोहेर से कहा "खुदा की मर्जी, तुम घोड़ा ले जाना चाहो तो ले जाओ परन्तु यह धोखे-धड़ी की बात किसी से कहना नहीं, तो जो भी सुनेगा, वह आइन्दा जरूरत मन्त्रों, दीन दुखियों को सहायता करनें में हिचकिचाहट करेगा तथा उसकी राए फकीरों के बारे में यह बन जाएगी कि फकीरी वेष में लोग छली, कपटी व्यक्ति फिरा करते हैं नोहेर की इन बातों का दोहर पर बड़ा असर हुआ; उसने घोड़ा लौटा दिया, व अपने आपको उसने सुधार लिया।

संसार एक विशाल दुकानदारी है, जहां दुकानदारी एक व्यापार है, वहां खरीद फरोख्त भी एक कला है। वेदमंत्र जिससे यह भेंट प्रारम्भ की थी के विनय में साफ लिख दिया कि निरक्षर भी सरस्वती देवी के प्रसाद का सत्यपात्र बन जाता है। आज का युग बुद्धि मान, होशियार, चतुर लोगों, से पेचीदा तो जरूर बन गया है, पर सरस्वती माता के वरदान से अनेक व्यक्ति अपनी कला कौशल से सफलता भी प्राप्त करते हैं। सरस्वती देवी का उपहार, पुरस्कार विवेक भी है, क्षमता भी है, तख्ता उलटना भी है, सूझ-बूझ से संस्कृत मानव कड़ी से कड़ी मुसीबत को सहज सरल तथा सुचारू बना देता है अंग्रेजी की एक पुस्तक डेलकारनेगी द्वारा लिखित 'मित्र कैसे बनाएं जाएं तथा दूसरों को कैसे मोहित किया जाए।' इन

तरकीबों तरतीबों से भरी पड़ी है । सरस्वती देवी का यह कौशल गायत्री माता का साक्षात अनुदान है। अहिंसा जिसका सार है जिसका सन्तुलन संसार की उच्च कोटी के रहस्यों में किया जा सकता है, एक जीता जागता, सफलतापूर्ण, प्रयोग तथा प्रसाद है। आज के युग में कटाक्ष को दूर रख कर, कार्य सफल कर लेना, युग की पुकार है, खास तौर पर जब लेबर परावलम बढ़ी चढ़ी हुई है। उदाहरणार्थ एक सेना अध्यक्ष ने, अपने सैक्रेटरी को एक रिपोर्ट टाइप करने को दी, रिपोर्ट टाइप करने पर उनमें वहुत अशुद्धियां टाइप की पाई गईं, तव उस अफसर ने टाइप करने वाली देवी को इतना कहकर लज्जित कर दिया कि तुम्हें गुप्त रिपोर्ट को आंखे बन्द करके टाइप करने को थोड़ा कहा था, वह कर्मचारी अपनी कमी तथा दोष भांप गई और शर्मिन्दा हुई । आज की व्यवस्था सुप्रवन्ध तथा क्षमता का सही दारोमदार आधार सरस्वती माता के इन वरदानों में निहित है।

प्रगति का रूप निहार कर गदगद तो होना ही पड़ता है । अव इसका एक पहलू यह भी विचारने के योग्य है, वेदमन्त्रों का सस्वर प्रशिक्षण देते हुए इन्दौर में श्री वीरसेन जहां वेद-श्रमी वेदे विज्ञानाचार्य ने साम गायन मन्त्रगान द्वारा, प्रस्तुत करके श्रोतागण को प्रफुल्लित कर दिया वहां पर उन्होंने एक ध्वनि स्वर, ताल, वाद्य युक्त वेदमन्त्र संगीत द्वारा सुनाए जिससे सुनने वाले आनन्द में निमग्न हो गए, इस लय तथा संगीत ने विदेशियों को भी चकाचौंध कर के वेद पाठ में लगाव वना दिया। अव तो पूना के एक ब्रह्मचारी महोदय ने संगीत द्वारा हवन यज्ञ स्वर तथा ताल सहित खेती को भी लहलहा करके उपज में वृद्धि तथा पवित्र अन्न को बढ़ावा

देकर अमरीका जैसे देश में वेद प्रचार का प्रोत्साहन किया है।

स्व: रामकृष्ण परमहंस यद्यपि बहुत पढ़े लिखे नहीं थे पर सरस्वती देवी के वरदान से युग प्रवर्तक बना एक नया मठ खड़ा करके भक्ति रस से तलमलाती दुनिया को सुखी और शान्त कर गए।

सैल्ज मैन सेल्ज कर्ल्ज की नियुक्ति में भी तो यह राज है, कि वह अपने कला कौशल में वस्तुओं की बिक्री में सफलता प्राप्त करती है, जो आज के युग का पृथक जीवन व उद्योग का केन्द्र बन रहा है।

यह अत्यन्त सही तथ्य है कि प्रस्तुत करना ही एक सक्रिय कला है। कहते हैं एक बृद्ध व्यक्ति की शारीरिक स्थिति बड़ी क्षीण थी, आंखों से उसे ठीक प्रकार दिखाई नहीं देता था, न ही हाथ पैरों से कोई काम हो पाता था, उसके हाथ दुर्बलता के कारण हिलते रहते थे', उसके बेटे व बहू भी उसकी उपेक्षा करने लगे थे, जब वह भोजन करता तो हाथ से कौर ठीक पकड़ भी न पाता बहू घर के बाहिर, मिट्टी के पात्र में भोजन दिया करती, एक दिन वृद्ध के हाथ से मिट्टी का बर्तन गिर कर फूट गया, जिस पर बहू बड़ी झल्लाई और काठ का एक पात्र बनाकर उसे दे दिया -- वह वृद्ध काठ के पात्र में भोजन करने लग पड़ा, उस वृद्ध का पोता यह सब देखता रहता था एक दिन उसने काठ लिया और उसी तरह एक पात्र बनाने लग पड़ा जिसके लिए लकड़ी के टुकड़े को छील कर पात्र का रूप देने लगा—जब उसके पिता ने देखा तो डांटते हुए उससे पूछने लगा कि वह क्या कर रहा है ? लड़के ने उत्तर दिया कि जब आप व माताजी वृद्ध हो जाओगे, दादा दादी की तरह तब

आप दोनों को भोजन कराने के लिए यह पात्र इस्तेमाल करूंगा। जिसका अभ्यास अभी से कर रहा हूं। माता पिता ने सुना तो उनकी आंखों से पानी भर आया और उनकी आंखे खुल गई।

सेल्ज बिक्री एक विज्ञान बन गया है जिसका आधार सरस्वती देवी के वरदान हैं—सभ्य देश व जातियां सत्यपूर्ण व्यापार सुव्यपरिस्थत बर्ताव से सफलता में विख्यात हैं, पर हमारे भारतीय प्रपंच द्वारा नकली वस्तु को सही सिद्ध करने में सफलता मानते हैं। पर वास्तविकता सरस्वती देवी का अनुदान ही खरा उतरा है। कहते हैं एक बार दो सेल्जमैन एक ही जहाज से एक ही देश में दक्षिण अफ्रीका जा रहे थे—दोनों एक ही स्थान पर उतरे, एक ही होटल में ठहरे दोनों सजधज कर, एक सी कारों में मार्किट में निकले, वह अपने देश के बने जूतों की बिक्री का क्षेत्र बनाने गए थे। थोड़े समय पश्चात् एक सेल्जमैन होटल में वापिस आया और उसने अपने देश के मुख्य आफिस को तार कर दी कि साऊथ अफ्रीका के लोग नंगे पांव रहते हैं, अतः वहां जूतों की बिक्री की आशा नहीं होगी, अतः माल तैयार करना बन्द कर दिया जाए—थोड़े समय पश्चात् दूसरा सेल्जमैन लोटा, उसने अपने मुख्य आफिस को तार द्वारा सूचित किया कि यहां के लोग नंगे पांव रहते हैं, अतः वहां बिक्री का बड़ा अवसर है, इसलिए शीघ्र अधिक से अधिक माल तैयार किया जाए। अब विचार की बात यह है कि एक व्यवसाय, एक ही स्थान पर, दो व्यक्तियों की भिन्न-२ भुगतान ने कितना भेद कर दिया, संसार में व्यक्तित्व को बिक्री तथा प्रस्तुत करने का भी यही रहस्य है जिससे सफलता तथा विफलता की प्राप्ति होती है।

अलख निरंजन दुख भंजन भिक्षामदेही।

भेंट-२२

मन्त्र का वाहन शब्द

शब्द स्वयं में चमत्कार है, मन्त्र शब्दों से बनता है, निरुक्तकार तो मन से सचालित होने वाली क्रिया को मन्त्र कहता है, शतपथ ब्राह्मण में शुद्ध वाणी से उचरित शब्द श्रृखंला को मन्त्र कहा गया है, जो भी कुछ हो पवित्र मन से एकाग्रतापूर्ण निष्ठा मन्त्र का आशय पूरा करती है, इसमें तो कोई सन्देह नहीं कि शब्दों का गुंथन रहस्यमय क्षमता, तथा सुरम्य भाव मन्त्र बनते हैं, पर यहां मेरा प्रयोजन शब्द की महानता से है, जो मन्त्र का रूप लेते हैं। शब्दों का जोड़ ही मन्त्र का मूल्य बनाते हैं। शब्द संरचना, शब्द उच्चारण, शब्द की आत्मा बनकर, मन्त्र को सुशोभित करती है। मेरा पूरा विश्वास यह भी है, कि शब्द शुद्ध, शुद्ध वाणी, सात्विकपन से उदघृतत किसी यज्ञ की सफलता का हेतु बनाती है। वह लोग बड़ा अन्याय करते है जो व्युत्पति व्याकरण के बिना वैदिक शब्दों से यज्ञ में बैठ जाते है, ऐसे लोग पुण्य के भागीदार होने की बजाए, पाप मोल ले लेते हैं, मैने तो कई आर्य समाजों से यह प्रार्थना की है कि अपने हां वैदिक पद्धति से शब्दों के सही उच्चारण के लिए किसी सुयोग्य पण्डित से शिक्षा ग्रहण करें, ताकि यज्ञ में श्रद्धा बढ़े, तथा संस्कृति का वरदान मिले, दशरथ के पुत्रेष्ठि यज्ञ का पुरोहित ऋंगी श्रृषि को चुना गया, जबकि उन दिनो विश्वा-

मिल वशिष्ठ अनेक नामवर ऋषि लोग मिलते थे।

शतपथ ब्राह्मण की उक्ति है कि जन समाज का मैल धोने वाला शब्द प्रवाह ही सारस्वत मन्त्र है। जन कल्याण की दृष्टि से किया गया सत्भाषण एवं प्रवचन इस प्रतिपादन के आधार पर मन्त्र साधना के समान प्रभावोपतादक होता है। आज साप्ताहिक सत्संग भी होते हैं, दैनिक यज्ञ भी, पर यह सब परम्परा सी बन गई है, यज्ञ में शामिल होने वाले, न तो सत्कृत होते, न ही लाभान्वित होते है, शब्द की बड़ी महिमा है शब्द को ब्रह्म भी कहा गया है। गुरु ग्रन्थ साहिब की वाणी को शब्द नाम से सम्बोधन किया जाता है। सत्य विचारो को अपनी चेतना में ओत प्रोत करके ऊंचे व्यक्तित्व से शब्द राम बाण का काम करते हैं। शब्द वाणी के पुष्प हैं शुद्ध वाणी अमृतवर्षा है, युग ने शब्द विज्ञान को इतना महान व व्यापक बना दिया हैं, कि एलेकट्रानिक विद्या से शब्द कहां का कहां पहुंचा दिया जाता है, शक्ति मन्त्र से शब्द को प्रभावपूर्ण जादू बना दिया जाता है, सेना में शब्द का प्रयोजन बड़ा विशाल है। एक ही शब्द आदेश है। एक ही बार कहा गया शब्द, सारे प्रबन्ध का प्रतिनिधि है, उसके सन्देश का पालन जीवन या मौत है। शब्द अमूल्य है। सेनानी शब्द बोलता है, सेना उसका पालन करके, क्रियाशील होती है। किसी को उसमें आपत्ति, ढील का, अवसर नहीं दिया जाता, आज तो घरों में टैलीफोन भी एलेकट्रानिक चल रहे है। शब्द को इस तरह विद्युत युक्त कर दिया जाता है, कि शब्द फैल भी जाता है, योग्य स्थान पर पहुंच भी जाता है। सार्थक होता, महात्म को उदबुध करता है। महामना लोग बोलते क्या है, फूल उछालते हैं, एक बार सन्त विनोबा पठरपुर के सर्वोदय सम्मेलन में

वाणी की उपासना पर प्रकाश डालते हुए कह रहे थे, कि मेरा बोलना जप के लिए है जिन विचारों को बोलता हूं, वे दृढ़ होते चले जाते हैं, जो किया है, आप लोगों ने किया है, मैंने तो जप किया है—भूदान का जप किया तो भूदान मिला।

सम्पत्तिदान का जप किया तो सम्पत्तिदान मिला—न तो मै यज्ञ करता न दान करता हूं न तप करता हूं मैं तो केवल जप ही करता हूं, और मेरे सारे काम बन जाते हैं। कितना महान व्यक्तित्व है, कि उनका जप ही तप है। सर्वसाधारण बोलने व तोलने में कोई भेद नहीं मानते, यूं तो शब्द है पर जैसे विद्युत भरा शब्द—एलैक्ट्रानिक द्वारा व्याप्त शब्द, फैलने व शक्ति सम्वल होने का सौभाग्य लेता है, वैसे ही आन्तरिक ऊर्जा से सम्पन्न शब्द भी रामबाण सिद्ध होता है, देवता होने के लिए मात्र ज्ञान व शक्ति का पुंज होना पर्याप्त नहीं पर अपनी शक्ति व ज्ञान से लोक कल्ताण व लोक निर्माण की शुभ आकांक्षा से अपने अन्तरतम को रंगना भी आवश्यक है, वेद मन्त्रों में तो यह भी कहा गया है कि जितनी हमारी जिह्वा की लम्बाई चौड़ाई है, उसका तीन गुना भीतर में समाविष्ट है, अर्थात भीतरी बल द्वारा हमारी जिह्वा गतिशील होती है ,मौनवृती शब्द की शक्ति को बचाते हैं। विचार की भट्टी में शब्द दृढ़ता प्राप्त करते हैं। ऐसे बोल जब निकले ऊपर एक अमोघ शक्ति का रूप लिए होते हैं, मानव गणित तो पढ़ा पर यह निर्णय नहीं कर सका कि दिन भर में कितने सार्थक तथा निरर्थक बोल बोले। शब्द की महिमा महामन्त्र के सन्दर्भ में इसलिए भी जांची जानी उचित है, कि वाक शक्ति का सुन्दर प्रयोग, आत्मा की शोभा बनाता है। प्रौढ़ता आत्म ज्ञान के सहारे उभरती और बढ़ती है। शब्द तो ऐसा पालना चाहिए जैसे

बच्चे को माता पालती है। सुरक्षित शब्द, सुलझाशब्द, विचार की गोदी में पला पोसा शब्द जहां मन्त्र को शोभा बनता है, वहां मानव के प्रतीक की सीढ़ी बनता है। हमारे दिन भर के बोल हमें बता सकते है कि कितनी शक्ति व्यर्थ में गई जो असत्य भाषा, बे मौका का उदगार, बेमतलब का व्यवहार, हमारे स्रोत को घाटे का सौदा दे पाया इस सबसे विलक्षण बात ज्ञान में आई, वह है, इस महामन्त्र के जप से उत्पन्न परा-ध्वनि में सारे वातावरण को प्रभावित करने की क्षमता है, जो भी सात्विक जीवन जीना सीखे, वह इस पराशक्ति का उपयोग कर सकता है। विज्ञान ने इस विषय में एक नई छलांग लगाई है, वह संवहन शक्ति का उपयोग, भारतीय मन्त्र विद्या में शब्दों की पराध्वनि, रोग निवारण में सफलता ले पाई है। विदेशों में इस शक्ति का लाभ उठाया जा रहा है, इसे अलट्रा साऊन्ड का नाम दिया गया है। इसे चिकित्सा जगत में एक क्रान्ति की संज्ञा दी गई है। युग शक्ति गायत्री पत्रिका अक्टूबर १९७९ के अनुसार (१) एचिव्स आफ फिजीकल एण्ड रिहैबिलेशन् महिमा का वर्णन छपा था। उस महिला की उंगलियों को ये ~~एक महिला~~ लकवा मार गया था, जिसके कारण वह उंगलियों में किसी प्रकार की हरकत न कर सकती थी। किन्तु जब उसकी उंगलियों पर पराशक्ति पराध्वनि की चिकित्सा का प्रयोग किया गया, उसकी उंगलियां पूरी तरह ठीक हो गई, यहां तक कि वह अपने जूते स्वयं बांध लेती थी। साल पट्रो हस्पताल पेरिस में ऐसे १, लाइलाज रोगियों को इस कर्णातीत ध्वनि शक्ति से ठीक कर दिया गया, माऊंट सिनाई हस्पताल न्यूयार्क में एक ऐसा आग से जला व्यक्ति आया, जिसकी उंगलियां जलकर पिघल गई थीं, उन्हें काट देने के अतिरिक्त कोई उपाय शेष

नहीं रहा था, उन पर अलट्रा साऊन्ड ध्वनि का प्रयोग किया और वह व्यक्ति पूरी तरह स्वस्थ हो गया, अलट्रा साऊड व मन्त्र शक्ति में इतना ही अन्तर है कि मन्त्र की ध्वनि को चक्रों की विद्युत शक्ति का रोग की कठिन स्थिति से भी वेध जाने योग्य बनाती है, जब कि ट्रान्सडयूस्र यन्त्र में कर्णलील ध्वनि की विद्युत शक्ति यह सामर्थ्य प्रदान करती है।

इस मन्त्र द्वारा सामान्यत: २० हजार साइकल प्रति सैकण्ड से ८० लाख और एक करोड़ साइकल प्रति सैकण्ड तक बढ़ा दिया जाता है। यह स्मरण रहे कि शब्द की गुंजान शक्ति को सामर्थ्य मिलती है, अन्त:करण की पवित्र ऊर्जा से यद्यपि शब्द की महिमा व सशक्त होने को माना तो जा रहा है पर उसका असली प्रयोग कम होता जा रहा है। संसार में घड़े भगवान इस शब्द व मन्त्र विद्या से अपनी सर्वप्रियता बढ़ा कर, भक्त वर्ग को प्रभावित करने में समर्थ हो रहे हैं। युग शक्ति गायत्री के जुलाई १९७९ के अंक शब्द की महिमा में दो प्रयोग प्रदर्शनी में उदधृत किए गए हैं, जो हमारे पक्ष का पूरा समर्थन करते हैं। प्राचीनकाल शब्द विज्ञान ही ज्ञान भण्डार का एक मात्र साधन था। शब्द पकड़ने वाले छात्र, तपस्या में रत, जिज्ञासा से भरपूर, पहुंचे हुए गुरु वर्ग की शरण में कृतकृत्य होते थे। कहा जाता है अब से पांच छ: वर्ष पूर्व दिल्ली में अन्तर्राष्ट्रीय उद्योग प्रदर्शनी के अमेरिकन कक्ष में एक ऐसो रेलगाड़ो दिखाई गई, जिसमें मशीनरी रेडियो संचार व्यवस्था के अनुसार बनी थी। प्रदर्शन कर्त्ता कुछ शब्द बोलता था, उन शब्दों से जो ध्वनि तरंगे निकलली थी, उन्हीं से प्रभावित होकर रेल चलती, दौड़ती, मुड़ती और खड़ी हो जाती थी। प्रदर्शनकर्त्ता दर्शकों को समझाता था कि शब्द अपने आप में एक शक्ति है।

सन् १८२३ में जर्मन विज्ञान सभा के तत्वावधन में कुछ ऐसी मनुष्य आकृति यन्त्र बनाए गए थे, जो देखने में बिल्कुल मनुष्य जैसे लगते थे, वे चलते दौड़ते, खड़े होते, बैठते और मुड़ने में ठीक फौजी की समता करते थे। इतना ही नहीं वे कुछ प्रश्नों का सही उत्तर भी देते थे। बन्दूक का भी निशाना साधते थे। उनकी यह सारी गतिविधियां निदेशक द्वारा उच्चारण किए गए शब्दों पर निर्धारित रहती थी। बर्लिन की विज्ञान प्रदर्शनी में उन्हें जन साधारण को दिखाया गया था और बताया गया था कि शब्द में वह क्षमता मौजूद है कि वह इन यन्त्र मानवों को इच्छानुसार कार्य करने के लिए तत्पर कर सके। शब्द वास्तव में भीतर का प्रगटीकरण है, शब्द की महिमा से ही आज्ञापालन, प्रस्थान तथा कार्य गति बनती है। शब्दों के आधार पर क्रियाशीलता मूक क्रियाशीलता से भिन्न है। शब्दों के उच्चारण से पक्षी लोग आकाश को गुंजाते हैं। पशुवर्ग अपनी स्थिति तथा आवश्यकता का बोध कराते है, यही शब्द है जिससे मानव समाज उथल-पुथल लेता है, शब्दों के द्वारा ही हम अपने आराध्य देव को सम्बोधित करने हेतू, शक्ति संचालन करने तथा योग्यता का प्रमाण पत्र देते है, शब्द मंत्रों का कहा यूं भी सिद्ध है कि शक्ति सम्पन्न इसकी सहज आत्मि प्रतीक है इस लिए हमारे ध्येय गायत्री मंत्र के शब्द जहां गुंधे फूल हैं वहां महानता पवित्रता में ओत प्रोत शक्ति संचार का रहस्य अपने आंचल में छिपाए हुए हैं जिन्हें साक्षात करना, सातविक्ता भरना, अकाट्य शक्ति का स्रोत करार होते हैं।

अलख निरंजन दुख भंजन भिक्षामदेहि।

भेंट २३

गायत्री वेद माता

पुरोया गायत्री २४ अक्षरों का एक फूल, पर वेद तो अथाह ज्ञान का भण्डार यह कैसे सम्भव है कि माता ही गायत्री ठहरी मैं युग शक्ति गायत्री के सम्पादक महोदय की सराहना किए विना नहीं रह सकता, जिन्होंनें बड़ी गम्भीरता से इस गहन विषय को जन कल्याण के लिए खोला है। सूक्ष्म से स्थूल का होना, परमाणु से सृष्टि की रचना, ज्ञान अक्षरों तथा शब्दों से उदबुध होना संसार भर का नियम दिखता है, धन्य थे वह महामानव जो चन्द सूत्रों से इतना विस्तार कर लेते, जिन्हें वाद में ग्रन्थ लिखने का सौभाग्य मिला—कहते हैं पाणिनी जी ने केवल १४ सूत्रों से व्याकरण का मूल स्रोत बनाया, जो महा व्याकरण की रूप रेखा ले बैठा चलते-२ व्याख्याएं इतनी वढ़ीं कि आज एक पुस्तकालय केवल व्याकरण का देखा जा सकता है। इसी तरह गायत्री सूत्र हैं, ऋचाएं उसकी विस्तार पूर्ण व्याख्याएं, गायत्री को वेद माता इस लिए भी कहा जाता है कि सवसे पहले ब्रह्म ने ब्रह्मा को गायत्री मन्त्र की दीक्षादी ब्रह्मा ने इस महामन्त्र का जप किया, तपस्या की, जिसके परिणाम स्वरूप ज्ञान विज्ञान सूझे, जिनके चार भाग बने, जिन्हें भिन्न-२ नाम मिला। शास्त्रों में उल्लेख आता है कि ऊँ० भू० भुवः स्वः के शीर्ष भाग की व्याख्या से ऋगवेद बना, तत्सवितु

वंरेण्यं का रहस्य भरा यजुर्वेद में भर्गो देवस्य धीमहि का सार आया सामवेद में तथा धियो नः प्रचोदयात का तत्व मिला अथर्वेद को। इस तरह ज्ञान विज्ञान की स्रोत वेद आदि सत्य विद्या का उदगम इस महा मन्त्र से प्राप्ता हुआ। तभी तो याज्ञलक्य महर्षि ने लिखा है, गायत्री विद्या का आश्रय लेने वाला वेद ज्ञान का फल प्राप्ता करता है।

गायत्री साधक के हृदय में वे झलक अपनें आप उठती है जिसके लिए वेद विद्या का परायण किया जाता है। यह शब्द हू बहू मैं युग शक्ति गायत्री के अंक नवम्बर १९७९ से लेकर लिख रहा हूं। गायत्री उपासक के व्यक्तित्व में ऐसा ओजिस, तेजस, एवं वर्चस, प्रकट होता है, जिसके सहारे यह महान कार्य सम्पन्न हो पाता है। ऋक को धर्म मजु को मोक्ष साम को काम अथर्व को अर्थ भी कहा जाता है। हम अदूरदर्शी ब्रह्मा जी को चार मुख का मानकर हंसी मजाक कर लेते हैं, वास्तव में चार प्रकार के ज्ञान को प्रकाशित करने वाले के कारण उनकी चार धाराओं का प्रवाहित करने वाले ही इस उपाधि के सत्पात्र बने। ऋक यजुसाम अथर्व को कल्याण पौरुष क्रीड़ा कलोल और अर्थ भी कहा जाता है जो मुख्यतः सारी गति शीलता की रूप रेखा लेती है। इसलिए एक वेद को सुविधा के लिए चार भागों में वांट कर इस महान ज्ञान का विस्तार हुआ विष्णु भगवान की चार भुजांए भी यही हैं, इस ज्ञान गंगा में सफली भूत करने के लिए चार आश्रम चार वर्ण की व्यवस्था बनी। बालक क्रीड़ा अवस्था में, तरुण अर्थावस्था में, वानप्रस्थ पौरुष अवस्था में संन्यासी कल्याण अवस्था में रहता है। ब्राह्मण ऋक है, क्षत्री यजु है, वैश्य अर्थ है, साम शूद्र एवं चतुर विभाजन बना। इस तरह एक ज्ञान गायत्री के चार रूप

प्रकाश में आए, जिन्हें चार वेद का नाम मिला । गायत्री का अवाहन करने वाले चारों ऋषि सनक सनंदन सनातन सनत्व कुमार वेद भगवान, अवतार कहलाए, चार वर्ण चार आश्रमों की परम्परा, चार वेदों की पद्धति बनी । तत्व ज्ञान, सदज्ञान आत्मज्ञान, ब्रह्म ज्ञान, से सम्पन्न यह चार वेद दिव्य प्रेरणा के स्रोत बने, यह महा मन्त्र केवल सत्प्रेरणा के कारण मंगलमय नहीं बना, अपितु रहस्यमय ज्ञान विज्ञान जो तप साधना से पुनः प्राप्ति होती है, उससे वेद माता की परिधि में समाविष्ट है । शास्त्रकारों ने इसे शिरोमणी मन्त्र कहा है, जिससे ज्ञान के चार प्रवाह भी इससे प्राप्त होते हैं । इस मन्त्र को भारतीय संस्कृति की जननी कहा गया है । इस मन्त्र में शिक्षा व सामर्थ्य भरा पड़ा है । ब्रह्म वर्चस का सारा तेज इस मन्त्र में सन्निहित है ।

इन २४ अक्षरों में २४ शक्तियां समाविष्ट है । श्रद्धा में रंगे सन्तजन २४ ऋषि २४ देवता २४ अवतार इत्यादि मिलते हैं ।

यह तो रहे प्रमाण शास्त्रों के, जिनके आधार पर गायत्री को वेदमाता के नाम से अलंकृत किया । अब प्रत्येक अपने भीतर के भगवान से जांच करके देखले कि जब रीति नीति से प्रचोदयात की मांग में ध्यान करते हैं, उस क्षण विवेक से बुद्धि वह रास्ता दिखा पाती है, जो हमारी समस्या का हल कर देता है । यह उत्तर, यह प्रतिक्रिया, यह प्रति ध्वनि, ज्ञान क्यों न कहा जाए । वेद भी तो ज्ञान है, समयानुसार कोई ठिकाना मिल जाना, सान्तवना मिल जाना, पुण्य स्रोत गायत्री माता शुभ नाम लेकर हम पवित्र भाव से यह कह दें, कि हमारे

लिए ज्ञान देनें वाली, यह ब्राह्मणी हमारी सही अर्थ में वेदमाता है, तो इसमें न अत्युक्ति तथा न कोई आपत्ती है। माता वह है जो सबको समय-२ पर अपने प्रताप से सुशोभित करके उसका क्षण निभा दे, सुलझा दे, इसलिए भी इसे वेद माता मानने में हमारा सौभाग्य है। मानना एक ढंग है, प्रयोग में लाकर लाभन्वित होना भी एक ढंग है, जिसकी व्याख्या यह जड़ कागज सम्भवतः न कर पाए, पर पुकार पर प्राप्ति कर सकनें वाला पुजारी सम्मानित होने वाला, समय को निपट सकने वाला, जो भी कृतज्ञता प्रगट करे वह थोड़ी है

मैं अपने जीवन की साक्षी में कुछ समर्थन में कह दूं तो शायद अपनी स्तुति बन जाए, पर अनुभव को छिपाना, फिर उस समय, जब मेरे सन्मुख क्षेत्र तथा विषय ही ऐसा है— अन्याय होगा-एवं अपने निजी अनुभव के आधार पर मैंने हर संकट में हर दुविधा में, हर क्षण मैं प्रचोदयात की पुकार से कुछ न कुछ ऐसा पुरस्कार पा लिया, जो मेरी सफलता का कारण बना। यातायात एक पेचीदा मसला है एक ओर लेबर, दूसरी ओर से सड़क पर मुकावला, यात्रियों की मुठभेड़, समस्याएं, प्रतिक्रियाएं मुझे निष्कण्टक तथा निर्विघ्नता से कार्य सारणी में बचाव देकर आगे कर गया। मैनें वह समय भी देखा जब हजारों की संख्या में प्रतीक्षा करते हुए यात्री, थोड़ी बसें, मुश्किल का सामना अन्धकार का सामना, पर मां करके जब उसे पुकारा, इस माता ने तुरन्त प्रसाद दिया, मुश्किल हल हो गई तथा यातायात बिना किसी प्रतिरोध चल पड़ी। मेरे साथ के दूसरे क्षेत्रों में हड़ताल पर मेरा क्षेत्र बिना किसी गड़-वड़ के सहज में चालू रहा।

यह समय यह अवस्था मेरे लिए एक चमत्कार भी था,

विलक्षणता भी थी, और माता का साक्षात्कार भी था। ऐसे अनुभव तथा प्रयोग के आधार पर मैं इस माता को वेद माता कहकर पुण्य स्मृति कर लूं तो मैं ज्ञान देने वाली, शुभ प्रेरणा देने वाली, समय निभा देने वाली माता को, वेदमाता, आंखें देने वाली, राह दिखाने, बताने तथा दिलाने वाली सम्बोधित कर दूं तो मेरे विचार में कोई त्रुटि नहीं गिनी जाएगी। यह वेद माता अन्तरिक क्षेत्र को पूर्ण स्वाभिनी हृदय तथा मस्तिष्क को सम्भालने वाली को जितना प्रणाम कर दूं, मान दे दूं, स्थान बिठा लूं, सहारा ले लूं, सुशोभित कर लूं सही दुरुस्त तथा उचित है। हर आश्रम का सत्यपात्र इस माता से सत्कृत हो पाता है, निष्ठावाला पुरुस्कृत हो जाता है—यह सत्य है, अनुभव है, सही है, अवसर अवसर के अनुसार प्रसाद है, ऋषियों मुनियों की बात, ऊंचा, स्तर, और रहा, जगत में भटका भी इस महामन्त्र से लाभन्वित हो जाता है, हो पाता है इसके आधार पर वेदमाता की शरण पाता है यह ठीक है ठीक है ठीक है।

अलख निरंजन दुख भंजन भिक्षामदेहि।

भेंट २४

जीवन यज्ञ व गायत्री

यह जीवन एक यज्ञ है प्रत्येक प्राणी अपने-अपने यज्ञ का यजमान है, हर यज्ञ का प्रसाद इष्ट आशीर्वाद गायत्री है। प्रत्येक की दिनचर्या यज्ञ आहुति है गायत्री उसका पुण्य लाभ तथा पुरस्कार है। अब जरा इस रूपरेखा को परखने का प्रयास करें।

ऋगवेद कहता है "तमध्वरेषु ईडते देवं भर्त्ता अमर्त्यम यजिष्ठं मानुषेजने" जिसका भावार्थ निम्न है नाना प्रकार के यज्ञों में जो हम विविध कर्म करते हैं, असल में हम उन सब कर्मों द्वारा उस अमरदेव का ही पूजन करते हैं, हम मरण-शील मनुष्यों को अमरदेव के ही भजन करने की जरूरत है। प्रत्येक यज्ञ कर्म का प्रयोजन यही है कि हम इस द्वारा मृत्यु से पार हो जाएं, अमर हो जाएं। यज्ञ मर्त्य को अमर बनाने के लिए ही है, पर हम यज्ञों द्वारा, जिस अमरदेव की पूजा करते हैं, वह अमरदेव कहां पर है। सुनो, वह अमरदेव प्रत्येक मनुष्य-जन में है, प्रत्येक मनुष्य में यजिष्ठ होकर, विद्यमान है। हमें प्रत्येक मनुष्य में उसका भजन करना चाहिए। इसलिए कहा जाता है कि यज्ञ सब मनुष्यों के हित के लिए होता है, यज्ञ का स्वरूप परोपकार है। एक-एक मनुष्य का हित साधन है। मनुष्यों की सेवा करना ही यज्ञ करना है, जितना हम मनुष्यों

की सेवा करते हैं—मनुष्यों की पीड़ाओं और दुःखों को दूर करने के लिए निःस्वार्थ भाव से यत्न करते हैं, उतना ही हमारे ये कार्य यज्ञ होते हैं—अग्निहोत्र द्वारा किए जाने वाले पुराने ऋतु यज्ञादि भी आधी दैविक देवों की अनुकूलता प्राप्त करके मनुष्य जनता के हित के प्रयोजन से ही किए जाते थे। पर इतने से भी यज्ञ का तात्पर्य पूरा नहीं होता, मनुष्यों की जिस किसी प्रकार की सेवा करने से यज्ञ नहीं हो जाता हमने तो प्रत्येक मनुष्य में उस अमरदेव का ही यजन करना है। जिस सेवा से मनुष्य के अमरदेव की सेवा नहीं होती, वह सेवा नहीं है, वह सेवा यज्ञ नहीं है, भोग-विलास की सामग्री जुटाने से बेशक मनुष्यों की तृप्ति होती दिखती है पर यह मनुष्यों की सच्ची सेवा नहीं है। ऐसा परोपकार यज्ञ नहीं अयज्ञ है। इसी प्रकार भूखों को इस तरह अन्न देना, रोगियों को इस तरह औषध देना भी जोकि उनकी सच्ची उन्नति में, उन्हें अमर बनाने में, बाधक होवें यह भी यज्ञ नहीं है। अर्थात् जनता की भौतिक उन्नति साधना तभी तक यज्ञ हो जब तक कि यह भौतिक उन्नति उनकी आध्यात्मिक उन्नति के लिए ही हो। आध्यात्मिक उन्नति करना ही दूसरे शब्दों में मर्त्य से अमर बनाना है। आओ हम मर्त्य अमरदेव की पूजा करें, मनुष्य की ऐसी सेवा करने में अपने को खो देवें जो सेवा उनके अमर बनने में सहायक हो। यह तो कहा वेद भगवान ने और जो किसी मानव ने भी उसकी रूप रेखा देखी हो तो यह भी विचारणीय है, बात गुजरात के एक छोटे से गांव की है उस दिन सुबह ही सुबह वहां के एक सम्भ्रान्त सज्जन की राह चलते अहमदाबाद की सड़क पर एक ग्रामीण से भेंट हुई। वह ग्रामीण अपने कन्धे पर लहू-लुहान कुत्ते को बिठाए धीरे-धीरे बढ़ता जा रहा था।

उन सज्जन से न रहा गया। आखिर सहज से ही पूछ बैठे क्यों पटेल ! इस कुत्ते को कहां ले जा रहे हो।

मेरे गांव का यह आवारा कुत्ता है, किसी के घर में घुस कर कुछ नुकसान कर दिया होगा सो इसकी इतनी पिटाई हुई कि रीढ़ की एक हड्डी टूट गई और घाव हुआ सो अलग आप देख ही रहे हैं कि घावों से खून छलक रहा है। गांव के दो-चार लोगों ने बताया कि यदि शहर के मवेशी अस्पताल में इसका इलाज कराया जाए तो अच्छा हो सकता है।

दो तीन मोटर वालों से भी मिन्नतें करता रहा पर उन्होंने भी जगह नहीं दी अतः पैदल ही कन्धे पर बिठाए इसे यहां तक ले आया यदि अच्छा हो गया तब तो ठीक है, अथवा भगवान की मर्जी। इस प्रकार पटेल ने सारी बात कह सुनाई। वह सज्जन इलाज के लिए उस पटेल को दो-तीन रुपए देते रहे पर उसने एक भी पैसा न लिया। वह घर से दो रुपये लेकर चला था। उसे बात करते काफी देर हो गई थी। कुत्ता भी कन्धे पर ही बैठा था अतः नमस्कार किया और मवेशी हस्पताल की राह पूछकर चल दिया।

वे सज्जन उस पटेल को जाते हुए देखते रहे और तब तक खड़े रहे जब तक उनकी आंखों से ओझल नहीं हो गया कभी उन्हें उस ग्रामीण में भगवान बुद्ध की करुणा दिखाई देती और उस समय का दृश्य सामने घूमने लगता जब यज्ञ में बलिदान के लिए आए मेमने की रक्षा उनके द्वारा की गई थी।

कहा बौद्ध धर्म के प्रचारक भगवान तयागत और कहा अमेरिका जैसे महान राष्ट्र के राष्ट्रपति, पर इनकी तुलना उस

अशिक्षित ग्रामीण से की भी कैसे जा सकती थी। उन सज्जन को तो उस समय ऐसा अनुभव हो रहा था मानो करुणा ने ही मोतियों को एक सूत्र में पिरो दिया है।

स्व: रामतीर्थ ने सही तो कहा था कि बाल्यावस्था तथा यौवन को पार किए बिना कोई वृद्ध नहीं हो सकता—ठीक इसी तरह कर्त्तव्यनिष्ठ तथा समाजनिष्ठ हुए बिना कोई ईश्वर निष्ठ भी नहीं हो सकता—मन बहलाव वाली भक्ति की लत दूसरी है पर यदि हम वस्तुतः ईश्वर तत्व तक पहुंचना चाहते हैं तो पवित्र जीवन और सेवा धर्म की टांगों की सहायता से उस महान यात्रा को पूर्ण किया जा सकता है। यह विचार थे स्व: रामतीर्थ के जिन्होंने ईश्वर भक्ति का सही स्वरूप प्रस्तुत किया अपने छोटे से काल में वेद भगवान स्वयं कह रहे हैं कि जिस प्रकाशक प्रभु के बिना बड़े-बड़े बुद्धिमान अक्लमन्द का भी यज्ञ सिद्ध नहीं होता वह प्रभु बुद्धियों के योग में व्याप्त हो जाता है। ऋग्वेद का मन्त्र इस प्रकार है—

'यस्मानृते न सिद्धाति यज्ञो विपश्चितश्चन स धीनां योग-मिन्वति।'

यही हमारे महामन्त्र का उद्देश्य है। यह धारणा इतनी अकाट्य है कि कोई उत्तर बन नहीं पड़ता—बुद्धि ही एक तत्व संसार भर का जिससे मानव की यात्रा चलती है, परोपकार सेवाभाव ही सही यज्ञ है बुद्धि जिससे निखरती है तथा ठीक दिशा लेती है संसार भर के जीवन यात्री (प्राणीमात्र शब्द नहीं लिखा जा रहा) जो जीने की कला के सत्पात्र हैं, सन्मार्ग निष्ठा का आश्रय लेकर सफल जीवन जी पाते हैं, आन्तरिक

सम्पन्नता जीवन मार्ग निश्चित करती है, व्यक्तित्व इसी से उभरता है, मनुष्य अपनी भावुकता को सुरक्षित रखकर विवेक-शील होकर स्वभाव से ही शान्तमयी उच्च आदर्श के पालनहार बनते हैं। प्रौढ़ता आत्मा ज्ञान के सहारे उभरती और बढ़ती है, प्रौढ़ता के साथ जुड़ा हुआ आत्मज्ञान मस्तिष्क को कोठरी में दोनों से अपना बचाव करता है। एक ओर दोषों का त्याग और दूसरी ओर श्रेष्ठता का सम्वर्धन जिसका स्वरूप हम भर्गः देवस्य धीमहि में देख ही चुके हैं, आज के युग में विज्ञान सारी ओर पंख फैलाकर अपनी सार्थकता बढ़ा रहा है। अब एकालोजी एक नया विज्ञान खड़ा हो गया है जिसकी मान्यता यह है कि सृष्टिभर सन्तुलन पर खड़ी है, मानव भी सन्तुलन से ही अपने यज्ञ को रूप दे पाता है।

मनः स्वस्थ का आधार ही सन्तुलन है गायत्री माता सहज स्वभाव शान्तचित्त, सुलझा मस्तिष्क द्वारा मानव जीवन के कल्याण का आशीर्वाद देती है। भला हो अखण्ड ज्योति वालों का जिन्होंने इस जीवन यज्ञ की परिभाषा अपने अंक मास मई १९६२ में वर्णन की है जो कल्याणकारी विभाजन को सत्कृत करती है, २४ की लड़ियां २४ की गिनती इस महामन्त्र में इतनी ओतप्रात हुई है कि अनेक प्रकार से लड़ी पर लड़ी सुशो-भित होती गई है। जीवन यज्ञ है—गायत्री उसका इष्ट, समय उसका हविष्य, संयम पराक्रम और परमार्थ के रूप में उसे वसुरुद्र और आदित्य के अनुशासन में चलना चाहिए। जो इस अध्यात्म रहस्य को समझ लेते हैं वे रोग, शोक, सन्ताप में से किसी के भी चंगुल में नहीं फंसते। यदि फंस भी जाए तो भूल-सुधार की प्रायश्चित प्रक्रिया तथा परमात्मसत्ता से सन्मार्ग पर

चलने की साहसकता मांगनी चाहिए। यह है चिरस्थायी एवं समग्र आरोग्य की उपलब्धि का राजमार्ग छान्दोग्यकार ने इस तथ्य का वर्णन इस प्रकार किया है—मनुष्य का जीवन एक यज्ञ है, मनुष्य की आयु के प्रथम चौबीस वर्ष, जीवन यज्ञ का प्रातः सवन (प्रातः कालीन यज्ञ) है गायत्री छन्द चौबीस अक्षरों वाला है। प्रातः सवन में गायत्री छन्द का ही प्रयोग होता इस यज्ञ से वसु देवता का सम्बन्ध होता है प्राण ही (समस्त शक्तियों के निवास से) वसु देवता कहलाते हैं यदि कहीं इन चौबीस वर्षों में कोई रोग हो जाए तो उसे ऐसा कहना चाहिए, हे वसु गणों (प्राणो) यह मेरा प्रातः सवन, माध्यन्दिन सवन के साथ संयुक्त करो(अर्थात् जीवन के प्रथम चौबीस वर्ष की अवधि को जीवन के शेष आयु से सम्बद्ध कर दो), वसु गणों (प्राणों) का यह यज्ञ हमारा बीच में ही विलुप्त न हो जाए यह अनुरोध आरोग्य का पथ प्रशस्त करेगा।

जीवन के प्रथम चौबीस वर्ष तो इस प्रकार व्यतीत हुए उसके आगे के लिए पुनः कहा गया—(मनुष्य के जो यौवन वाले) अगले चौबीस वर्ष हैं वह माध्यन्दिन सवन का समय हैं। त्रिष्टुप छन्द चौवालीस अक्षरों का होता है इस माध्यन्दिन सवन में इसी त्रिष्टुप छन्द का प्रयोग होता है, इस यज्ञ के साथ रुद्र देवता का सम्बन्ध है। रूप ही प्राण हैं। ये ही सब शत्रुओं को रुलाते हैं यदि इस अवधि में मनुष्य को कोई रोग हो जाए तो उसे इसी प्रकार कहना चाहिए। हे रुद्र रूपी प्राणो ! मेरे इस माध्यन्दिन यज्ञ की अवधि. से तृतीय सवन के साथ जोड़ दो (अर्थात् चौवालीस वर्ष की अवधि को अगली आयु से सम्बद्ध कर दो) मेरे द्वारा सम्पन्न होने वाला, यह रूप देवता (प्राण) प्रधान माध्यन्दिन यज्ञ बीच में ही विलुप्त न हो जाए। ४८

वर्ष के बाद का शेष जीवन भी यज्ञ रूप है, इसका वर्णन इस प्रकार किया गया है। मनुष्य जीवन का शेष अगला ४८ वर्ष जीवन रूपी दिन का तृतीय सवन है—सायंकालीन यज्ञ है, जगती छन्द अड़तालीस अक्षरों का होता है और इस यज्ञ में इसी जगती छन्द का प्रयोग होता है। इस तृतीय सवन के साथ आदित्य नामक प्राण का सम्बन्ध है, आदित्य ही प्राण है क्योंकि यह ही सभी को ग्रहण करते हैं, इसी अवधि में रोग होने पर मनुष्य को कहना चाहिए कि—हे आदित्य नामधारी प्राणो! यह मेरी आयु का तीसरा खण्ड—तृतीय सवन है इसे पूर्ण आयु तक ले चलो! आदित्य (प्राण) प्रधान इस यज्ञ के बीच में ही मेरा यह जीवन यज्ञ विलुप्त न हो जाए ऐसी प्रार्थना करने से आरोग्य का पथ प्रशस्त होता है, उपयुक्त तथ्य का समापन और फलस्तुति बताते हुए उपनिषदकार ने अन्त में इस आधार का अवलम्बन करके रोग मुक्त हुए महर्षि ऐतेरय का प्रमाण उदाहरण प्रस्तुत करते हुए कहा है जीवन तथ्य (जीवन यज्ञ) को जानने वाले विद्वान महीदास ऐतरेय एक बार रोगी हुए और उस स्थिति में उन्होंने रोग से कहा हे रोग, तू मुझे क्यों कष्ट देता है, सन्ताप देता है, मैं इससे नहीं मरूंगा। ऐसा दृढ़ निश्चयात्मक प्रश्न करने से वे रोग मुक्त हो गए और पूर्ण आयु तक जीवित रहे जो भी व्यक्ति जीवन यज्ञ के इस तत्वज्ञान को जानता है वह पूर्णायु तक जीवित रहता है। पर यह सारे आदेश सुझाव केवल उनके लिए है जो जीवन को जिन्दगी, जिजीविषा, नियन्त्रित यज्ञशाला, सुव्यवस्थित प्रयोगशाला, सारगर्भित आगमन तथा निर्णयात्मक यातायात मानते हों, यह विचार, धारणा निष्ठा से लाभन्वित हो सकते हैं।

अलख निरंजन दुःख भंजन भिक्षामदेहि।

भेंट २५

करुणा निधान

एक प्रयास समाप्त करने चला हूं प्रयास अच्छा रहा या अधूरा भगवान के भरोसे पाठक वृन्द के समर्पण किया एक अन्तिम विचार छिपाए नहीं रह सकता। संसार भर की रचना में जहां, अनेकों तत्व अत्यन्त आवश्यक है वहां कृपा निधान की दया दृष्टि भी उतनी आवश्यक है जितने यह सारे तत्व इसलिए मैं उसे संबोधन ही अनन्त साधनों वाले देव अनन्त साधना वाले नाथ से करता हूं। सृष्टि भर में उसकी करुणा भी विचित्र लीला वरदान अनुदान दक्षिणा उपाधि सामर्थ्य इत्यादि के रूप में अवश्य प्रगट होती है, इसके रूपान्तर देखकर इस भेंट की पेट पूजा द्वारा कृत्कृत्य होने का सौभाग्य लेना चाहता हूँ। एक सूक्ति का छोटा सा भाग अपना भाव आप है।

कोई बरबाद होता है कोई आबाद होता है तेरी कुदरत का जलवा है कि बरबाद भी आबाद होता है।

सन्त महात्माओं को ईश्वरीय कृपा भवसागर से तार गई एक निश्चित सत्य है महर्षि दयानन्द की आत्मकथा में अनेक दृष्टान्त इस तथ्य की पुष्टि करते हैं उदाहरणार्थ एक

मध्यान्ह को वन में वृक्ष की साया में लेटे होना, आंख खुलना एक फनीधार सर्प का ऐन अपने सिर ऊपर खड़ा पाना असमजंस, न हिल पाए, न सोच पाए पर जिसके थे वह ही अचम्भा कर पाए, कि एक चील का ऐन ऊपर से आना फन फैलाए सर्प को उठा हवा में गायिब 'स्वामी जी महाराज' की दराज-ए-जिन्दगी में एक अजूबा था। एक लेख निकला था 'दो स्वामियों पर क्या बीति' वृतान्त में स्वः दयानन्द तथा स्वः विवेकानन्द दोनों एक-२ बार मौत के घाट उतार दिए जा रहे थे देवी कृपा ऐसी घटी दोनों की मृत्यु भाग गई तथा वह जीवित रहे। विस्तार कम करने के बहाने संकेत मात्र ही लिख डाला है। संत एर्मसन का कथन कि मनुष्य परमात्मा का प्रतीक प्रतिनिधि है एक परम सत्य है मानवीय पुरुषार्थ जब संकटों के निवारण में अक्षय सिद्ध होता है तो ईश्वरीय सत्ता का सहयोग मांगने पर अवश्य मिलता है स्वयं की सामर्थ्य कम पड़ने पर अच्छे कर्मों के लिए मांगने पर उसकी शक्ति अवश्य मिलती है यह सनातन नियम है तथा करुणानिधान की शोभा है 'जाके राखे साईयां मार सके न कोय'—पुरातन कहावत भी है साक्षी भी है पुट भी है सत्य भी है प्रमाण भी है दो चार दृष्टान्त पुष्टि में प्रस्तुत कर दूं। निराकार सत्ता साकार दर्शनीय होके दोनों गुणों को समावष्टी बनती है इंग्लैंड में १९वीं शताब्दी में एक जेल में जान ली नामक कैदी को फांसी की सजा हुई सारा विधान फांसी का पूरा-२ हो चुका था व्यवस्थानुसार फांसी पर लटकाए जाने वालों को अन्तिम इच्छा पूछी गई, जिसके उत्तर में ली ने कहा कि वह निरापराध है, पर सजा हो चुकी थी अब सजा का अन्तिम दृष्य पूरा होना था—पादरी की प्रार्थना भी हो हो गई, मजिस्ट्रेट ने जांच भी कर ली—ली

लटका दिया गया—जल्लाद ने नीचे का तख्ता खींचा परतख्ता हिला ही न तुरन्त जल्लाद ने पुनः प्रयास किया पर ताख्ता तख्त ही रहा सख्त ही रहा, दो बार प्रयास हो चुका तीसरी बार फिर पूरा जोर लगाया गया पूरे सात मिनिट ली की जान लेने का विधि विधान हुआ पर असफलता हाथ लगी—न्यायालय के अनुसार ली छूट गया जिसका कारण उसने अपना निर्दोषी होना, प्रार्थनामय होना तथा अदृश्य हाथों से बचाव का समर्थन किया। वात नवम्बर १९५० की है जब वांशिगटन में एक प्रसिद्ध लेखक हैराल्ड गल्क को यकायक बाहिर ठण्डी हवा बूंदा बांदी में समुद्र के किनारे जाने की प्रेरणा हुई। एक मित्र भी साथ हो लिया समुद्र किनारे पानी के मध्य दो व्यक्तियों को गोते खाते देखा गल्क तथा उसके साथी ने किनारे लगी एक नाव पकड़ी तथा सागर में डाल दी—दोनों डूबते व्यक्तियों को उस नाव में बचा लाया गया जो किसी अन्य नाव में डूब गए थे पर प्रभु प्रार्थना के वल बोते जीवन दान की भिक्षा में हिम्मत रख रहे थे, दोनों के बच जाने प्रभु प्रेरणा का उदाहृण प्रस्तुत करने हेतु मेरी भेंट का विषय वन पाए हैं। १८७४ की प्रख्यात घटना जव धर्म प्रचारार्थ एक जहाज २१४ यात्रियों सहित विस्को की खाड़ी पार कर रहा था, उसके पेंदे में छेद हो गया, पानी को भीतर घुसने न देने के सारे साधन असफल रहे, निराशा घनघोर घटा वन रही थी तैर सकने व तैर न सकने वालों की सूची भी वन गई थी उधर पदारियों का एक गुट ईश्वर प्रार्थना तथा रक्षा की मांग में रत था—तुरन्त छेद में एक पूरे माप की मच्छली जो छेद में पूरी फिट आकर छेद को बन्द कर पाई भीतर पानी का आना बन्द, जहाज की सुरक्षित यात्रा का

खेल बना तथा सत्प्रेरणा का एक साक्षात उदाहरण देने में साक्षी बन रहा। १९६५ के पाक भारत युद्ध का एक समीपवर्ती घटना ताजा अदभुत दृष्टान्त अपने आंचल में छिपाए है। एक छोटी सी टुकड़ी भारतीय सैनिकों की जम्मू कश्मीर की घाटियों में भटक गई, नक्शे देखे गए पर भ्रम के मारे ठीक राह दृष्टिगोचर न हो रहा था, वापिस मुड़ना भी खतरे से खाली न था, अगली भारतीय पोस्ट १५ मील दूर थी जहां सवेरा होने से पहले पहुँचना था बर्फ बढ़ रही थी, रास्ता और भी अदृश्य, असमजंस ही असमजंस इतने में टुकड़ी के नेता को सत्प्रेरणा हुई भोतरी आवाज दृष्टि के बल बोते वह नेता, अगुआ बने था सुरक्षित निर्दिष्ट पोस्टर पर जा लगे, निराशा के वामयुण्डल में, रात की तारीकी, सुनसान जंगल की शुभ कामनाएं भारतीय सैनिकों की रक्षा का जीता जागता उदाहरण बनी यह सत्य सत्प्रेरणा की पुट भरता है। यदि मानव शान्त हृदय से थमे तथा अपने जीवन बृतान्त उल्टे पल्टे तो स्वयं में एक सत्य की साक्षी ले सकता है कि अदृश्य सत्ता विलक्षण रूप लेती है तथा जिज्ञासु शरणार्थी तथा इच्छुक की नई जिन्दगी का पैगाम पेश करती है।

इसलिए करुणानिधान के वरदान एक अजूबा विलक्षण तथा कौतूहल पूर्ण दीख में आते हैं। पर इस प्रकार की सृष्टि का राज, दान, कुंजी तथा मूल्य एक ही एक कि विश्वास रखने वाले की भुगतान उसकी करुणा के दान से प्राप्त होती है। आंखे खोलने से, माल टटोलने से नित नए विवरण प्राप्त होते हैं।

इसी आधार तथा विश्वास पर मेरी प्रार्थना, कि दीन हीन को बचा के दिखा दिव्य मन्दिर के दिव्य पिता से हरी भरी रहती है।

एक पहलू और भी है, आज के युग में डम्प खारिज वस्तुओं का जखीरा टूटा फूटा सामान गन्दगी का ढेर कूड़ा फिरकट हर शहर, हर गांव हर आवादी की आवश्यक निशानी बन रही है, बड़े-२ शहरों में ढेरों के स्थान निश्चित करार किए जाते हैं, जहां में से उपयोगी वस्तुओं के पुनः प्रयोग का महकमा एक धन्धा बनाता है, उस नकारा माल में से कार आमाद माल निकाला जाता है गन्दगी के ऊपर भी आवादी की जाती है विदेशों में नकार ढेरों में से लाखों का सामान तिलाश होके एक कर्मशाला वस्तो हस्ती में आई एवं डम्प में से उपयोगी सामान काम में आने का सुअवसर ले पाया उसी आधार तथ्य प्रयोगशाला साहस सूझबूझ के वल बोते मैं यह भी कह पाता हूं है 'करुणानिधान तेरे कार्य महान तेरी शान मुझ नकारा को भी अपनी कृपा से कृतार्थ कर दे सुमति सत्प्रेणा द्वारा सौभाग्य दे दे, प्रगति का आशीर्वाद दे दे, राह दे दे, यह भी तेरा मान होगा कि एक पतित भी गया गुजरा भी बन निकले, बच निकले, सार्थक हो जाए, किसी शुभ आकांक्षा से कृत्कृत्य हो जाए, जहां यह तेरी लीला होगी, मेरे जीवन की क्रीड़ा होगी, मेरे दम घूटने, निराश, निस्सहाय की कहानी होगी, तेरे करूणा निधान होने की निशानी होगी, एक अजूबा होगा, एक उदाहरण होगा भटकों को राह दे देने की रीति

होगी, तेरी पुरानी प्रीति होगी, पतित पावनी की पुण्य स्मृति में नई कील होगी जो मेरे जीवन की झील में एक रील होगी तेरी मेरी याद की करामात होगी तेरा नाम बनेगा मेरा काम बनेगा, निरर्थक को सार्थक होने का एक नया आयाम होगा तेरी सृष्टि में एक मात्र वृष्टि होगी जो रीत की प्रीति बनेगी और करूणा निधान की साजो सामान होगी शान में शान होगी मेरे जीवन की जिन्दा जान होगी।

निराशा में से आशा का उभरना, मुश्कलात में से बच निकलना, गायत्री उपासना पर भी याद विफलता दीखती हो उसे शान्ति पूर्वक सहन करने की क्षमता भी एक मां का वर-दान बन जाता है सुन्दरता की बात यह है कि इस मन्त्र में शब्द तरंगें उठती हैं ध्वनि सम्पन्न वायु में विद्यमान ईथर सहायता देता है। वातावरण बनता है तथा अपने हां का एक नया निराला निशाना बनता है, उपज से उपज, प्रगति से प्रगति ही चली आती है यह एक सत्य तथ्य उन्नत व्यक्तियों की ताजमानी बनी जो उनकी जिन्दगानी की कहानी बनी इसलिए भी करूणा निधान पर विश्वास एक सिक्का है पहलू है जिसके एवज शुभ प्राप्ति हाथ लगती है इसलिए कहा था कि करूणानिधान की कृपा में विश्वास एक विभूति है, परमा-वश्यक है, दिलचस्प है, आश्चर्य पूर्ण है, श्रद्धा प्रार्थना पहाड़ हिला पाएं, इसलिए इस महामन्त्र के फलस्वरूप सम्मानित हो

जाना एक सौभाग्य है जो अपनी मिसाल आप है मन्त्र तेजस्विता का बोधक—हमारे पाप नाश का स्रोत बनता है यह यह कर्मशाला शुभ लक्षों से ओत प्रोत अपनी दिव्य माला पिरो डालती है। महामना लोगों की कहानियां इस उपलब्धि से भर रही है इस लिए करूणामय की दिव्य दृष्टि हमारी जिन्दगानी में एक विशेष स्थान लेती है।

बिन तुम्हारी दया के न रुकते सम्भल,
प्रभु किस किस को तुमने सम्भाला नहीं
पतित पावन प्रभु आश्रय दे मुझे दो
आश्रय और कोई हमारा नहीं।

उन्नत आत्माओं के लेखे जोखे क्या, गिनें, एक से एक बढ़कर निराले कहते हैं कि नागेश भट्ट की ख्याति सुनकर बाजीराव पेशवा दर्शनार्थ उनके हां चले आए, देखा कि एक जर्जर शरीर पुस्तकों के ढेर के बीच बैठा, युवावस्था से ही अध्ययन में रत—दर्शन साहित्य तथा संस्कृति को पतित अवस्था में देख उनकी समयानुकूल व्याख्या में लगा हुआ था न भोजन का ध्यान न आराम का मान तभी तो शरीर भी ग्लान लेता गया! यह देख बाजीराव पूछ बैठा 'आचार्य आज्ञा दें मैं आपकी कुछ सेवा कर सकूं, जो मेरा सौभाग्य होगा! आचार्य अपनी एकाग्रता से विचलित हुए और बोले महाराज आत्मा के अस्तित्व को प्रमाणित करने के लिए एक सूत्र

कठिनाई से हाथ लगा है उसकी व्याख्या में यदि कोई मेरी सहायता कर सकें तो कृपा होगी 'यह शब्द सुन्दर तथा तन्मयता की लगन में परोए साधक के लक्ष को सुशोभित करते हैं तथा अभिमान रहित होके सत्यार्थ का पथ प्रर्दन करते हैं। सदा युवा पिता हमारे क्षण-२ में ओत-प्रोह कल्याण वाणी में कृपा दृष्टि कर दें तो बड़ा उपकार होगा। संसार अनन्त, उसका रचयिता भी अनन्त, हम पतित भी अनन्ता, रंगसे विकृत उभर सकते हैं केवल अनन्त के उपकार से ताकि अनन्ता का शुभ सामगम अनन्त पथिक से हो जाए तो बड़े सत्कृत होने की शुभ वेला बनेगा। यही विचार गायत्रा मां के चरणों में एक मात्र बिन्दु है जो करुणा निधान को दया से लाभदायक होकर हमारे जीवन का सौभाग्य बना सकती है।

विनय : हम आजिज हैं बन्दे तेरे दर पे आए हमें दान भक्तिका दो
दया कृपा रक्षा करो हे सर्व शक्तिमान।

अलख निरंजन दुख भंजन भिक्षामदेहि ।

———

PREM KUMAR BEHAL

Raju Printers

Specialists in :
HIGH CLASS
JOB PRINTERS
STATIONERS & GENERAL ORDER
SUPPLIERS

X/585, Raghuber Pura No. 1,
Gali No. 5, Pakki Gali,
Gandhi Nagar, Delhi-110031